खण्ड II

प्रतिनिधित्व और राजनीतिक भागीदारी

प्रतिनिधित्व और राजनीतिक भागीदारी

राजनीति में व्यक्तिगत रूप से हम लोगों में कुछ का बहुत अधिक प्रभाव है। हम किसी नीतियों को प्रभावित करने के लिए हम लोग समान विचार धारा वाले समूह या कार्यक्रम से जुड़ते है। हम लोग अपने लोकतांत्रिक अधिकारों जैसे एक साथ स्वतंत्र रूप से इकट्ठा होने और अभिव्यक्ति की आजादी का उपयोग कर सार्वजनिक नीतियों को लागू कराने के लिए दबाव बना सकते है अथवा सत्ता को हासिल कर नीतिगत फैसले को एक नई दिशा दे सकते है। इस खंड में, हम लोग तुलनात्मक राजनीति में एक अन्य समान रूप से महत्वपूर्ण दृष्टिकोण संस्थागत और इस प्रक्रिया का अध्ययन करेंगे, जो समाज और सरकार को जोड़ता है। प्रथम तीन इकाइयों में लोकतंत्र के दो प्रमुख कारक राजनीतिक दल और दबाव समूह का अध्ययन करेंगे। इसके अंतिम इकाई में इस बात का अध्ययन करेंगे कि राजनीतिक प्रक्रिया में चुनाव प्रणाली लोकतंत्र के प्रमुख स्तम्भों या महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले संस्थानों पर किस प्रकार प्रभाव डालता है।

लोकतंत्र में दलीय व्यवस्था या राजनीतिक दल सबसे प्रभावशाली माध्यम या संस्था है। कई देशों के संविधानों में कोई विशेष उल्लेख नही है लेकिन लोकतंत्र में अहम भूमिका निभा रहे है। इस सवाल का जवाब ढूढ़ंगे कि किस प्रकार राजनीतिक दल आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान रखते है और ये किस प्रकार समाज में अन्य संगठनों से भिन्न है। लोकतंत्र में राजनीति दलीय व्यवस्था क्या है और इसमें दायित्व, प्रकृति पर प्रकाश डालेंगे। उपरोक्त सवालों का जवाब इकाई **चार और पाँच** में ढूढेंगे।

हम अन्य एक महत्वपूर्ण संस्था दबाव समूह या हित समूह की चर्चा करेंगे जो समाज और सरकार के बीच महत्वपूर्ण कड़ी है। राजनीतिक दलों की तरह हित समूह/दबाव समूह समय विशेष पर सक्रिय होते है जो किसी विशेष हित व भावना को पूर्णता से पूर्ति करने के लिए कार्य करते है। ये राजनीतिक सत्ता प्राप्त करना नही चाहते। हम उस बात का अध्ययन करेंगे कि दबाव समूह कौन सी कार्य प्रणाली का उपयोग करते है जिसके जरिए समाज में विभिन्न वर्गों के हितों को साधा जा सके। लोकतंत्र में इनकी क्या भूमिका है अथवा और लोकतांत्रिक व्यवस्था में दबाव समूह की कोई भूमिका है या होती है, इस पर भी ध्यान केंन्द्रित करेंगे। इन सारे सवालों का जवाब इकाई **छह में** प्राप्त करेंगे। स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव ही लोकतंत्र की पहचान है। इसके बगैर लोकतंत्र कायम नही रह सकता। सभी नागरिक, जो मत देने के योग्य है, जन प्रतिनिधियों का चुनाव करते है। लोकतंत्र में चुनाव एक महोत्सव की तरह होता है जहाँ से सरकार में जन भागीदारी सुनिश्चित होती है। इकाई सात में लोकतंत्र में चुनाव प्रणाली और इससे संबंधित चुनौतियों से जुड़े प्रश्नों का सामाधान ढूढ़ेंगे। यह किस प्रकार सत्ता में हिस्सेदारी या परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इकाई–4 राजनीतिक दलों की कार्य पद्धति*

संरचना

4.0 उद्देश्य

4.1 परिचय

4.2 राजनीतिक दल : अर्थ और उत्पत्ति

4.3 राजनीतिक दलों के कार्य

4.3.1 पारंपरिक समाजों का संगठन और आधुनिकीकरण

4.3.2 राजनीतिक समाजीकरण

4.3.3 राजनीतिक भर्ती

4.3.4 सरकार का गठन और संचालन

4.3.5 सरकारी नीतियां बनाना और उनको आकार देना

4.3.6 समन्वय

4.3.7 प्रतिनिधित्व

4.3.8 सरकार पर नियंत्रण

4.3.9 जनमत बनाना

4.4 विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं के अन्तर्गत राजनीतिक दल

4.5 राजनीतिक दलों के लिए चुनौतियां

4.6 सारांश

4.7 संदर्भ

4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.0 उद्देश्य

आधुनिक राजनीतिक समाज के अस्तित्व एवं कामकाज के लिए राजनीतिक दल अपरिहार्य हो गए हैं। इस इकाई में, हम दुनिया की विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं में राजनीतिक

* डॉ. विकास चन्द्रा, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,ज्ञानपुर, यू. पी.

दलों के अर्थ, उत्पत्ति, विशेषताओं, भूमिकाओं और कार्यो का परीक्षण करेंगे। इस इकाई का अध्ययन करने के बाद, आपको निम्न में योग्य होना चाहिए :–

- राजनीतिक दल की विशेषताओं का वर्णन करने में
- राजनीतिक दलों के उद्‌गम की व्याख्या करने में
- राजनीतिक दल द्वारा किए जाने वाले कार्यो का वर्णन करने में
- विभिन्न प्रकार की राजनीतिक व्यवस्थाओं के तहत राजनीतिक दलों के कामकाज की व्याख्या करने में
- समकालीन समय में राजनीतिक दलों के समक्ष आने वाली चुनौतियों की पहचान करने में।

4.1 परिचय

आधुनिक लोकतंत्रों में प्रतिनिधि सरकारें होती हैं, अर्थात एक ऐसी सरकार जहां नागरिक उनका प्रतिनिधित्व करने और उनकी तरफ से कानून बनाने हेतु प्रतिनिधियों को चुनते हैं। निर्वाचित प्रतिनिधियों को सरकार के भीतर उनकी गतिविधियों के लिए जनता द्वारा जवाबदेह ठहराया जाता हैं। नागरिकों की राय का प्रतिनिधित्व करने और लोगों की राजनीतिक भागीदारी हेतु एंजेसी के रूप में कार्य करने की इस प्रक्रिया में राजनीतिक दल मध्यस्थ की भूमिका का निर्वहन करते हैं और नागरिकों एवं राज्यों के संस्थानों के मध्य संबंधों को सुविधाजनक बनाते हैं।

राजनीतिक दलों के महत्व को रेखांकित करते हुए, जॉन स्टुअर्ट मिल (1806–1873) ने कहा कि ''व्यवस्था या स्थिरता की पार्टी, एवं प्रगति या सुधार की पार्टी, दोनों राजनीतिक जीवन की स्वस्थ स्थिति के आवश्यक तत्व हैं।'' संयुक्त राज्य अमेरिका के संस्थापक थॉमस जेफरसन (1743–1826) ने इसी तरह राजनीतिक दलों के महत्व को स्वीकार किया, जब उन्होंने लिखा : ''अगर मै स्वर्ग नहीं जा सकता लेकिन एक पार्टी के साथ, मैं वहां बिल्कुल नहीं जा पाऊंगा।''

राज्य के नागरिकों और संस्थाओं के बीच मध्यस्थता का कार्य करने में राजनीतिक दल गैर–लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में भी स्थान पाते हैं। सत्तावादी और अधिनायकवादी सरकारे जैसे नाजी जर्मनी, फासीवादी इटली और कम्युनिस्ट सोवियत संघ एवं एकल राजनीतिक दल के साथ चीन की पहचान की जाती हैं। कुल मिलाकर किसी भी आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था में राजनीतिक दल एक अपरिहार्य शर्त बन गए हैं।

4.2 राजनीतिक दल : अर्थ और उत्पत्ति

राजनीतिक दलों को अलग तरह से समझा एवं परिभाषित किया गया है। एक आयरिश राजनीतिज्ञ एडमंड बर्क (1729–1797) ने राजनीतिक दल को ''पुरूषों के एक समूह के रूप में परिभाषित किया, जो अपने संयुक्त प्रयासों से राष्ट्रीय हित को बढ़ावा देने के लिए, किसी विशेष सिद्धांत पर आधारित है जिसमें वे सभी सहमत है।'' 20वीं शताब्दी में, विद्वानों ने राजनीतिक दल की विभिन्न परिभाषाओं को बढ़ाया हैं। जर्मन राजनीतिक वैज्ञानिक

सिगंड न्यूमैन (1904–1962) ने राजनीतिक दलों को ''समाज के सक्रिय राजनीतिक एजेंटों के मुखर संगठन के रूप में संदर्भित किया, जो सरकारी सत्ता के नियंत्रण से संबंधित है और जो अलग–अलग विचार रखने वाले किसी अन्य समूह या समूहों के साथ लोकप्रिय समर्थन के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। यह वृहत मध्यस्थता है जो सामाजिक ताकतों और विचारधाराओं को आधिकारिक सरकारी संस्थानों से जोड़ता हैं और उन्हें बड़े राजनीतिक समुदाय के भीतर राजनीतिक कार्यवाई से जोड़ता हैं'' (न्यूमैन 1969 : 71)। इतावली विद्वान और राजनीतिक दलों के कट्टर अधिवक्ता, जियोवानी सरतोरी (1924–2017) ने एक राजनीतिक दल को ''किसी भी राजनीतिक समूह के रूप में परिभाषित किया है जो एक आधिकारिक लेबल द्वारा पहचाना जाता है जो चुनावों में प्रस्तुत होता है और चुनावों के माध्यम से सार्वजनिक पद के लिए उम्मीदवारों को प्रस्तुत करने में सक्षम होता है।'' (सरतोरी 1976 : 62)। इसी तरह राजनीतिक वैज्ञानिक रॉबर्ट जे. हक्सहोर्न (1928) ने एक राजनीतिक दल को ''नागरिकों के एक स्वायत्त समूह के रूप में माना, जिसका उद्देश्य सरकारी सत्ता पर सार्वजनिक कार्यालयों एवं सरकार के संगठन पर कब्जे के माध्यम से नियंत्रण पाने की उम्मीद में नामांकन करना और चुनाव लड़ना था'' (काट्ज 2020 : 2021)।

जबकि ये परिभाषाएं व्याख्याओं में अंतर प्रदर्शित करती हैं, हम उनमें से एक राजनीतिक दल के पांच अलग–अलग तत्वो की पहचान कर सकते हैं। सर्वप्रथम, एक राजनीतिक दल के लिए लोगों के एक समूह की उपस्थिति एक आवश्यक शर्त है। पार्टी की अपील और देश के आकार के अनुसार एक पार्टी के सदस्यों की संख्या कुछ सौ से लाखों करोड़ों के मध्य कुछ भी हो सकती है। दूसरे, सिद्धांत, मानदंड और विचार एक राजनीतिक दल के मूल तत्व हैं। राजनीतिक दल एक विशेष विचारधारा, पहचान, क्षेत्र और मुद्दे पर प्रतिपादित होते हैं और उनका प्रतिनिधित्व करते हैं, जो राजनीतिक दलों को एक मानकीय और विचारात्मक आधार प्रदान करते हैं। यह सिद्धांतो का पालन है जो एक पार्टी को दूसरे से अलग करता है। जबकि लिबरल पार्टी, लेबर पार्टी, कंजरवेटिव पार्टी, समाजवादी पार्टी और कम्युनिस्ट पार्टी जैसे प्रारंभिक राजनीतिक दल विचाराधारा पर आधारित थे, विकासशील देशों में राजनीतिक दल और यूरोप एवं अमेरिका के नए दल नृजातीयता, नस्ल एवं क्षेत्र तथा पर्यावरण जैसे विशिष्ट पहचान और मुद्दों पर आधारित हैं। तीसरा, राजनीतिक दलों का आमतौर पर एक स्थायी संगठन होता हैं, जिसमें अधिकृत सदस्य संगठन में आधिकारिक पदों पर स्थापित होते हैं। इन पदाधिकारीयों का चयन शीर्ष नेतृत्व द्वारा किया जा सकता हैं या पार्टी के सदस्यों द्वारा चुना जा सकता हैं। लेकिन संगठन में निरंतरता होती हैं, यानी कि किसी संगठन का जीवनकाल वर्तमान या नेतृत्व की एक पीढ़ी के जीवन से परे होता हैं। चौथा, राजनीतिक दल विशिष्ट लक्ष्यों के सहित अस्तित्व में आते हैं। एक राजनीतिक दल का मुख्य लक्ष्य चुनावी प्रक्रिया के माध्यम् से राजनीतिक सत्ता पर कब्जा करना होता हैं। अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, वे कुछ हद तक लोगों का लोकप्रिय समर्थन हासिल करने और बनाए रखने का प्रयास करते हैं। अंत में, राजनीतिक दल सरकार बनाने और संवैधानिक एवं वैध तरीकों से राजनीतिक सत्ता को नियंत्रित करने की कोशिश करते हैं, यानी कि चुनाव लड़कर, न कि तख्तापलट जैसे गैर–संवैधानिक साधनों के माध्यम् से। उदारवादी दृष्टिकोण के विपरीत, जो पार्टी को सत्ता के लिए चुनावी संघर्ष में भाग लेने वाली तथा जनमत को संगठित करने वाली एंजेसी के रूप में देखते हैं, मार्क्सवादी इसे 'वर्ग' विरोध के संदर्भ में देखते है। उदाहरणार्थ कम्युनिष्ट पार्टी का हवाला देते हुए, रूसी क्रांति के नेता व्लादिमीर लेनिन (1870–1924) ने पार्टी को

''विश्वसनीय, अनुभवी और कठोर कार्यकर्ताओं से मिलकर निर्मित एक संगठित मूल समूह'' के रूप में चित्रित किया, जिसका मूल उद्देश्य पूंजीपति बुर्जआ वर्ग का क्रांतिकारी तख्तापलट और सर्वहारा वर्ग की तानाशाही की स्थापना हैं। लेनिन ने कम्युनिष्ट पार्टी को ''एक वर्ग का अगुवाकार माना और उसका कर्तव्य जनता का नेतृत्व करना हैं, न कि केवल जनता के औसत राजनीतिक स्तर को प्रतिबिंबित करना।''

राजनीतिक दल राज्य के विकास के दौरान एक विशेष ऐतिहासिक मोड़ पर अस्तित्व में आते हैं। अमेरिकी राजनीतिक वैज्ञानिक जोसेफ लापालोम्बारा एवं मायरोन वेनर का तर्क है कि एक राजनीतिक दल तब उभरता है जब राजनीतिक व्यवस्था जटिलता के स्तर तक पहुंच जाती हैं। उनका तर्क है कि '' राजनीतिक दल तब मूर्त रूप लेता है जब राजनीतिक नेतृत्व की भर्ती और सार्वजनिक नीति बनाने के कार्यो को जनता की भावनाओं से असंबद्ध पुरूषों की एक छोटी सी मंडली द्वारा नियंत्रित नहीं किया जा सकता हैं।'' (1969 : 04)। राजनीतिक दल भी तब अस्तित्व में आते है, जब शासक वर्ग यह सोचने लगता है कि लोगों को व्यवस्था में सहभागिता करनी चाहिए। सत्तारूढ़ अभिजात वर्ग की सोच में परिवर्तन बढ़ती इच्छा या उनके खिलाफ लोगों के विद्रोह को नियंत्रित करने के परिणामस्वरूप हो सकता हैं।

'कब' प्रश्न के साथ–साथ यह समझना भी महत्वपूर्ण है कि 'कैसे' दल स्थापित होते हैं। फ्रांससीसी राजनीतिक वैज्ञानिक एवं राजनीतिज्ञ मौरिस डुवर्गर (1917–2014) ने अपनी पुस्तक *पॉलिटिकल पार्टीज़ : देयर ऑर्गनाइजेशन एंड एक्टिविटीज इन मॉडर्न स्टेट* (1954) में राजनीतिक दलों की ऐतिहासिक उत्पत्ति का एक आधिकारिक विवरण दिया हैं। वह राजनीतिक दलों की उत्पत्ति के बारे में दो तरह से व्याख्या करते हैं :– अंतर–संसदीय मूल या जिसे वह ''पार्टियों का चुनावी एवं संसदीय मूल'' कहते है, उन पार्टियों को संदर्भित करता हैं जिनकी उत्पत्ति संसद और विधानसभा के भीतर होती हैं। यहां सांसदों का एक समूह चुनाव जीतने की संभावना को अधिकतम करने के लिए एक साथ आता है, और चुनाव के समय एक चुनावी समिति बनाता हैं। ये प्रथाएं संस्थागत हो जाती हैं, जो अंततः एक राजनीतिक दल की नींव रखती हैं। अतिरिक्त–संसदीय मूल उन दलों को संदर्भित करता है जिनकी उत्पत्ति संसदों और विधानसभाओं के बाहर होती हैं। वे तब अस्तित्व में आते हैं जब मतदान के अधिकारों से आर्थिक, धार्मिक और लैंगिक प्रतिबंध हटा दिए जाते हैं। सामाजिक समूहों जैसे दार्शनिक समाज, श्रमिक संघ और समाचार पत्र संघों ने ऐसे राजनीतिक दलों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उदाहरणार्थ ब्रिटीश लेबर पार्टी, 1899 में ट्रेड यूनियन कांग्रेस द्वारा अपने चुनावी और संसदीय संगठन के रूप में बनाई गई थी। इसी तरह, कृषि एवं किसान संगठनों ने ऑस्ट्रिया, कनाडा, स्विटजरलैंड, मध्य यूरोपीय और स्कैंडिनेवियाई राज्यों में पार्टियों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यूरोपीय समाजवादी दल तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जैसे राष्ट्रवादी दल भी सामाजिक आंदोलनों एवं संघर्षो से पैदा हुए थे।

बोध प्रश्न 1

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर की युक्तियों के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) राजनीतिक दल क्या है ?

.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....

2) अंतर–संसदीय और अतिरिक्त–संसदीय दल के उद्‌गम कैसे भिन्न हैं ?

.....
.....
.....
.....
.....
.....

4.3 राजनीतिक दलों के कार्य

राजनीतिक दल विभिन्न प्रकार के कार्य करते हैं जिसकी चर्चा विभिन्न विद्वानों द्वारा की गई। अमेरिकी राजनीतिक वैज्ञानिक चार्ल्स ई मरियम (1894–1953) ने पार्टी के पांच अलग–अलग कार्यो की पहचान इस प्रकार की है :– आधिकारिक कर्मियों का चयन, सार्वजनिक नीतियों का निर्माण, सरकार के संवाहक या आलोचक, राय के राष्ट्रीयकरण सहित राजनीतिक शिक्षा और व्यक्ति एवं सरकार के बीच मध्यस्थता (स्केरो 1967: 770)। इसी तरह, ब्रिटिश विद्वान एलन आर. बॉल ने राजनीतिक दलों के कार्यो को चार समूहों में विभाजित किया हैं:–प्रतिनिधि कार्य, चुनावी कार्य, शासकीय कार्य एवं नीति निर्माण, (1987 : 3–5) जबकि इतालवी राजनीतिक वैज्ञानिक स्टेफानो बार्टोलिनी एवं पीटर मायर ने दलों के कार्यो को दो व्यापक श्रेणियों में विभक्त किया है :– प्रतिनिधि और संस्थागत कार्य।

4.3.1 पारंपरिक समाजों का संगठन और आधुनिकीकरण

विविध और खंडित समाजों को संगठित करना एवं उनका आधुनिकीकरण करना राजनीतिक दलों का एक महत्वपूर्ण कार्य हैं। आधुनिकीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें एक समाज पारंपरिक से विकास के आधुनिक चरण की ओर अग्रसर होता हैं। इस प्रक्रिया में, एक पारंपरिक समाज आधुनिक समाज की परिभाषित आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक विशेषताओं को विकसित करने का प्रयास करता हैं। राजनीतिक दलों का आधुनिकीकरण का कार्य एक खंडित समाज को एक संगठित राज्य व्यवस्था में संयोजित करने के साथ शुरू होता हैं। अंत्तोगत्वा, वे लोगों और सामाजिक समूहों के मध्य मतभेदों को पाटते हैं। दूसरे शब्दों में, यह कार्य तब आरम्भ होता है जब कोई पार्टी खंडित या

शिथिल संगठित समाज में राष्ट्र–निर्माण शुरू करती हैं। एक बार राजनीति के संगठित हो जाने के बाद, राजनीतिक दल आधुनिकीकरण एवं राजनीतिक विकास के मॉडल के चयन में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। एक नवस्थापित राज्य उस आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक विकास का मार्ग या मॉडल अपनाएगा जो राजनीतिक दलों द्वारा तय किया जाता हैं। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आईएनसी) इसका एक जाना–पहचाना उदाहरण हैं। 1885 में अपनी स्थापना के बाद से, कांग्रेस ने ब्रिटिश उपनिवेशवादियों के खिलाफ लड़ने के लिए गहन रूप से विभाजित भारतीय समाज को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता के बाद की अवधि में, कांग्रेस ने भारत के आधुनिकीकरण के मार्ग को निर्धारित किया। हांलाकि, यह केवल उत्तर–औपनिवेशिक राज्यों के मामलों में नहीं हैं। यूरोप और अमेरिका में, दलों ने सत्रहवीं एवं अठारहवीं शताब्दी में अपने आधुनिकीकरण को आकार दिया तथा निर्धारित किया। खंडित राजनीति, राष्ट्र–निर्माण और उसके आधुनिकीकरण को सुव्यवस्थित करने में राजनीतिक दल की भूमिका पर विस्तार करते हुए, अमेरिकी विद्वान रॉबर्ट डिक्स की राय है कि '' नूतन लोकतंत्रो के रखरखाव में दलों और दलों की प्रणालियों का संस्थाकरण महत्वपूर्ण हैं'' सच प्रतीत होता है (डिक्स 1992: 490)।

4.3.2 राजनीतिक समाजीकरण

राजनीतिक दलों को राजनीतिक समाजीकरण के एजेंट के रूप में माना जाता हैं। राजनीतिक समाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें लोग अपने देश की राजनीतिक संस्कृति, मानदंडों और मूल्यों से परिचित होते हैं तथा इन गुणों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरित किया जाता हैं। राजनीतिक दल एक चैनल के रूप में कार्य करते हैं जो राजनीतिक संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाते हैं। वे लोगों को विभिन्न तरीकों से शिक्षित करते हैं। सर्वप्रथम, चुनाव के समय, राजनीतिक दल एवं उनके प्रतिनिधि मतदाताओं से मिलते है और उन्हें उनके कार्यक्रमों तथा नीतियों के बारे में सूचित करते हैं ताकि उन्हें अपने पक्ष में मतदान करने के लिए सहमत किया जा सके। दूसरे, सत्ताधारी दल किसी भी मुद्दे पर लोगों को सरकार के कार्यक्रमों और नीतियों से अवगत कराते हैं। हाल के वर्षो में, सोशल मीडिया राजनीतिक समाजीकरण के एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में उभरा हैं। तीसरा, आंदोलन, धरने या विरोध के माध्यम से विपक्षी दल सरकार के कार्यक्रमों और नीतियों की कमियों को बताते है तथा सरकार की नीतियों के विकल्प प्रस्तुत करते हैं। इससे आम लोगों को सरकार और उसकी नीतियों के बारे में पता चलता हैं। चौथा, राजनीतिक समाजीकरण का कार्य टेलीविज़न एवं रेडियो पर बहस में भाग लेने तथा इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया में विज्ञापनों के द्वारा भी किया जाता हैं। पांचवां, चुनाव से पहले चुनावी घोषणापत्र जारी करके, राजनीतिक दल लोगों को यह बताते है कि चुनाव जीतने पर उनका क्या इरादा हैं। इन प्रथाओं के माध्यम् से लोग अपनी राजनीतिक व्यवस्था, इसकी संस्थाओं एवं प्रक्रियाओं के बारे में जागरूक हो जाते हैं।

4.3.3 राजनीतिक भर्ती

राजनीतिक भर्ती राजनीतिक दलों का वह कार्य है जिसमें वे दल और सरकार में राजनीतिक भूमिका के लिए समाज में से लोगों का चयन करते हैं। राजनीतिक भर्ती की प्रक्रिया राजनीतिक समाजीकरण एवं दल की औपचारिक सदस्यता प्रदान करने के साथ

शुरू होती हैं। भर्ती किए गए सदस्यो को दल की विचारधारा में प्रशिक्षित किया जाता हैं तथा बाद में चुनाव लड़ने के लिए चयनित किया जाता हैं। जब दल आम चुनाव में विजयी होती है तो ये सदस्य सरकार में आधिकारिक पदों पर रहते हैं। औपचारिक भर्ती दल के सदस्य द्वारा चुनाव लड़ने के लिए नामांकन दाखिल करने के साथ शुरू होती हैं। ''नेताओं के चयन'' का यह कार्य लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था तक सीमित नहीं हैं। राजनीतिक दलों के राजनीतिक भर्ती के कार्य की व्यापकता को रेखांकित करते हुए, जोसेफ लापालोम्बारा एवं मायरोन वेनर ने ध्यान दिया कि ''चाहे देश अपेक्षाकृत लोकतांत्रिक भारत हो या अपेक्षाकृत गैर–लोकतांत्रिक घाना, ब्रिटेन जैसा एक लंबे समय से स्थापित लोकतंत्र या सोवियत संघ जैसा एक संपन्न अधिनायकवादी राज्य, दल के राजनीतिक भर्ती और राजनीतिक नेतृत्व के चयन में पूर्णतः शामिल होने ही संभावना हैं'' (1969: 03)। राजनीतिक समाजीकरण एवं भर्ती कार्यो के द्वारा राजनीतिक दल राजनीति को अधिक समावेशी और प्रतिनिधिक बनाते है।

4.3.4 सरकार का गठन एवं संचालन

सरकार का गठन एक राजनीतिक दल का अंतिम लक्ष्य होता हैं। यह कार्य राजनीतिक दलों को अन्य सामाजिक समूहों जैसे हित समूहों या नागरिक समाजिक संगठनों से अलग करता हैं। राजनीतिक सत्ता पर कब्जा करने के लिए, राजनीतिक दल चुनावी प्रक्रिया मे प्रवेश करते है एवं चुनाव लड़ते हैं। इस प्रक्रिया में, वे उम्मीदवार खड़े करते हैं और अपने पक्ष में प्रचार करते हैं। वे व्यापक जनसमर्थन प्राप्त करके सरकार बनाने का प्रयास करते हैं। यदि वे अपने दम पर बहुमत हासिल करने में विफल रहते हैं, तो वे मिलती–जुलती विचारधारा वाले दलों के साथ गठबंधन करके सरकार बनाने का प्रयास करते हैं। इस तरह के गठबंधन निर्मित होने को भारत, आस्ट्रेलिया और ब्राजील में व्यापक रूप से देखा जा सकता हैं। उनकी सामाजिक विविधता, चुनावी व्यवस्था और बहुदलीय व्यवस्था को देखते हुए किसी भी दल द्वारा वांछित बहुमत हासिल करना मुश्किल हो गया हैं। एक बार जब राजनीतिक दल चुनावों में आवश्यक बहुमत हासिल कर लेते हैं, तो वे सरकार बनाने का प्रयास करते हैं। वे मंत्रालयों और विभागों में निर्वाचित सदस्यों की नियुक्ति करते हैं। इस प्रकार, राजनीतिक दलों के निर्वाचित सदस्य सरकार चलाते हैं एवं सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों को निर्मित करने की प्रक्रिया में प्रत्यक्ष रूप से सीधे भाग लेते हैं।

4.3.5 सरकारी नीतियाँ बनाना और उनको आकार देना

पहली नज़र में लगता है कि नीति बनाना सरकार का कार्य हैं। हालांकि, नजदीक से ध्यान से देखने पर पता चलता है कि सरकारी राजनीतिक पदों पर आसीन लोग सत्ताधारी दल से आते हैं। इस अर्थ में, सरकार को 'पार्टी–सरकार' कहा जा सकता हैं। व्यापक स्तर पर, महत्वपूर्ण मुद्दों पर सरकार के कार्यक्रम और नीतियां पार्टी में व्यापक सहमति के अनुसार निर्मित की जाती हैं, जो विचारधारा एवं नीतिगत आम सहमति को प्रदर्शित करती हैं। एलन आर. बॉल ने ''नीति के निर्माण को राजनीतिक दलों के एक आवश्यक कार्य के रूप में उचित तरीके से वर्णित किया हैं।

नीति निर्माण और नीति निर्धारण दो अलग–अलग कार्य हैं। नीति निर्माण में राजनीतिक दल सीधे तौर पर इस प्रक्रिया में शामिल होते हैं, हालांकि वे इस कार्य को पर्दे के पीछे से करते हैं। नीति–निर्धारण में पार्टियां नीति–निर्माण प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं। सत्तारूढ़

दल विशेष रूप से नीति– निर्धारण का कार्य करता हैं, जबकि सत्ताधारी एवं विपक्षी दल दोनों नीति–निर्माण का कार्य करते हैं। सामान्यतौर पर, सत्ताधारी दल की विचारधारा नीति निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती हैं, जिसमें अधिकांश वामपंथी और मध्यममार्गी दल अर्थव्यवस्था एवं सामाजिक कल्याण में सक्रिय हस्तक्षेप को प्राथमिकता देते हैं तथा दक्षिणपंथी एवं सुदूर–दक्षिणपंथी दल उदारीकरण और निजीकरण को प्राथमिकता देते हैं।

4.3.6 समन्वय

सरकार और समाज के बीच राजनीतिक दल समन्वय या मध्यस्थता का कार्य करते हैं। समन्वय के कार्य के माध्यम से, राजनीतिक दल राजनीतिक व्यवस्था को स्थिरता प्रदान करते हैं तथा समाज और सरकार में सामंजस्य स्थापित करते हैं और उसे बनाए रखते हैं। समन्वय का कार्य कम से कम तीन स्तरों पर होता हैः– सरकार और समाज के बीच समन्वय, सरकार के भीतर समन्वय और समाज के भीतर समन्वय। अमेरिकी विद्वान के लॉसन (1933–) के अनुसार, समाज और सरकार के बीच समन्वय के चार रूप होते हैंः चुनावी जुड़ाव, सहभागी जुड़ाव, ग्राहक सूची जुड़ाव और निर्देशक जुड़ाव। (पेटिट 2014: 14) इन चार संबंधों का विवरण लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था में राजनीतिक दलों के कार्यों के खण्ड 4.5 में देखा जा सकता है। सरकार के भीतर समन्वय दो स्तरों पर होता हैः– विधानसभा, कार्यकारी और न्यायपालिका के तीन अंगों के बीच और सरकार के राष्ट्रीय, क्षेत्रीय एवं स्थानीय स्तरों के बीच। मंत्रालयों और सरकार के अंगो के बीच समन्वय को पार्टी की बैठकों, संसद तथा उसकी समितियों एवं नीतिगत समितियों जैसे निकायों के माध्यम से किया जाता है, जबकि सरकार के विभिन्न स्तरों के मध्य समन्वय भारत की राष्ट्रीय विकास परिषद और ऑस्ट्रेलिया के प्रीमियर सम्मेलन जैसे अंतर–सरकारी निकायों तथा पार्टी में विभिन्न स्तरों पर आयोजित पार्टी की बैठकों के माध्यम् से होता हैं। कई नागरिक समाजिक संगठन जैसे हित समूह और गैर–सरकारी संगठन समाज में समन्वय करते हैं। अन्य नागरिक सामाजिक संगठनों के साथ, पार्टीयां समाज के अन्तर्गत समन्वय के एक तंत्र के रूप में कार्य करती हैं। आधुनिक राजनीतिक दलों के विभिन्न व्यावसायिक विंग (पक्ष) होते है जैसे ट्रेड यूनियन, किसान, महिला और युवा विंग जो इस प्रक्रिया में शामिल होते हैं। ये विशिष्ट व्यावसायिक विंग पार्टी के साथ उस विशेष व्यवसाय के मतदाताओं के बीच समन्वय स्थापित करते हैं।

4.3.7 प्रतिनिधित्व

आधुनिक राज्यों मे लोगों के पास राजनीतिक और सामाजिक जीवन के विविध पहलुओं में अपना प्रतिनिधित्व दर्ज करने का समय, प्रशिक्षण तथा क्षमता नहीं हैं। अतः, राजनीतिक दल जनता के एजेंट के रूप में कार्य करते हैं और उनका प्रतिनिधित्व करते हैं। वे अपने समर्थकों और पार्टी के सदस्यों की ओर से विभिन्न स्थानों एवं मंचों जैसे मीडिया, संसदों, विधानसभाओं और चुनावी अभियानों में बोलते हैं। राजनीतिक दलों का प्रतिनिधित्व का कार्य अमेरिकी राजनीतिक वैज्ञानिक अलमांड और पॉवेल द्वारा वर्णित ''रूचि एकीकरण के कार्य'' के समीप हैं, उन्होंने समाज के विकास को मापने के लिए विभिन्न सांस्कृतिक और कार्यात्मक तरीकों को प्रस्तुत किया। सामान्य कार्यक्रमों के माध्यम् से राजनीतिक दल अनेक हित समूहों को एकजुट करते हैं। सरकार गठन के कार्य की सफलता काफी हद

तक राजनीतिक दलों के हित एकीकरण के कार्य पर निर्भर करती हैं क्योंकि यदि वे मतों को अलग–अलग हितों के समूहों में विभाजित करने में विफल रहते हैं, तो वे आवश्यक बहुमत से पीछे रह जाएंगे। राजनीतिक दलों का प्रतिनिधित्व का कार्य व्यापक और विविध हैं क्योंकि प्रतिनिधित्व के कई रूप होते है :– वैचारिक प्रतिनिधित्व, क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व, पहचान का प्रतिनिधित्व और हितों का प्रतिनिधित्व। बड़ी संख्या में राजनीतिक दल अपने मूल मतदाताओं और समर्थकों की समान विचारधारा का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस तरह की पार्टियों में यूनाइटेठ किंगडम की लिबरल और कंजरर्वेटिव पार्टी, चीन की कम्युनिस्ट पार्टी, संयुक्त राज्य अमेरिका में डेमोक्रेटिक पार्टी तथा इटली एवं जर्मनी की फासीवादी पार्टियां शामिल हैं। कुछ दल क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व पर ध्यान केंद्रित करते हैं। ऐसी पार्टियों का मूल वोट एक विशेष क्षेत्र में आधारित होता हैं, वे क्षेत्र की संस्कृति, भाषा और धर्म के साथ अपनी पहचान बनाना पसंद करते है तथा उस क्षेत्र के लिए आवाज उठाते हैं। भारत की तेलंगाना राष्ट्र समिति, जिसने तेलंगाना का अलग राज्य का दर्जा दिलाने के लिए अभियान चलाया, या जम्मू एवं कश्मीर राज्य के लिए स्वायत्तता हेतु प्रयास कर रही नेशनल कॉन्फ्रेंस उन पार्टियों के उदाहरण हैं जो अपने क्षेत्र की मांगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। कुछ दल विशेष पहचान का प्रतिनिधित्व करते हैं। उत्तर–प्रदेश में बहुजन समाज पार्टी और महाराष्ट्र में शिवसेना उन पार्टियों के उदाहरण हैं जो क्रमशः दलितों और मराठियों के हितों का प्रतिनिधित्व करती हैं। हालांकि ये पार्टियाँ अन्य पहचान के मतदाताओं से समर्थन हासिल करने में भी सफल होती हैं, परन्तु मतों का एक बड़ा हिस्सा उनके मूल पहचान आधारित मतदाताओं से आता हैं। कुछ राजनीतिक दल भी विशेष रूचि का प्रतिनिधित्व करते हैं। रूचि मुद्दों के रूप में हो सकती हैं, जैसे कि जलवायु परिवर्तन, परमाणु निरस्त्रीकरण इत्यादि। इस श्रेणी में यूरोप की ग्रीन पार्टी और आस्ट्रेलिया में परमाणु निरस्त्रीकरण पार्टी (1984–2009) आती हैं।

4.3.8 सरकार पर नियंत्रण

राजनीतिक दलों की भूमिका सत्ताधारी दल से परे होती है। वे भी विपक्ष की तरह से कार्य करते हैं। दलों क यह भूमिका विशेष रूप से लोकतांत्रिक राजनीतिक प्रणालियों में पाई जाती है। एक विपक्षी दल की तरह, राजनीतिक दल सरकार के अत्याचार पर नियंत्रण करने की कोशिश करते हैं। वे सरकार के उन कार्यक्रमों एवं नीतियों की आलोचना करते हैं जो उन्हें लगता है कि लोगों एवं राज्य के बेहतर हित में नहीं है। वे सरकारों की प्राथमिकताओं एवं गलत नीतियों के बारे में जागरूकता का प्रसार करने के लिए विरोध प्रदर्शन, मार्च तथा घर–घर जा कर प्रचार प्रसार करते हैं। इसके परिणामस्वरूप, सरकारें विपक्षी दलों की भूमिका को गंभीरता से लेती हैं तथा अपने मंत्रियों एव ंदल के अन्य सदस्यों को विपक्षी दलों के आरोपों का प्रतिउत्तर देने की अनुमति देते हैं।

हालांकि, राजनीतिक दलों की विपक्ष के रूप में इस पुनरावर्ती भूमिका का विकास युनाइटेड किंगडम में हुआ। यहाँ विपक्षी दलों को महामहिम के विपक्ष के रूप में जाना जाता है। एक विपक्षी दल के रूप में कार्य करते हुए, संबंधित राजनीतिक दल एक छाया मंत्रीमंडल बनाता है। विपक्षी दल का यह छाया मंत्रीमंडल, सत्तारूढ़ विधायिका के बहुमत गंवाने की स्थिति में कार्यभार संभालने के लिए तैयार रहता है। अन्य लोकतंत्रों में, विपक्षी दल सत्ताधारी दल को सत्ता से हटाने तथा उसकी भूमिका अपनाने के लिए प्रयासरत रहते हैं। इसके लिए वे, संसद में अविश्वास प्रस्ताव लाते हैं। एक बार जब सत्तारूढ़ दल बहुमत

साबित करने में विफल हो जाता है, तो विपक्ष को सरकार बनाने का अवसर प्राप्त हो जाता है।

4.3.9 जनमत बनाना

राजनीतिक दलों का लोकतंत्रिक कार्य मुख्य रूप से जनमत बनाना है। राजनीतिक दल राजनीतिक समाजीकरण, चुनाव तथा जनमत बनाने वाले कार्यों के माध्यम से नागरिकों से जुड़े होते हैं। राजनीतिक दल जनमत बनाने के घटक(एजेंट) के रूप में कार्य करते हैं। वे नागरिकों को किसी विषय पर अपने साथ खड़े होने के लिए समझाने एवं संगठित करने की कोशिश करते हैं। उदाहरण के लिए 123 समझौते का विषय लें, जिसे भारत–अमरीका असैन्य परमाणु समझौते के रूप में भी जाना जाता है, जिसे भारतीय मीडिया में बड़े पैमाने पर प्रसारित किया गया था। इससे न केवल राजनीतिक दल अपितु भारतीय समाज भी नितांत गहराइ तक विभाजित हो गया था। मुख्य विपक्षी दल, भारतीय जनता पार्टी तथा मार्क्सवादी दल सौदे का विरोध करने के साथ–साथ जनमत को अपने पक्ष में करने की कोशिश कर रहे थे। ऐसा माना जाता है कि भारत–अमरीका असैन्य परमाणु समझौता उन कुछ विषयों में से एक था जिससे भारतीय नागरिक अवगत थे तथा उन पर स्वतंत्रता के बाद से ही विदेश नीति विषय को आकार देने के कोशिश कर रहे थे। हालाँकि दल जनमत बनाने का कार्य हमेशा करते हैं, वे चुनाव के दौरान इस कार्य में तत्पर्ता से लगते हैं क्योंकि इस दौरान जनता की राय का मत में बदले जाने की संभावना सबसे अधिक होती है।

बोध प्रश्न 2

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर की युक्तियों के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) राजनीतिक दलों के कार्य चुनावी राजनीति तक सीमित नहीं हैं। क्या आप सहमत हैं?

.....

.....

.....

.....

4.4 विभिन्न राजनीतिक प्रणालियों के तहत राजनीतिक दल

राजनीतिक दलों की भूमिका और कार्य अलग–अलग प्रकार की राजनीतिक प्रणालियों के साथ भिन्न होते हैं। उनके कार्य गैर–लोकतांत्रिक राजनीतिक प्रणालियों और लोकतांत्रिक राजनीतिक प्रणालियों दोनों में भिन्न होते हैं। राजनीतिक दलों के कार्य गैर–लोकतांत्रिक राजनीतिक प्रणालियों जैसे फासीवादी और साम्यवादी राजनीतिक प्रणालियों में भी भिन्न होते हैं। कार्यों और भूमिकाओं में मुख्य रूप से अंतर राजनीतिक संस्कृति में, सामाजिक–राजनीतिक विकास की अवस्था में, राजनीतिक दलों की संख्या में और अंतर–दल संस्कृति में होता है।

लोकतंत्र में राजनीतिक दलों की भूमिका बहुत व्यापक है। अमेरिकी राजनीतिक वैज्ञानिक ई. ई. शेटश्नाइडर ने अवलोकन किया है कि "राजनीतिक दलों ने लोकतंत्र का निर्माण किया, और आधुनिक लोकतंत्र, दलों के संदर्भ में अकल्पनीय है" (काट्ज़ 2020: 216)। सबसे पहले, चुनावी कार्य लोकतंत्र में सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है। लोकतांत्रिक राजनीतिक प्रणालियों में एक प्रतिस्पर्धी दलीय प्रणाली होती है, जहां विभिन्न राजनीतिक दलों में सत्ता को नियंत्रित करने के लिए चुनावों में वोट पाने की होड़ लगी होती हैं। राजनीतिक दल अपनी सदस्यता और समर्थन आधार बढ़ाने के लिए एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं। दूसरा, दल नागरिकों का समाजिकरण करते हैं, उन्हें सरकार में राजनीतिक पदों पर रखने के लिए भर्ती और प्रशिक्षित भी करते हैं। लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था में राजनीतिक दल मुख्य रूप से समर्थन जुटाने के लिए प्रेरक साधनों का उपयोग करते हैं। चुनावों के बाद, सरकार में राजनीतिक पदों को हासिल करने के लिए लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था में निर्वाचित सदस्यों के बीच सौदा होता है। लोकतांत्रिक मजबूरियों को देखते हुए, अक्सर शीर्ष नेतृत्व अपने मंत्रालयों को क्षेत्र, व्यवसाय, लिंग और पहचान के मामले में अधिक प्रतिनिधि बनाने के लिए मजबूर होता है। तीसरा, राजनीतिक दलों की भूमिका सरकार के गठन के साथ समाप्त नहीं होती। सरकार में राजनीतिक पदों के लिए निर्वाचित सदस्यों के चयन के बाद भी, दल सतर्कता से अपना कर्तव्य निभाती हैं तथा उन पर और सरकार पर भी नज़र रखती हैं। ज़रूरत पड़ने पर वे मंत्रियों को एक मंत्रालय से दूसरे मंत्रालय में अदल–बदल भी कर देते हैं। चौथा, राजनीतिक दल सरकार और मतदाताओं के बीच एक मज़बूत संबंध बनाते हैं। के लॉसन के अनुसार, चार संयोजन सबसे महत्त्वपूर्ण हैं– चुनावी संयोजन, सहभागी संयोजन, ग्राहकवादी संयोजन और निदेशात्मक संयोजन (पेटिट 2014: 14)। चुनावी संयोजन निर्वाचित प्रतिनिधि को दल के मतदाताओं और समर्थकों के प्रति उत्तरदायी रखता है। नागरिकों की भूमिका को महज़ मतदाताओं से ऊपर उठाकर, सहभागी संयोजन उन्हें सरकार में सक्रिय भूमिका निभाने की अनुमति देता है। ग्राहकवादी संयोजन मतदाताओं और दल को सौदेबाज़ी का अवसर प्रदान करता है। इस संयोजन के द्वारा, कुछ सेवाओं और सुविधाओं के बदले में, दल मतों की खरीद करते हैं। निदेशात्मक संयोजन के माध्यम से, सत्ता में रहने वाले (दल के पूर्व सदस्य, लेकिन अभी सरकार में) दबाव, शिक्षा या दोनों के माध्यम से नागरिकों के व्यवहार को नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं। पाँचवां, आजकल विपक्षी दलों के बिना लोकतंत्र के समुचित कार्य की कल्पना नहीं की जा सकती। एक विपक्षी दल के रूप में सरकार को नियंत्रित करना विशेष रूप से लोकतांत्रिक राजनीतिक प्रणालियों में होता है।

राजनीतिक दलों और राजनीतिक संस्कृति में अंतर को देखते हुए, राजनीतिक प्रणालियों को विकसित करने में दलों की भूमिका एवं कार्य ऊपर बताए हुए, उन्नत या सुस्थापित लोकतंत्र से भिन्न होती हैं। सामान्य तौर पर, विकासशील प्रणालियों में दल आधुनिकरण और राजनीतिक स्थिरता के लिए प्रयासरत रहते हैं। हालांकि, कुछ विकासशील राज्यों में राजनीतिक दलों ने चुनाव को नियमानुसार लड़ना छोड़ दिया है। ऐसे दल स्वेच्छा या अनिच्छा से व्यवस्था की स्थिरता को चुनौती देते हैं। फिर भी, सुविचारित भर्ती के कार्यों के माध्यम से, क्षेत्र, समरूपता, लिंग और जाति के संदर्भ में अधिकांश राज्यों में राजनीतिक व्यवस्था को स्थिरता प्रदान करने में दल सफल रहे हैं।

सत्तावादी, साम्यवादी और फासीवादी व्यवस्थाओं जैसी गैर–लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्थाओं में राजनीतिक दल थोड़ी अलग भूमिका निभाते हैं। सत्तावादी राजनीतिक

व्यवस्था तीन प्रकार की होती हैः राजशाही, सैन्य और नागरिक। सतााावादी राजनीतिक व्यवस्थाओं में, राजनीतिक दल राज्य व्यवस्था को संचालित करने का साधन होते हैं। वे शासक वर्ग को वैधता प्रदान करते हैं और अपने शासन की रक्षा करते हैं। राजनीतिक दल सत्तावादी राजनीतिक व्यवस्थाओं में (हेग, हैरोप और मैककॉर्मिक 2019ः 282) में पांच परस्पर संबंधित कार्य करते हैं। पहला, राजनीतिक दल अंतर–शासन झगड़ों को सुलझाने में मदद करते हैं। राजनीतिक दलों की अनुपस्थिति में, तानाशाही शासन अस्थिर या खत्म हो सकता है। दूसरा, शासन के लिए राजनीतिक दल सेना जैसे अन्य संभावित दावेदारों से होने वाले खतरों को संभालने में मदद करते हैं। तीसरा, राजनीतिक दल चुनाव के प्रबंधन में तानाशाह की सहायता करते हैं। तानाशाह का दल उसे मतदाताओं को रिश्वत देने, मतदान केंद्रों पर कब्ज़ा करने और चुनाव में हेरफेर करने में मदद करता है। चौथा, प्रचार के साधन रूप में कार्य करते हुए, राजनीतिक दल शासक वर्ग की सूचना लेते हैं और राजनीतिक व्यवस्था के दूरस्थ क्षेत्रों में अपना प्रभाव बढ़ाते हैं। अंततः सत्तावादी शासन में राजनीतिक दल सामाजीकरण के कार्य करते हैं। लेकिन वे लोगों को शिक्षित ही नहीं बल्कि इस तरह से शिक्षित करना चाहते हैं कि लोग उनके शासन और उनकी विचारधारा का समर्थन करें तथा शासन के खिलाफ विद्रोह की संभावना न रहे।

साम्यवादी राजनीतिक व्यवस्थाओं में, अंतर–दल प्रतियोगिता अनुपस्थित होती है क्योंकि या तो अन्य दल मान्यता प्राप्त नहीं है या प्रमुख साम्यवादी दल के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए पर्याप्त समर्थन नहीं है। आमतौर पर साम्यवादी राजनीतिक दल लोकतांत्रिक केंद्रीयवाद के सिद्धांत पर संगठित होते हैं। इसलिए दल में एक सख्त अनुक्रम बना कर रखा जाता है। साम्यवादी राजनीतिक व्यवस्था में राजनीतिक दल आधुनिकीकरण, सामाजीकरण, भर्ती और राय बनाने में महत्तवपूर्ण भूमिका निभाते हैं। साम्यवादी व्यवस्थाओं के राजनीतिक दल नव स्थापित साम्यवादी राज्यों को उनकी विचारधारा और धारणा के अनुरूप ढालने का प्रयास करते हैं। विपक्ष के रूप में नही बल्कि भीतर से, वे सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों को आकार देते हैं। साम्यवादी शासन के औचित्य को बढ़ाने और बनाए रखने के लिए वे नागरिकों का सामाजीकरण और पुनः सामाजीकरण करते हैं। वे अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रबोधक और साथ ही साथ प्रतिरोधी साधनों का उपयोग भी करते हैं।

फासीवादी शासन नेता और दल को बहुत महत्व देता है। चूंकि ये प्रणालियाँ सर्वसत्तावादी हैं, इसलिए वे नागरिकों के जीवन के सभी पहलुओं को नियंत्रित करने का प्रयास करतीं हैं। इसलिए, फासीवादी दल सामाजीकरण पर ध्यान केंद्रित करते हैं। सामाजीकरण के माध्यम से, सत्ताधारी अभिजात वर्ग विरोध के किसी भी अवसर को रोकने के लिए नेताओं और उनकी विचारधारा को वैध बनाने की कोशिश करता है। सत्ताधारी दल अपने नागरिकों को उनका और उनके नेताओं का हुक्म मानने के लिए बाध्य करने में कोई संकोच नहीं करता। फासीवादी राजनीतिक दल अपनी विचारधारा के अनुरूप राज्य का आधुनिकीकरण करना चाहते हैं। वे फासीवादी राज्य के पक्ष में जनता की राय को आकार देने की कोशिश करते हैं तथा आलोचना और प्रत्युत्तर मत को दृढ़ता पूर्वक हतोत्साहित करते हैं। राजनीतिक दल लोगों और सरकार के बीच समन्वय तंत्र के रूप में भी कार्य करते हैं। साम्यवादी व्यवस्थाओं की तरह, आवश्यकता पडने पर फासीवादी व्यवस्थाओं में राजनीतिक दल उनकी विचारधारा के अनुरूप नागरिकों और अनुशासन का सामाजीकरण करते हैं।

बोध प्रश्न 3

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर की युक्तियों के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) लोकतांत्रिक और गैर–लोकतांत्रिक राजनीतिक प्रणालियों में राजनीतिक दलों की भूमिका कैसे भिन्न होती है?

.....

.....

.....

.....

4.5 राजनीतिक दलों के लिए चुनौतियाँ

लंबे समय से राजनीतिक दल कई आंतरिक और बाहरी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। आंतरिक रूप से, दल के संगठन एवं उत्तराधिकार चिंता का विषय रहा है। विशेष रूप से विकासशील देशों में, दलों में आंतरिक लोकतंत्र का अभाव रहता है। संगठनात्मक चुनाव नियमित अंतराल पर नहीं होते हैं। शीर्ष स्तर पर कुछ नेता निर्णय लेते हैं जिन्हें अन्य लोग अनुसरण करते हैं। एक आकर्षक व्यक्तित्व युक्त नेता लंबे समय तक शीर्ष स्थान पर बना रहा है, या तो चुनाव के बिना या सांकेतिक संगठनात्मक चुनावों के साथ। कुछ मामलों में, शीर्ष नेतृत्व पर वंशवादी उत्तराधिकार होता है। एक परिवार या कुटुम्ब के सदस्य पार्टी (दल) के शीर्ष नेतृत्व के स्थान पर कब्जा कर लेते हैं। इस संदर्भ में, स्पेन के समाजशास्त्री और राजनीति वैज्ञानिक जुआन जे. लिंज़ (1929 – 2013) ने उपयुक्त लिखा है कि लोगों की भागीदारी के स्तर एवं उनके राजनीतिक पार्टियों से वैचारिक और भावनात्मक लगाव जिसने दो–तीन दशक या एक सदी तक राज किया, अब ग्रहणग्रस्त हो चुका है। 21वीं सदी में कुछ बाहरी घटनाओं ने इस मामले को और उलझा दिया है, जिससे लोगों का राजनीतिक दलों के प्रति विश्वास कम होता जा रहा है।

राजनीतिक दलों में लोगों का कम होता भरोसा एक ध्यान देने योग्य चुनौती है। बढ़ती जागरूकता के साथ, लोगों की राजनीतिक दलों से अपेक्षाएँ भी बढ़ गई हैं। जनसंचार और सोशल मीडिया के युग में, लोग अपनी वेदना तथा दलों के प्रति असंतोष खुल कर व्यक्त कर रहे हैं। इस असंतोष को बढ़ाने में कई कारकों ने योगदान दिया है। पहला, केवल प्रतिरोध के लिए विरोध करना। अक्सर राजनीतिक दल जब सत्ता में होते हैं तो उन्हीं नीतियों और कार्यक्रमों को उल्झा देते हैं जिनका विरोध वे विपक्ष में रहते हुए किया करते थे। भारत में, खुदरा व्यापार क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) के लिए भारतीय जनता पार्टी का विरोध इस श्रेणी में लाया जा सकता है। इन्होंने विपक्ष में रहते हुए खुदरा व्यापार क्षेत्र में एफडीआई का विरोध किया था किन्तु वर्ष 2014 में सत्ता में आने पर नीति को आगे बढ़ाया। दूसरा, मीडिया भी इस बढ़ते असंतोष को हवा देता है। नेताओं को, सत्ता चाहने वालों के रूप में चित्रित करने तथा सत्ता में आत्म–निरंतरता के लिए काम करने वाले जीवों के रूप में चित्रित करने की प्रवृत्ति है। अंततः, राज्यों के बदलते सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं तथा नागरिकों की बदलती मांगों का सामना करने के

लिए अपने आपको अनुकूल बनाने में राजनीतिक दलों की अक्षमता के कारण अविश्वास की खाई बढ़ रही है। इन कारकों ने एक साथ मिलकर राजनीतिक दलों पर जनता के विश्वास में कमी आने में सहायता की।

चुनाव प्रबंधन करने वाली कम्पनियों का उदय राजनीतिक दलों के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती प्रस्तुत कर रहा है। कई राजनीतिक दलों ने पेशेवर चुनाव प्रबंधन कम्पनियों को महत्वपूर्ण चुनाव प्रबंधन का कार्य सौंपना शुरू कर दिया है। कुछ समय पहले तक, यह यूरोप और अमरीका के विकसित लोकतंत्रों में प्रचलित था। अब ऐसा नहीं रहा। विकासशील देशों में राजनीतिक दल, चुनावों के माध्यम से राजनीतिक सत्ता पाने की अपनी इच्छा में चुनाव प्रबंधन कम्पनियों को काम पर रखना शुरू कर दिया है। ये कम्पनियाँ राजनीतिक दलों से आवश्यक जानकारी प्राप्त कर उनके लिए चुनावी रणनीति तैयार करती हैं। फेसबुक और व्हाट्सएप जैसे सोशल मीडिया दिग्गजों से निजी आंकडे लेते हुए, ये कम्पनियाँ लोगों के साथ समूह के रूप में व्यवहार करती हैं न कि एकल नागरिकों के जैसे। चुनाव प्रबंधन कम्पनियों का प्रवेश अनैतिक रूप से आंकडों के हस्तांतरण को बढ़ावा दे रहा है। इन कम्पनियों की बढ़ती भूमिका नागरिकों के प्रति राजनीतिक दलों के उत्तरदायित्व और जवाबदेही में कमी ला सकती है क्योंकि पार्टियाँ नागरिकों को सेवाएँ प्रदान करने की तुलना में कम्पनियों के माध्यम से चुनाव जीतना अधिक महत्वपूर्ण समझती हैं। इन कम्पनियों की भूमिका के विस्तार से राजनीतिक दलों और नागरिकों के बीच अंतर पैदा हो सकता है।

सोशल मीडिया का बढ़ता प्रभाव भी एक अन्य कारक है जो राजनीतिक दलों में लोागों के विश्वास को और कम कर रहा है। इंटरनेट सेवाओं के विस्तार के साथ, पिछले एक या दो दशक में सोशल मीडिया की भूमिका कई गुना बढ़ गई है। सोशल मीडिया ने राजनीतिक दलों और नागरिकों के बीच संबंधों को दोतरफा प्रक्रिया बना दिया है। इस तकनीकी क्रांति से राजनीतिक दलों की कार्य पद्धति काफी प्रभावित हुई है। राजनीतिक दल नागरिकों से सीधे बातचीत करने के बजाय लोगों तक पहुँचने और उनको अपने पक्ष में करने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं। सोशल मीडिया के ज़रिए सूचना भेजी जाती है। नतीजन, नागरिकों और राजनीतिक दलों के बीच सीधा संपर्क धीरे–धीरे कम हो रहा है, खासकर जब चुनाव नहीं होते हैं। राजनीतिक दलों का नागरिकों के साथ जुड़ाव कम हो रहा है क्योंकि समाज और सरकार के बीच एक दल जो एक भूमिका निभाते थे वह अब राजनीतिक दलों के सूचना प्रौद्योगिक प्रकोष्ठों द्वारा निभाई जा रही है।

हाल के वर्षों में, आईटी सेल ने सोशल मीडिया को नागरिकों और लक्षित समूहों के बीच अपनी मूल पार्टी की छवि के प्रति जानकारी प्रसारित करने के लिए राजनीतिक दलों का एक पसंदीदा साधन बना दिया है। इसके लिए, राजनीतिक दल अपने विरोधी दलों के खिलाफ बेबुनियाद झूठी मिथ्या खबरें फैलाने से भी नहीं हिचकिचाते। विरोधियों पर बढ़त हासिल करने के लिए, राजनीतिक दल के आईटी सेल अपने विपक्षियों की छवि खराब करने के लिए गलत और विकृत सूचना का स्रोत बन गए हैं। तथ्य जाँचने वाली वेबसाइटें राजनीतिक दलों के इस दुष्प्रचार और गलत सूचना फैलाने की रणनीति का पर्दाफाश कर रही हैं। नतीजन, नागरिकों के एक वर्ग का राजनीतिक दलों से मोहभंग हो रहा है। सोशल मीडिया पर नागरिकों ने खुलकर अपना मलाल व्यक्त करना शुरू कर दिया है। इससे दलों के ऊपर लोगों के विश्वास में और गिरावट आएगी, जिससे पार्टी के समाजीकरण और भर्ती कार्यों में बाधा आएगी।

बोध प्रश्न 4

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर की युक्तियों के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) समसामयिक समय में राजनीतिक दलों की कार्यशीलता के लिए क्या चुनौतियाँ हैं?

.....

.....

.....

4.6 सारांश

राजनीतिक दलों को परिभाषित करना मुश्किल है लेकिन समझना अपेक्षाकृत आसान है। ये पांच अभिलक्षण या विशेषताएँ राजनीतिक दलों के समान हैंः समूह, स्थायी संगठन, सिद्धांत, लक्ष्य और साधन। यद्यपि राजनीतिक दल सभी राजनीतिक प्रणालियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और कार्य भी करते हैं, फिर भी, उनके कार्य एक राजनीतिक व्यवस्था से दूसरी में भिन्न हाते हैं। लोकतांत्रिक राजनीतिक प्रणालियों में, वे चुनावी और समन्वय कार्यों पर अपना ध्यान केंद्रित करते हैं, जबकि सत्तावादी व्यवस्था में, वे शासन को वैध बनाने और उसके उद्धारकर्ता के रूप में कार्य करने का प्रयास करते हैं। राजनीतिक दलों की अनुपस्थिति में कई गैर–लोकतांत्रिक शासन दम तोड़ सकते थे। अगर हम लेनिन पर भरोसा करें, तो मध्यमवर्गी समाज में क्रान्ति लाना भी, मजदूर वर्ग के बीच सर्वहारा चेतना लाने में कम्युनिस्ट पार्टी की महत्वपूर्ण भूमिका के बिना, यदि असंभव नहीं तो कठिन अवश्य हो सकता था।

फिर भी, उनकी महत्वपूर्ण भूमिकाओं के बावजूद, राजनीतिक दलों को आंतरिक और बाहरी रूपों से कुछ गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। आंतरिक रूप से, लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था में कार्य करते हुए भी, दल लोकतंत्र के अभाव का सामना कर रहीं हैं। नियमित संगठनात्मक चुनावों की कमी और शीर्ष पदों जैसे अध्यक्ष और महासचिव पर वंशानुगत उत्तराधिकार आंतरिक चुनौतियां हैं। बाहरी रूप से, चुनावी प्रबंधन कम्पनियों का उदय, सोशल मीडिया की बढ़ती भूमिका तथा दलों और नागरिक मतदाताओं के बीच विश्वास की बढ़ती कमी ने दलों को अपने कामकाज में सुधार करने के लिए मजबूर कर दिया। संभावित सुधार जैसे सोशल मीडिया का उपयोग कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियों का समाधान कर सकता हैं। हांलाकि, इस प्रकार या किसी अन्य तरह से आईटी सेल की स्थापना, मतदाताओं और उनके बीच विश्वास की कमी को और बढ़ा रही है।

4.7 संदर्भ

एप्टर, डी.ई (1969). *'दी पॉलिटिकल पार्टी एज़ ं मॉडर्नाइज़िंग इंस्ट्रुमेंट'*। इन जीन ब्लोंडल (एड.), कम्पैरेटिव गवर्नमेंटः ं रीडर लंडनः पॉलग्रेव पीपी. 86–95

बॉल, एलन आर. (1987), *ब्रिटिश पॉलिटिकल पार्टीज़ः द एमर्जेंस ऑफ अ मॉडर्न पार्टी सिस्टम* लंडनः मैक्मिलन

बॉल, एलन आर. (1993), *मॉडर्न गवर्नमेंट एंड पॉलिटिक्स* कैथम : कैथम हाउस

डुवर्जर, मॉरिस. (1967). *पॉलिटिकल पार्टीज़ : देयर ओरिजिन एंड एक्टिविटी इन मॉडर्न स्टेट* कैंम्ब्रिज : युनिवर्सिटि प्रिंटिंग हाउस

हॉग रॉड, मार्टिन हैरूप एंड जॉन मैकक्रोमिक. (2019). *कम्पैरेटिव गवर्नमेंट एंड पॉलिटिक्स : एन इंट्रोडक्शन* लंडन : रेड ग्लोब प्रेस

काट्ज़, रिचर्ड एस. (2020). 'पॉलिटिकल पार्टीज़'. इन डैनियल कारामनी (एड.), *कम्पैरेटिव पॉलिटिक्स, न्यूयार्क* : ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटि प्रेस, 213–230

लापालोम्बारा, जोसफ एंड मायरॉन वीनर. (1969). *'द ओरिजिन एंड डेवलेपमेंट आफ पॉलिटिकल पार्टीज़'* इन जोसफ लोपालोम्बारा एंड मायरॉन वीनर (एडस्.), *पालिटिकल पार्टीज़ एंड पालिटिकल डेवलेपमेंट,* प्रिंसटन : प्रिंसटन युनिवर्सिटि प्रेस, पीपी 3–42

न्यूमेन, एस. (1969). *'टुवर्ड अ कम्पैरेटिव स्टडी ऑफ पॉलिटिकल पार्टीज़'* इन जीन ब्लोंडल (एड.), कम्पैरेटिव गवर्नमेंट : अ रीडर, लंडन : पॉग्रेव, पीपी. 69–76

पेटिट, रॉबिन टी. 2014. *कन्टैम्पोरेरी पार्टी पॉलिटिक्स्* न्यूयार्क : पॉलग्रेव

4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) राजनीतिक दलों के पांच सिद्धांतों पर प्रकाश डालिए

2) दो प्रकार के राजनीतिक दलों के बीच अंतर लिखते समय, वे कब अस्तित्व में आए, उनके संगठनात्मक पहलू और सामाजिक आधार पर ध्यान केन्द्रित करें

बोध प्रश्न 2

1) यदि आप सहमत हों, तो (1) राजनीतिक दल के कार्यों जैसे राष्ट्र–निर्माण, आधुनिकीकरण, राजनीतिक सामाजीकरण और विपक्ष के तौर पर सरकार को नियंत्रित करने पर प्रकाश डालिए (2) समन्वय, जनमत बनाने और प्रतिनिधित्व कार्यों पर भी ध्यान दें

   यदि आप असहमत हों, तो (1) राजनीतिक नवरोहण(भर्ती), सरकार के गठन, सरकार की नीतियों को बनाने और आकार देने के कार्यों पर प्रकाश डालें

बोध प्रश्न 3

1) चुनावी राजनिति में राजनीतिक दलों की संख्या और मत के लिए प्रतिस्पर्धा पर ध्यान दें (2) वे किन कार्यों पर ध्यान केंद्रित करते हैं और किन पर नहीं। (3) क्या वे अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरक, प्रतिरोधी या दोनों साधनों के मिश्रण का उपयोग करते हैं

बोध प्रश्न 4

(1) आंतरिक लोकतंत्र की कमी और शीर्ष पद पर वंशानुगत उत्तराधिकार जैसी आंतरिक चुनौतियों पर चर्चा करें

(2) विस्तार से दिखाएं कि कैसे विश्वास की कमी, चुनाव प्रबंधन कम्पनियों की बढ़ती भूमिका और सोशल मीडिया का विस्तार राजनीतिक दलों के लिए चुनौतियाँ प्रस्तुत कर रहा है

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 5 दल प्रणाली*

संरचना

5.0 उद्देश्य

5.1 परिचय

5.2 दल प्रणालियों का वर्गीकरण

- 5.2.1 द्वि–दल प्रणाली
- 5.2.2 ढ़ाई दल प्रणाली
- 5.2.3 बहुदल प्रणाली
- 5.2.4 एक दल प्रणाली
- 5.2.5 प्रभावी दल प्रणाली
- 5.2.6 संस्थागत बनाम गैर–संस्थागत दल प्रणाली

5.3 एक व्यवस्था में दलों को प्रभावित करने वाले कारक

5.4 सारांश

5.5 संदर्भ

5.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.0 उद्देश्य

एक देश की दल प्रणाली को उस देश के राजनीतिक दलों की बीच की अंतःक्रिया तथा राजनीतिक व्यवस्था से उनके संबंध परिभाषित करते हैं। यह इकाई दल प्रणाली का विश्लेषण तथा जिन व्यवस्थाओं और समायोजनों के तहत वे कार्य करते हैं उनका दृष्टांत प्रदान करती है। इस इकाई के अध्ययन के बाद, आप निम्न करने के योग्य हो जाएंगेः

- दल प्रणाली को परिभाषित करने में
- दल प्रणालियों के प्रमुख प्रकारों की व्याख्या करने में
- विभिन्न दल प्रणालियों की विशेष्ताओं का वर्णन करने; तथा

* डॉ. तुलिका गौर, अतिथी व्याख्याता, नान–कॉलिजिएट वुमन्स एजुकेशन बोर्ड, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

- दल व्यवस्था को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान करने में

5.1 परिचय

इस खंड़ की पिछली इकाई में, हमने राजनीतिक दल को परिभाषित किया तथा राजनीतिक व्यवस्था में उनके द्वारा क्रियान्वित विभिन्न कार्यों का परीक्षण किया। जैसा कि हमने देखा, एक दल प्रणाली को छोड़ कर, राजनीतिक दल प्रत्येक देश में राष्ट्रीय, क्षेत्रीय या स्थानीय स्तर पर सदा राजनीतिक सत्ता प्राप्त करना चाहते हैं। इस प्रक्रिया में, वे सत्ता संघर्ष में प्रतिस्पर्धा में एक–दूसरे की पहल का जवाब देते रहते हैं। दलों के बीच प्रतिस्पर्धा की इस परस्पर क्रिया को, जिसकी कल्पना एक संवादात्मक स्वरूप में की गई है, "दल प्रणाली" के रूप में जाना जाता है। दल प्रणाली में दलों के बीच अंतःक्रिया विभिन्न कारकों से प्रभावित होती है : जैसे कि एक दूसरे से संवाद स्थापित करने वाले दलों की संख्या, दलों का आकार, प्रतिस्पर्धा का स्तर इत्यादि। तुल्नात्मक राजनीति के छात्रों की दल प्रणाली में रूचि का मुख्य कारण, चुनाव लड़ने वाले दलों की संख्या और उनके प्रकार हैं, जो कि न केवल उन विकल्पों को प्रभावित करता है जिनका मतदाता सामना करते हैं अपितु सरकार के गठन तथा जिस आसानी से राजनीतिक अधिकारी सार्वजनिक नीतियों को प्रतिपादित एवं कार्यान्वित कर सकते हैं उसको भी प्रभावित करता है ।

राजनीतिक विज्ञान के छात्र लगभग तब से दल व्यवस्थाओं का वर्गीकरण करते आ रहे हैं जब से वे दलों का अध्ययन कर रहे हैं। तब भी दल प्रणालियों का वर्गीकरण करना दो कारणों से कठिन हो रहा है, राजनीतिक दलों की विविधता और राजनीतिक व्यवस्था की गतिशीलता। बहुत समय तक, दल प्रणालियों का वर्गीकरण करने का सामान्य प्रचलन 'संख्या पद्धति' पर आधारित था (जिसने दल प्रणाली के वर्गीकरण को व्यवस्था में कार्यरत दलों की संख्या के आधार पर एक दल प्रणाली, द्वि–दल प्रणाली तथा बहुदल प्रणाली तक सीमित कर दिया), जब तक कि सरतोरी (1976) ने ध्रुवीकरण की अवस्था को एक अन्य मानदंड के रूप में जोड़ा, जिसके आधार पर दल प्रणाली को उच्चतम या मध्यम श्रेणी में वर्गीकृत किया। यह इकाई आपको दल प्रणालियों की व्याख्याओं से परिचित कराएगी। यह महत्वपूर्ण दल प्रणालियों की विशेषताओं का वर्णन भी करेगी तथा दल प्रणाली और व्यापक राजनीतिक व्यवस्था के बीच अंतःक्रिया का परीक्षण भी करेगी।

5.2 दल प्रणालियों का वर्गीकरण

अनेक राजनीतिक वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न मानदंड़ों के आधार पर दल प्रणालियों के वर्गीकरण के लिए कई प्रयास किए गए हैं। इनमें से सबसे स्थायी वे प्रस्ताव रहे हैं जो दो फ्रांसीसी राजनीतिक वैज्ञानिकों, मौरिस डुवरगर और जीन ब्लोंडेल द्वारा प्रस्तावित किए गए। डुवरगर (1954) व्यवस्था में मौजूद दलों की संख्या के आधार पर दल व्यवस्था का वर्गीकरण करने में मार्ग दर्शक रहे हैं। वे व्यवस्था को 'एक दल प्रणाली' और 'बहुलवादी दल प्रणाली' में चिन्हित करते हैं। पहली श्रेणी में उन्होंने एक दल प्रणाली तथा प्रभावी दल प्रणाली को सम्मिलित किया एवं बहुलवादी प्रणाली में द्वि–पक्षीय प्रणाली तथा बहुदल प्रणाली को सम्मिलित किया। साथ ही, दलों की प्रकृति के आधार पर, जिसमें एक दल

प्रणाली को शामिल किया जा सकता है, डुवरगर दल प्रणाली को 'अनुशासित/दृढ़' तथा 'अनुशासनहीन/लचीला' में वर्गीकृत करते हैं। एक प्रणाली में पूर्ण बहुमत के संयोजन को ध्यान में रखते हुए, वे दल व्यवस्था को क्रमबद्ध करते हैं:

दल प्रणाली जहाँ एक दल को पूर्ण बहुमत प्राप्त हो

जहाँ पूर्ण बहुमत किसी एक दल को नहीं अपितु विभिन्न दलों के गठबंधन को प्राप्त हो

जहाँ बहुमत छोटे–छोटे दलों की मदद से पूर्ण होता है, जिन्हें सरकार या विपक्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने को मिलती है

जहाँ बहुमत छोटे–छोटे दलों की मदद से पूर्ण होता है, किन्तु जिनकी सरकार या विपक्ष में कोई महत्वपूर्ण भूमिका नहीं होती

एक दशक बाद, जीन ब्लोंडेल (1968) ने डुवरगर के कार्य को आगे बढ़ाया तथा अतिरिक्त श्रेणियों से पहचान कराई। ब्लोंडेल ने 1945 से 1946 तक दलों द्वारा प्राप्त किए गए मतों के आधार पर चार प्रकार का वर्गीकरण किया। ब्लोंडेल ने द्वि–दल प्रणाली, ढ़ाई दल प्रणाली, एक प्रभावी दल के साथ बहुदल प्रणाली तथा बिना प्रभावी दल के बहुदल प्रणाली में अंतर को समझाया। उनके दल प्रणाली के अध्ययन ने एक प्रमुख दल प्रणाली, द्वि–दल प्रणाली, उदारवादी बहुलवाद तथा अतिशय बहुदल व्यवस्था के बीच अंतर समझाया। ब्लोंडेल का अध्ययन, दो सबसे बडे दलों द्वारा प्राप्त औसत मतों के समूहों का विश्लेषण करके पहले पक्ष, दूसरे पक्ष और तीसरे पक्ष के अनुपात पर विचार करने पर आधारित था। उनके विश्लेषण से पता चला कि द्वि–दल प्रणाली (संयुक्त राज्य अमरीका, न्यूज़ीलैंड, ऑस्ट्रेलिया, युनाइटेड किंगडम और आस्ट्रिया में प्रचलित) में, दो दलों का अंश 90 प्रतिशत और उससे अधिक है तथा दोनों पक्षों के बीच बारीकी से संतुलित था। दूसरे समूह में, दो दलों का अंश मतदान का 75 से 80 प्रतिशत था, किन्तु पहले और दूसरे दलों (फ़ेडरल रिब्लिक ऑफ जर्मनी, कनाडा, आयरलैंड) के बीच औसत अंतर बहुत अधिक था (10.5 प्रतिशत)। मतों में असंतुलन को ध्यान में रखते हुए, ब्लोंडेल ने इस प्रणाली को त्रि–दल प्रणाली की बजाय ढ़ाई दल प्रणाली के रूप में वर्गीकृत किया।

ज्योवानी सरतोरी (1976) ने दल प्रणाली के वर्गीकरण में एक नया तत्व प्रस्तुत किया। चूंकि सरतोरी पूर्ण रूप से 'संख्या पद्धति' पर आधारित व्यवस्थाओं से संतुष्ट नहीं थे, तो उन्होंने इसका विश्लेषण किया कि प्रणाली में सिद्धांतों के मामले में दल एक–दूसरे से कितने दूर खड़े हैं, उनके बीच संघर्ष की तीव्रता कितनी है और सरकार में उनकी भूमिका क्या है। उनके अध्ययन में, सरतोरी ने केवल उन्हीं दलों को लिया जो कुछ महत्व रखती है, अर्थात, छोटे या बड़े दलों को तभी चुना जाएगा यदि वे दल प्रतिस्पर्धा को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं। इस सिद्धांत का उपयोग करते हुए, सरतोरी ने निम्नलिखित चार प्रकार की दल प्रणालियों बताई।

प्रमुख दल प्रणाली, इसमें बड़ी संख्या में दलों के अस्तित्व में होने के बावजूद एक दल सरकार में अपना प्रभुत्व रखता है। प्रमुख दल कुछ कारकों के कारण से उभर कर आते हैं जैसे कि, जनता के बीच लोकप्रियता, इसकी ऐतिहासिक वंशावली, करिशमाई नेतृत्व, सबल संगटनात्मक संरचना, आदि।

द्वि–दल प्रणाली, जिसमें दो अपेक्षाकृत शक्तिशाली राजनीतिक दलों के बीच राजनीतिक सत्ता साझा की जाती है।

परिसीमित बहुलवाद, जिसमें दो प्रमुख दलों में से किसी के पास स्पष्ट बहुमत नहीं है तथा वे अन्य समान विचारधारा वाले दलों का समर्थन मांगते हैं। गठबंधन सरकार को 'अशक्त सरकार' के रूप में देखा जा सकता है लेकिन यह ज़रूरी नहीं कि यह सरकार अल्पकालिक हो। सरतोरी ने परिसीमित या उदारवादी बहुलवाद के उदाहरणों के रूप में जर्मनी सघीय गण्राज्य, स्वीडन, बेल्जियम, आयरलैंड तथा डेनमार्क को शामिल किया है।

अतिशय बहुलवाद, इस व्यवस्था में समर्थक दल उच्चतम पदों पर अधिकार जताते हैं तथा बड़े पैमाने पर ध्रुवीकृत होते हैं । इस प्रकार की दल प्रणाली की 'व्यवस्था विरोधी' दलों की उपस्थिति, द्विपक्षीय विपक्ष तथा अभिकेंद्र प्रतियोगिताएँ जैसी कुछ विशेषताएँ होती है। गहरी दरारों तथा कम सहमति के साथ अतिशय या ध्रुवीकृत बहुलवाद वैश्विक राजनीति में वैध दल प्रणाली प्रस्तुत नहीं करता है।

जैसा कि आप देख सकते हैं, सरतोरी का अध्ययन भी संख्याओं पर आधारित है (उचित ढ़ंग से गिना हुआ) वास्तव में, जिसका मुख्य अंतर संख्या नहीं था, अपितु, ध्रुवीकरण तथा दलों के बीच प्रतियोगिता के अंश की स्थिति थी। इसने तुलनात्मक राजनीतिक वैज्ञानिकों को यह समझने में सक्षम बनाया कि क्यों कुछ प्रकार की बहुदल प्रणालियाँ मंत्रीमंडल की अस्थिरता तथा व्यवस्था के पतन का कारण बनती हैं जबकि अन्य नहीं।

दल प्रणाली राजनीतिक व्यवस्था का एक सक्रिय तत्व है। सन् 1980 के दशक के बाद से, यूरोप तथा उन देशों में जहाँ लोकतांत्रिक प्रणाली अपना ली गई, वहाँ दल एवं दल प्रणाली महत्वपूर्ण बदलावों से गुज़री (जिनके बारे में आप इस पाठ्यक्रम के खंड प्ट में पढ़ेंगे)। जैसा कि पीटर मैयर (2002) ने ध्यान दिलाया कि, वर्तमान में द्वि दल प्रतिस्पर्धा के बहुत कम उदाहरण हैं तथा ध्रुवीकृत बहुलवाद का एक उदाहरण भी नहीं है। इसके बजाय, अधिकांश उदारवादी लोकतंत्रों में दल प्रणाली, तेजी से बढ़ने वाली श्रेणी में आती है, उदारवादी बहुलवाद। दल प्रणालियों के वर्गीकरण का नवीनतम दृष्टिकोण संस्थाकरण के संदर्भ में था। सियारॉफ (2013) संस्थाकरण की व्याख्या, दलों में संगठन के स्तर, समाज के साथ उनके जुड़ाव की सीमा, दलों की विचारधारा में निरंतरता, अंतरदल प्रतियागिता तथा किस हद तक राजनीतिक दलों और चुनावों की वैधता के रूप में करते हैं।

विभिन्न प्रकार की प्रचलित दल प्रणालियों को आसानी से समझने के लिए, हम दल प्रणाली को निम्नानुसार वर्गीकृत करते हैं:

द्वि–दल प्रणाली

ढ़ाई दल प्रणाली

बहुदल प्रणाली

एक दल प्रणाली

संस्थागत बनाम गैर–संस्थागत दल प्रणाली

बोध प्रश्न 1

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर की युक्तियों के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) दल प्रणाली क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) दल प्रणालियों के विश्लेषण में सरतोरी का क्या योगदान है?

.....

.....

.....

.....

.....

5.2.1 द्वि–दल प्रणाली

इसे द्वि–पक्षीय प्रणाली भी कहते हैं, इस प्रणाली की विशेषता उन दो 'प्रमुख' राजनीतिक दलों का प्रभुत्व है जो राजनीतिक सत्ता हथियाने और सरकार बनाने की समान संभावना रखते हैं। व्यवस्था में इस प्रकार के कई अन्य छोटे दल मौजूद हो सकते हैं, किन्तु अहम् स्थान दो दलों द्वारा साझा किया जाता है। इन दो प्रमुख दलों को आमतौर पर बहुसंख्यक मतदाताओं का समर्थन प्राप्त होता है, जिसका तात्पर्य है कि व्यवस्था में अन्य दल अल्पमत में हैं। सत्ता एक प्रमुख दल के हाथ से दूसरे प्रमुख दल के हाथ में स्थानांतरित होती रहती है, जिसके कारण से अन्य दलों की सरकार के गठन में लगभग नगण्य भूमिका रह जाती है।

द्वि–दल प्रणाली, दो दलों के बीच परस्पर स्वीकृति तथा सह–अस्तित्व की नींव पर कार्य करती है, जो खुले आम एक दूसरे को तथा उनकी स्थिति को पूरे सम्मान के साथ स्वीकार करते हैं। इस संदर्भ में, सियारॉफ (2013) इस प्रणाली में दो भिन्नताएँ बताते हैं। पहली, 'प्रतिस्पर्धी दल प्रणाली' के रूप में, जो सत्ता में स्पष्ट विकल्प प्रदर्शित करता है क्योंकि दोनों दलों के जीतने की समान संभावना है। इस प्रकर की प्रणाली का एक अच्छा उदाहरण संयुक्त राज्य अमरीका की दल प्रणाली है, जहाँ पर दोनो सदन, आमतौर पर कांग्रेस और विशेष रूप से सीनेट दोनों दलों के बीच उच्च स्तर की प्रतिस्पर्धा का अनुभव करते हैं। माल्टा तथा अधिकांश भूतपूर्व ब्रिटिश उपनिवेश, मुख्यतः कैरेबियाई देशों में भी इसी प्रकार की दल प्रणाली है। दूसरी भिन्नता एक 'त्रुटिपूर्ण या असंतुलित द्वि–दल व्यवस्था' है, जहाँ दो प्रमुख दल के होने के बावजूद एक दल के जीतने की संभावना दूसरे दल के मुकाबले बेहतर होती है। उदाहरण के लिए, बोत्सवाना तथा संयुक्त राज्य अमरीका के कुछ राज्य विधानमंडलों में इस प्रकार की दल प्रणाली है जहाँ एक दल के दूसरे दल की अपेक्षा जीतने की संभावना अधिक होती है। अतः कुछ हद तक एक दल ही प्रमुख दल प्रणाली के रूप में कार्य करता है (सियारॉफ 2013)।

द्वि–दल प्रणाली में दो विपरीत विचारधाराओं का प्रदर्शन करने वाली या एक समान विचारधारा को साझा करने वाले दल जिनका चुनावी समर्थन अलग हो उनको शामिल किया जा सकता है। सन् 1980 के दशक के उत्तरार्ध में सोशल एंड लिब्रल डेमोक्रेटिक

पार्टी के उद्भव तक, यूके में लेबर एवं कंज़रवेटिव दलों की उपस्थिति प्रतिस्पर्धी विचारधाराओं पर आधारित द्वि–दल प्रणाली का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। दूसरी ओर, संयुक्त राज्य अमरीका में, डेमोक्रेटिक तथा रिपब्लिकन दलों के शुरूआत में अलग–अलग विचारधाराएँ/राजनीतिक रूझान थे किन्तु समय के साथ वे दोनों अलग अलग हितों के लिए लचीले तथा अनुकूल हो गए। देश में स्वीकृत लोकतांत्रिक मानदंड़ों को प्राप्त करने के लिए दोनों पक्षों के दृष्टिकोण भिन्न हैं तथा वे नागरिकों को उनकी पसंद के अनुसार एक स्पष्ट विकल्प देते हैं।

एक द्वि–दल प्रणाली एक 'दल सरकार' में परिणामित होती है, जिसका अर्थ है कि सरकार एकल दल द्वारा बनाई गई है एवं एक स्थिर और ज़िम्मेदार सरकार की तरह जवाबदेह होगी। यह प्रणाली सरकार के साथ–साथ विपक्ष को अपना जनादेश पूरा करने की ताकत देते हुए, जनता को एक सीधा स्पष्ट विकल्प देती है। एक मज़बूत सरकार को एक मज़बूत विपक्ष का सामना करना पड़ता है जो सरकार में जवाबदेही की भावना तथा विपक्ष में सत्ता हथियाने की संभावनाओं को बढ़ाने के लिए निरंतर जोश प्रवाह सुनिश्चित करता है।

हालाँकि, एक द्वि–दल प्रणाली का परिणाम 'प्रतिकूल राजनीति' हो सकती है जहाँ पार्टियाँ राजनीतिक व्यवस्था में अपनी स्थिति के बारे में जागरूक और आश्वस्त होती हैं और इसलिए, सत्ता को हर कीमत पर हासिल करने के लिए व्यवस्था को भ्रष्ट कर सकते हैं। दोनों पक्ष देश में प्रचलित एक छोटे, धनी अभिजात वर्ग के हितों से प्रेरित हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमरीका में द्वि–पक्षीय प्रणाली बहस के पर्याप्त अवसर प्रदान करती है, किन्तु अभिजात वर्ग के पक्ष कें मुद्दों को आम आदमी की तलना में हमेशा त्वरित सहमति मिलती है।

5.2.2 ढ़ाई दल प्रणाली

इस प्रणाली में, दो प्रमुख दल होते हैं तथा एक या एक से अधिक छोटे किन्तु महत्वपूर्ण दल होते हैं। "ढ़ाई दल प्रणाली ऐसी व्यवस्था है जहाँ दो मुख्य दलों को 80 प्रतिशत से अधिक किन्तु 95 प्रतिशत से कम सीटें प्राप्त होती हैं और जहाँ प्रणाली एकल–दल की प्रधानता के मानदंड़ को पूरा नहीं करती। ढ़ाई दल प्रणाली में परिणाम का कोई निश्चित स्वरूप नहीं होता क्योंकि परिणाम तीसरे दल के समर्थन पर निर्भर करता है जिसके बिना सरकार का गठन संभव नहीं है। यह प्रणाली शायद ही कभी एक दल के बहुमत का प्रदर्शन कर पाए तथा सरकार का गठन बहुत हद तक व्यवस्था में पार्टियों के बीच के राजनीतिक समीकरणों पर निर्भर करता है। कुछ लोग इस प्रणाली को द्वि–दल प्रणाली और बहुदल प्रणाली के बीच एक परिवर्ती चरण के रूप में मानते हैं। सियारॉफ़ (2003) ने ब्रिटेन में सन् 1970 में लिबर्ल डेमोक्रेटिक पार्टी तथा 1980 के दशक की शुरूआत में कनाडा में न्यू डेमोक्रेटिक पार्टी के उद्भव का हवाला इस तर्क के लिए दिया कि अधिकांश द्वि–दल प्रणालियाँ अब सही मायनों में ढ़ाई दल प्रणालियाँ बन गई हैं।

ढ़ाई दल प्रणाली में 'आधे' का प्रभुत्व है, तीसरा तत्व/दल जो राजनीतिक व्यवस्था में किंगमेकर की भूमिका निभा सकता है। निश्चित रूप से दलों के बीच असमानता बनी रहती है। जैसा कि भूषण (2015) ने समझाया, पहला दल दूसरे दल की तुलना में काफी बड़ा है, और तीसरा दल पहले और दूसरे दल की तुलना में बहुत छोटा है। सियारॉफ (2003) इस तीसरे दल को वह स्थान देता हैं जहाँ वह 'जोड़' या 'पार्श्वभाग' के रूप में कार्य करता है। चूंकि यह तीसरा दल व्यवस्था में अन्य दोनों दलों के साथ समानताएँ

साझा करता है, इसलिए एक 'जोड़' के रूप में यह सरकार के गठन को एक दिशा निर्देशित करता है। इस प्रकार वे सरकार में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। दूसरी ओर, तीसरा दल किसी एक प्रमुख दल के समर्थन व्यवस्था हेतु 'पार्श्वभाग' के रूप में कार्य करता है और सरकार में कोई भूमिका निभा भी सकते हैं अथवा नहीं। उदाहरण के लिए, जर्मनी में फ्री डेमोक्रेटिक पार्टी (एफडीपी) एक जोड़ पार्टी के रूप में कार्य करती है। उसके पास भारी चुनावी समर्थन नहीं होता है (सिर्फ 13.2 प्रतिशत सीटें) और न ही उसे कुलाधिपति पद मिलता है, फिर भी यह जर्मनी में चुनाव परिणामों का निर्धारण करने में सबसे महत्वपूर्ण कारक बना। क्रिसटियन डेमोक्रेटस् (सीडीयू) और सोशल डेमोक्रेटस् (एसडीपी) के गठबंधन के आधार पर; एफडीपी 1949 से लगभग 53 वर्षो में से 41 वर्षों तक सरकार में बनी रही, साथ ही विपक्ष में केवल एक कार्यकाल ही रहा उसका। दूसरी ओर, पुर्तगाल में 1980 के दशक से, नेशनलिस्ट पॉपुलर पार्टी और कम्युनिस्ट पार्टी क्रमशः दो मुख्य दलों सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी (पीएसडी) एवं पीपल्स् पार्टी (सीडीएस) के पार्श्वभाग वाले दल हैं।

'आधे दलों' की उपस्थिति एक बहुसंख्यकवादी की बजाए एक अधिक सहमति वाली राजनीतिक व्यवस्था बनाती है। 'जोड़' या 'पार्श्वभाग' पर मुख्य दलों की निर्भरता से उनकी जवाबदेही की सीमा बढ़ जाती है तथा मुख्य दलों पर लगाम कस जाती है, जो अन्यथा एकल दल बहुमत की स्थिति में पूर्ण अधिकारिता के रूप में कार्य कर सकता है। इसलिए, सरकार के गठन में लोकतांत्रिक प्रक्रिया के लिए ढ़ाई दल प्रणाली एकल दल अथवा द्वि–दल प्रणाली के तुलना में अधिक जिम्मेदार है।

5.2.3 बहुदल प्रणाली

एक बहुदल प्रणाली में तीन या उससे अधिक राजनीतिक दल होते हैं। इसे एक स्थिर या अस्थिर बहुदल प्रणाली के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। नीदरलैंड़, स्विट्ज़रलैंड़ इस प्रणाली के पूर्व के कुछ उदाहरण हैं जबकि फ्रांस और इटली इस प्रणाली के बाद के उदाहरण हैं। स्विट्ज़रलैंड में दल प्रणाली में नौं राजनीतिक दल हैं, जबकि केवल चार दलों को ही बहुमत का समर्थन प्राप्त है। स्विट्ज़रलैंड में सरकार आमतौर पर इन चार प्रमुख दलों के गठबंधन के रूप में बनाई जाती है, जिसमें शेष छोटे दल स्विस फेडरेशन के विभिन्न भागों में गठबंधन बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। 'अस्थिर बहुदल प्रणाली' के सबसे उल्लेखनीय उदाहरण फ्रांस और इटली हैं। वर्ष 1944 से 1958 के दौरान फ्रांस ने कम से कम 26 सरकारों का गठन देखा है। इसी प्रकार वर्ष 1948 से 1975 के बीच इटली ने 38 सरकारें देखीं। इन दोनों देशों में, छोटे दलों ने (फ्रांस में फ्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी तथा इटली में इतालवी कम्युनिस्ट पार्टी) बड़े दलों को शासन से दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, और इसलिए, इटली को गठबंधन पर निर्भर रहना पड़ा, जोकि बढ़ते आंतरिक मतभेदों के कारण अत्यधिक अस्थिर साबित हुआ (हेवुड 2013)। बहुदल प्रणाली को वर्गीकृत करने का एक अन्य तरीका है 'सामान्य/परिसीमित' तथा 'अतिशय' खंडित बहुदल प्रणाली। पहले में तीन से छः संबंधित दल शामिल हो सकते हैं। इस विकेंद्रीकरण में शीर्ष दो दल 80 प्रतिशत से कम सीटों तक सीमित रह जाते हैं। आगे बढ़ने का एकमात्र रास्ता गठबंधन सरकार ही है। अत्यधिक खंड़ित दल प्रणाली में छः से अधिक प्रासंगिक दल हो सकते हैं। मध्यम और छोटे दलों के बीच टकराव के साथ यह प्रणाली तीन या अधिक दलों की कमज़ोर गठबंधन सरकार में परिणामित होती है। ब्राज़ील,

इज़राइल, डेनमार्क, फिनलैंड, लिथुआनिया, नीदरलैंड, भारत तथा इंडोनेशिया में सबसे अधिक खंडित बहुदल प्रणालियाँ थीं (सियारॉफ 2013)।

बहुदल प्रणालियों को 'उदारवादी' और 'ध्रुवीकृत' प्रणालियों के रूप में भी वर्गीकृत किया जा सकता है। उदारवादी बहुदल प्रणालियाँ वैचरिक समानता का प्रदर्शन करती हैं, अर्थात, विभिन्न दलों की विचारधाराओं के बीच का अंतर बहुत कम है (सरतोरी 1976)। यहाँ, मतभेदों या विवादों के मामले में, दलों में समझौता करने की प्रवृति अधिक होती है जिसके परिणामस्वरूप एक अधिक स्थिर एवं मज़बूत सरकार मिलती है। दूसरी ओर, एक ध्रुवीकृत बहुदल प्रणाली में व्यापक एवं मज़बूत वैचारिक मतभेदों वाले दल शामिल होते हैं। यह दलों को बीच का रास्ता अपनाने से राकता है। इस प्रकार की प्रणालियों में, 'दल विरोधी' रूख रखने वाले राजनीतिक दल भी हो सकते हैं, जिसके कारण से विवादों या मतभेदों का समाधान कठिन हो जाता है। उदाहरण के लिए, फ्रांस, इटली और स्पेन की कम्युनिस्ट पार्टियों ने बहुत विवाद पैदा किए जिसक परिणामस्वरूप इन देशों की सरकारों में अस्थिरता पैदा हुई (हेवुड 2013)।

लोकतंत्र को बनाए रखने के लिए एक बहुदल प्रणाली सबसे कुशल प्रणाली है। विभिन्न दलों की उपस्थिति सरकारों के लिए अंतरिक नियंत्रण एवं संतुलन की सक्षम प्रणाली बनाती है जो इसके बदले में अधिक जवाबदेही सुनिश्चित करती है। यह चर्चा और बहस का माहौल बनाती है तथा नीति निर्माण को अधिक संयुक्त रूप में प्रस्तुत करती है। चूंकि बहुदल प्रणाली में गठबंधन सरकारों के बनने की संभावना अधिक रहती है तथा एकल दल के बहुमत प्राप्त करने की सम्भाव्यता कम होती है, यह उस देश के सभी समूहों/खंडों/वर्गों से संबंधित उनके विविध हितों तथा मुद्दों पर सरकार की नीतियों एवं निर्णयों का संबोधन सुनिश्चित करता है। एक बहुदल प्रणाली न केवल सरकार की जवाबदेही सुनिश्चित करती है बल्कि जनमत के लिए एक व्यापक मंच भी तैयार करती है।

अपनी लोकतांत्रिक प्रामाणिकताओं के बावजूद, बहुदल प्रणाली में कुछ कमियाँ हैं। पहली और सबसे महत्वपूर्ण है अस्थिरता जो कि गठबंधन के कारण शासन में पैदा होती हैं। सभी दलों के अलग–अलग हित होते हैं तथा उनके बीच सहयोग और आम सहमति हासिल करना एक मुश्किल कार्य हो सकता है। इसके अतिरिक्त, सर्वसम्मति प्राप्त करने की प्रक्रिया के दौरान, विभिन्न अनाचार और समझौते हो सकते हैं जो देश की पूरी राजनीतिक व्यवस्था को भ्रष्ट कर सकते हैं।

बहुदल प्रणाली में नीति वार्ता तथा कार्यान्वयन की प्रक्रियाओं में देरी भी हो जाती है तथा कभी–कभी वे पटरी पर से भी उतर जाती हैं। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, सभी दलों की सहमति प्राप्त करना कठिन कार्य है जो कि अधिकतर समय सरकार के सुचारू कामकाज को प्रभावित करता है। चूंकि दल सरकार बनाने के लिए अशुद्ध अपवित्र गठबंधनों या समझौतों पर अधिक ध्यान देते हैं, इसलिए स्पष्ट वैचारिक अभिविन्यास की कमी भी बहुदल प्रणाली की कमियों में से एक है। इस प्रकार एक बहुदल प्रणाली हितों की विविधता का प्रतिनिधित्व करने की प्रणाली की तुलना में अधिक से अधिक संख्या प्राप्त करने की प्रणाली बन सकती है।

5.2.4 एक दल प्रणाली

एक दल प्रणाली, जिसे एकल दल व्यवस्था भी कहते हैं, इसका तात्पर्य उस प्रणाली से है जिसमें केवल एक दल मौजूद हो उसे कानूनी रूप से अस्तित्व में रहने की अनुमति हो तथा जो सरकार को नियंत्रित करती हो। हालाँकि, डुर्वगर के अनुसार, एक दल प्रणाली के भी विभिन्न रूप हो सकते हैं। जिसे वे प्रभुत्वशाली दल व्यवस्था या एक दल प्रभुत्व वाली व्यवस्था भी कहते हैं, उसके तहत, कभी–कभी कुछ छोटे दलों को प्रणाली में बने रहने की अनुमति दी जा सकती है किन्तु वे प्रमुख दल के नेतृत्व को स्वीकार करने की शर्त पर ही व्यवस्था में उनकी मौजूदगी स्वीकार होती है। यह प्रणाली आमतौर पर सर्वसत्तावादी देशों में पाई जाती है जहाँ छोटे दलों को सत्ताधारी दल द्वारा या तो कुचल दिया जाता है या संवैधानिक रूप से प्रतिबंधित कर दिया जाता है। इस एक दल प्रणाली के उत्कृष्ट उदाहरण भूतपूर्व सोवियत रूस तथा पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना हैं। चीन की दल प्रणाली में, कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ चाइना (सीपीसी) एकमात्र ऐसा दल है जो व्यवस्था में आठ उन्य दलों के मौजूद होने के बावजूद राज्य पर शासन करने के लिए अधिकृत है। छोटे दलों को न तो चुनाव लड़ने की कानूनी अनुमति है और न ही उन्हें सीपीसी के निर्णयों और नीतियों की आलोचना करने की आज़ादी है।

कुछ लोकतांत्रिक राज्यों में भी एक दल प्रणाली पाई जाती है, विशेष रूप से उन राज्यों में जो अतीत में औपनिवेशिक शासन से गुज़र चुके हैं। इन राज्यों ने अपने उन राष्ट्रीय नेताओं के मार्गदर्शन में अपना राष्ट्र निर्माण शुरू किया जिन्होंने राज्य के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान उनका मार्गदर्शन किया था। इन नए उभरते राज्यों में राजनीतिक दलों का केन्द्र आमतौर पर एक करिश्माई नेता होता है तथा राष्ट्र विकास की विचारधारा उस नेता की विचारधारा से ही ली जाती है। उदाहरण के तौर पर, घाना क्वामे नक्रुमा के नेतृत्व में, तनज़ानिया जूलियस न्येरेरे के नेतृत्व में तथा ज़िम्बाब्वे रॉबर्ट मुगाबे के नेतृत्व में। ये सब एक दल प्रणाली की व्यवस्थाएँ हैं। इस प्रकार की व्यवस्था में राजनीतिक दलों में पूरी तरह से नेतृत्व पर निर्भर होने के कारण से संगठन के स्तर और अनुशासन का अभाव होता है जो कि कम्युनिस्ट एक दल राज्यों में पाया जाता है। जिसके कारण से, लगभग वे सभी विघटित हो गए हैं या अपनी प्रमुख स्थिति खो चुके हैं।

एक दल प्रणाली आमतौर पर सामर्थ्यवान एवं स्थिर सरकारें प्रदान करता है, जा कि कुशल नीति निर्माण एवं कार्यान्वयन के लिए आवश्यक है, लेकिन उनमें कई कमियाँ हैं। एक दल प्रणाली के एक सत्तावादी राज्य में विकसित होने की संभावना बहुत अधिक है। ऐसे राज्य विरोधी स्वरों को जबरदस्ती चुप करा देते हैं। इसलिए, ऐसी प्रणालियाँ दल प्रणाली के कार्य के लिए सही नहीं हो सकती, जो सरकारों और नागरिकों के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करने के लिए बची रहती हैं। यह भी कि, सत्ता और नेतृत्व के हस्तांतरण की प्रक्रिया को सत्ताधारी एक दल द्वारा अपनी सुविधानुसार संशोधित किया जा सकता है जिसके परिणामस्वरूप नेतृत्व और सत्ता या शक्ति का एकाधिकार हो गया है; जो दल प्रणाली की समाज में सत्ता के विकेन्द्रीकरण /विस्तार की एक एजेंसी के रूप में भूमिका को नकार देती है। समकालीन समय में ये प्रणालियाँ चीन, क्यूबा, इरिट्रिया, लाओस, उत्तर कोरिया, सीरिया, तुर्कमेनिस्तान और वियतनाम में देख जा सकती हैं।

5.2.5 प्रभावी दल प्रणाली

इस प्रणाली को प्रायः एक दल प्रणाली के साथ उलझा दिया जाता है, किन्तु दोनों के बीच स्पष्ट अंतर होता है। एक 'प्रभावी' दल में सत्ता के लिए प्रतिस्पर्धा करते कई दल/राजनीतिक समूह निहित हो सकते हैं किन्तु आमतौर पर व्यवस्था के अंदर एक ही प्रमुख दल होता है जिसका प्रभुत्व होता है। जबकि एक दल प्रणाली में अनेक दल नहीं होते और पूरी राजनीतिक व्यवस्था उसी एक दल के नियंत्रण में होती है। हालाँकि प्रमुख प्रभुत्व वाला दल अन्य राजनीतिक दलों के अलग–अलग रूचियों एवं विचारों को समायोजित करता है, और एक दल व्यवस्था आमतौर पर एक सत्तावादी राजनीतिक व्यवस्था में कार्य करती है जहाँ किसी भी प्रकार का विरोध बर्दाश्त नहीं किया जाता।

इस प्रणाली में, एकल दल का अधिपत्य लंबे समय तक बना रहता है क्योंकि यह न केवल संसद में प्रबल रहता है और सरकार को नियंत्रित करता है बल्कि अपना प्रभुत्व भी अहुत समय तक बनाए रखता है। यदि यह बहुमत हासिल नहीं भी कर पाता, तो भी इसमें इतनी क्षमता होती है कि यह अल्पसंख्यक सरकार बनाने या गठबंधन के नेतृत्व कर सके। इसलिए, प्रभुत्व की यह क्षमता बहुमत के चिन्ह तक न पहुँच पाने के बावजूद, इस प्रणाली को 'अपूर्ण दो–दल प्रणाली' से अलग करता है; जहाँ बहुमत प्राप्त करना ही शासन करने का एकमात्र तरीका है और अल्पसंख्यक शासित सरकारें संभव नहीं।

एक दल प्रभुत्व प्रणाली की उपस्थिति आमतौर पर तानाशाही के रूप में देखी जाती है जहाँ विपक्षी दलों को कार्य करने और राजनीतिक व्यवस्था में भाग लेने से रोका जाता है। उदाहरण के लिए, चाड एवं कैमरून ऐसे कुछ मामले हैं जहाँ तानाशाही ने अन्य दलों की भागीदारी को निरूत्साहित किया। तथापि, लोकतंत्र में भी इस प्रणाली के साक्ष्य देखे जा सकते हैं, जैसे कि बोत्सवाना में बोत्सवाना डेमोक्रेटिक पार्टी में सन् 1996 से, तथा भारत में कांग्रेस पार्टी में सन् 1947–1977 तक में। इस प्रणाली का एक और उत्कृष्ट उदाहरण है जापान, जहाँ इसकी सबसे बड़ी पार्टी यानी लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी (एलडीपी) ने सन् 2009 तक 54 वर्षों तक दल व्यवस्था पर अपना दबदबा बनाए रखा। इन वर्षों में, इसने विपक्ष की भूमिका में बहुत कम समय तक कार्य किया (सन् 1993–1994) बाकी लगभग पूरी अवधि में राजनीतिक व्यवस्था को अपने नियंत्रण में रखा। अन्य उदाहरणों में शामिल हैं, स्वीडन जहाँ सोशल डेमोक्रेट्स 1932–1976 तक सबसे आगे रहने में कामयाब रहे, इटली में क्रिश्चन डेमोक्रेट्स का प्रभुत्व (1946–1983), इज़राइल पर मपई/लेबर पार्टी (1948–1977), नामीबिया पर साउथ वेस्ट अफ्रीका पीपल्स् ऑरगनाइज़ेशन (सन् 1991 से), तथा दक्षिणी अफ्रीका में सन् 1994 से अफ्रीकी नैशनल कांग्रेस का दबदबा बना हुआ है।

एक ओर प्रभावी एक दल व्यवस्था स्थिर, सामर्थ्यवान तथा पूर्वानुमेय सरकार देती है; वहीं दूसरी ओर, यह प्रणाली की लोकतांत्रिक साख को कमज़ोर करती है, क्योंकि शासन की लंबी प्रणाली के परिणामस्वरूप अक्सर दल के अंदर भ्रष्टाचार बढ़ जाता है और सत्ता का केन्द्रिकरण ऊपर के स्तर तक हो जाता है। जैसा कि हेवुड (2013 : 239) ने उल्लेख किया कि, प्रभावी दल प्रणाली "सत्ता में होने पर राज्य और दल के बीच के महत्वपूर्ण संवैधानिक भेद को मिटा देती है। जब सरकारें आना और जाना बंद कर देती हैं, राजनीतिकरण की एक कपटी प्रक्रिया जन्म लेती है जिसके माध्यम से राज्य के अधिकारी और संस्थान प्रभावी दल की वैचारिक एवं राजनीतिक प्राथमिकताओं के साथ तालमेल बिठाते हैं।" इस प्रणाली की एक और कमी एक सबल एवं प्रभावी विपक्ष की अनुपस्थिति

है। जबकि प्रभावी दल सत्ता में रहता है, यह सुनिश्चित करता है कि उसके अधिकार को चुनौती न दी जाए और इसलिए, किसी भी प्रकार के विरोध या प्रतिरोध को हतोत्साहित करने का हर संभव प्रयास करता है। इसलिए प्रभावी एक दल प्रणाली लोकतंत्र के लिए हानिकारक हो सकती है।

5.2.6 संस्थागत बनाम गैर–संस्थागत दल प्रणाली

ऊपर वर्णित दल प्रणालियों की विभिन्न श्रेणियाँ किसी भी लोकतंत्र में स्थायी व्यवस्था नहीं हो सकती। विभिन्न देशों में यह देखा गया है कि दल प्रणालियों की निरंतरता की सीमा तथा मुख्य दलों की अपनी स्थिति बनाए रखना की क्षमता स्थिर नहीं है और समय के साथ बदलता रहता है। इस घटना को पहली बार लैटिन अमरीका के संदर्भ में सन् 1995 में मेनवारिंग एवं स्कली ने 'पार्टी सिस्टम इंस्टीट्यूशनलाइज़ेशन' के रूप में अवधारणाबद्ध किया था। तद्नुसार, दल प्रणाली को 'संस्थागत' या 'गैर–संस्थागत दल प्रणाली के रूप में स्थिरता एवं पूर्वानुमेयता के आधार पर वर्गीकृत किया गया, व्यवस्था द्वारा अनुरक्षित संस्थागत दल प्रणाली शासन की प्रक्रिया को सुगम बनाती है; क्योंकि उनमें अस्थिरता कम होती है तथा उसमें स्थायी दल होते हैं जो समाज में गहराई से जड़े जमाते हैं। वे न केवल अधिक से अधिक आर्थिक विकास को बढ़ावा देते हैं, बल्कि वे बेहतर सार्वजनिक नीतियाँ भी बनाते हैं। एक संस्थागत दल प्रणाली अधिक जवाबदेह होती है क्योंकि यह जनता की मांगों को सुस्पष्ट करने और एकत्र करने में बेहतर होती है। यह बेहतर दल अनुशासन प्रदर्शित करता है, जिससे विधायिका के लिए कार्य करना आसान हो जाता है तथा इससे गतिरोध को हल करने की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं एवं एक अपरिपक्व व्यवस्था की तुलना में गतिहीनता को कम करता है (सियारॉफ 2013)।

गैर–संस्थागत दल को अक्सर पार्टी सिस्टम का पतन या पार्टी पतन के रूप में जाना जाता है – जिसे 'अपरिपक्व दल प्रणाली' के रूप में पहचाना जाता है (मेनवारिंग तथा स्कली 1950)। यह प्रणाली अधिकतर तीसरी लहर वाले लोकतंत्रों में देखी जाती है (खंड़ 4 देखें)। हाल ही में हुए घटनाक्रम संस्थागत प्रणालियों की तुलना में गैर–संस्थागत प्रणालियों को अधिक स्पष्ट करते हैं। उदाहरण के लिए, पापुआ न्यू गिनी को एक अपरिपक्व दल व्यवस्था के रूप में वर्गीकृत किया गया है क्योंकि हाल ही तक, कोई भी प्रधानमंत्री संसदीय कार्यकाल को पूर्ण करने में सक्षम नहीं हो पाया है। एक अन्य उदाहरण है, पेरू जहाँ नेताओं और राजनेताओं ने दलों के साथ न जुड़कर या बहुत कम संख्या में जुड़ने के साथ मुक्त प्रतिनिधी के रूप में कार्य करके दल–रहित रणनीति अपनाई– जिससे पेरू एक बिना दलों का लोकतंत्र राज्य बन गया (मेनवारिंग 2016)।

5.3 एक व्यवस्था में दलों को प्रभावित करने वाले कारक

दल प्रणालियाँ, (1) चुनावी प्रणाली; (2) सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता; (3) संवैधानिक संरचना;(4) अंतरराष्ट्रीय स्वायत्ता की अवस्था; में होने वाले बदलावों एवं सुधारों के अनुसार विकसित होती है (सरतोरी 1976: 291)। काफी हद तक एक देश की दल प्रणाली उसके द्वारा चुनी गई चुनावी प्रणाली के अनुसार आकार लेती है। चुनावी प्रणाली प्रतिनिधित्व के मानदंडों को परिभाषित करती है तथा ऐसे कई तरीके हैं जिन्हें सामाजिक तथा राजनीतिक स्वरूप के अनुसार लोकतंत्र प्रणाली का चुनाव करता है। उदाहरणार्थ,

एकल–सदस्यी बहुमत पर आधारित चुनावी प्रणाली एक कम–खंडित दल प्रणाली को जन्म देती है क्योंकि यह उस एकल दल को स्पष्ट बहुमत प्रदान करती है जिसके उम्मीदवारों को अधिकतम मत मिले हैं। दूसरी ओर, अनुपातिक प्रतिनिधिक (पी. आर.) प्रणालियाँ अत्यधिक खंडित प्रणालियों के लिए अधिक सहायक है। उदाहरणार्थ, सन् 1990 के दशक के दौरान, 73 लोकतांत्रिक देशों का आकलन करने से पता चला कि अनुपातिक प्रतिनिधिक प्रणाली वाले देशों में ज्यादातर बहुदल प्रणाली थी, जबकि गैर–पीआर प्रणाली वाले देशों का झुकाव एक प्रभावी दल प्रणाली या द्वि–पक्षीय प्रणाली की ओर अधिक था। (करूपाविसिस्, अलगिस् इसोदा एट अल 2013)। चुनावी प्रणाली, दल प्रणालियों की प्रतिस्पर्धात्मक भावना को भी परिभाषित करती है। उदाहरणार्थ, यदि कोई देश अपने चुनावी समर्थन में बार–बार बदलाव महसूस करता है, तो उसकी जो भी दल प्रणाली होगी, वह अत्यधिक प्रतिस्पर्धिक होगी। चूंकि, चुनावी समर्थन में बदलाव दलों के प्रर्दशन को प्रभावित करते हैं, इसलिए राजनीतिक नेताओं द्वारा और अधिक प्रयास किए जाते हैं तथा चुनाव के बाद भी अस्थिरता निश्चित होती है क्योंकि 'राजनीतिक सौदेबाज़ी' बढ़ जाती है। जनता की लामबंदी या संघटन पर ज्यादा ज़ोर होता है तथा बदले में, एक अत्यधिक शिक्षाप्रद और जागरूक राजनीतिक आबादी उसका परिणाम होता है। दल प्रणाली की स्थिति को प्रभावित करने वाला एक अन्य कारण उस देश की समाजिक और सांस्कृतिक विविधता होती है। उदाहरणार्थ, विविध समाज में एक दल प्रणाली के उभरने की संभावना कम होती है क्योंकि ऐसी प्रणाली सामाजिक और सांस्कृतिक दरारों को दूर करने में सक्षम नहीं होती। एक बहुदल प्रणाली या ढाई दल प्रणाली के समाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में व्यापक दरारों और मतभेदों के साथ उभरने की अधिक संभावना होती है। दूसरी ओर, कम विविधता वाले समाज में एक दल प्रणाली या प्रभावी दल प्रणाली के उभरने की अधिक गुंजाइश होती है।

इसके अतिरिक्त, किसी देश का संवैधानिक ढांचा उसकी राजनीतिक व्यवस्था और उसके अनुसार उसकी दल व्यवस्था को आकार दे सकता है। यदि संविधान व्यक्तियों के राजनीतिक और नागरिक अधिकारों को प्रतिबंधित करता है, तो एक अत्यधिक खंडित सामाजिक संरचना कभी भी एक बहुदल प्रणाली उत्पन्न नहीं कर सकती। इसके अतिरिक्त, संविधान में प्रस्तावित वैचारिक अनुकूलन और झुकाव भी दल प्रणाली को आकार दे सकता है। इस प्रकार, यदि संवैधानिक प्रावधानों का उद्देश्य एक साम्यवादी समाज की स्थापना करना है, तो यह वामपंथी दल को एक दल प्रणाली या प्रभावी दल प्रणाली स्थापित करने के लिए सशक्त करता है।

दल परिर्वतन, मामूली परिर्वतन से लेकर इसकी मूल विशेषताओं में परिवर्तन तक कई प्रकार के रूप ले सकता है। दल प्रणाली में परिर्वतन चार तरीकों से अभिव्यक्त किया जा सकता हैः 1) आकस्मिक परिर्वतन, 2) सीमित परिर्वतन, 3) सामान्य परिर्वतन, और 4) व्यवस्था का अदल–बदल। आकस्मिक परिर्वतन आमतौर पर दल प्रणाली को संचालित करने के तरीके में अस्थायी विकृतियाँ होते हैं, तथा वे कुछ नए छोटे दलों की स्थापना से संबंधित हो सकते हैं। सीमित परिर्वतन लंबे समय तक के लिए या स्थायी भी हो सकते है, लेकिन यह परिर्वतन या तो एक क्षेत्र तक सीमित होते हैं या किसी ऐसे दल के आगमन तक सीमित होते हैं जो दूसरे की जगह लेता है। सामान्य परिर्वतन अधिक गंभीर और कई पहलुओं से संबंधित होते हैं, अर्थात यह तथ्य कि परिर्वतन बहुआयामी और लंबे होते हैं तथा वे प्रणाली की मुख्य विशेषताओं से संबंधित भी होते हैं। प्रणाली परिर्वतन के अधिकांश

पहलू, यानी दल संरचना, इसकी ताकत, गठबंधन और नेतृत्व में एक उत्तेजक परिर्वतन को दर्शाता है। लंबी अवधि के सामाजिक और आर्थिक विकास के कारण दल प्रणाली भी अपना प्रारूप बदलती है। सांस्कृतिक परिर्वतन के साथ, दल संबद्धता के संरेखण और पुननिर्माण की प्रक्रिया संरचनात्मक जनसांख्यिकीय परिर्वतनों के परिणामस्वरूप होती है (करूपाविसिस्, अलगिस् इसोदा एट अल 2013)।

21वीं सदी में, दुनिया भर में दल और दल प्रणाली वैश्वीकरण और लोकतांत्रीकरण की शक्तियों की ओर से महत्वपुर्ण चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। इनमें बढ़ते बाज़ारीकरण, मुद्दे पर आधारित राजनीति तथा सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों का प्रसार शामिल हैं। कई लोगों का तर्क है कि ये घटनाक्रम मतदाताओं और राजनीतिक दलों के बंधन को कमज़ोर कर रहे हैं और विखंडन को बढ़ा रहे हैं। दूसरों का कहना है कि राजनीतिक दल और दल प्रणालियाँ बदल रहे हैं तथा नए विकास के लिए सामायोजित भी कर रहे हैं। वे उत्पादक दलों के उदय की ओर इशारा करते हैं (जो अक्सर राज्य के संसाधनों के साथ–साथ व्यवसाय की स्थिरता और उनके नेताओं की निरंतरता के लिए एक दूसरे के साथ सहयोग करते हैं) और नई वास्तविकताओं के लिए दलों और दल प्रणालियों के परिर्वतन और समायोजन के प्रमाण स्वरूप केंद्रीकृत और तकनीकी रूप से कुशल दल संचालन और अभियान चलाने के लिए पेशेवरों पर दलों का विश्वास बढ़ रहा है।

बोध प्रश्न 2

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए हुए स्थान का प्रयोग करें।

ii) खंड के अंत में दिए गए उत्तर से अपने उत्तर की जांच करें।

1) प्रभावी दल प्रणाली और एक दल प्रणाली में अंतर स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) बहुदल प्रणाली की मुख्य विशेषताएं लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

5.4 सारांश

दल एवं दल प्रणालियाँ आधुनिक प्रतिनिधि लोकतंत्र के घटक तत्व बन गए हैं। वर्तमान में, वे प्रतिनिधि लोकतंत्र की सबसे प्रत्यक्ष संस्थाएँ हैं। वे सभी प्रतिनिधि लोकतंत्रों में राजनीतिक नेतृत्व और मतदाताओं के बीच, राजनीतिक अभिजात वर्ग एवं नागरिक समाज

के बीच, शासक एवं शासित के बीच संपर्क जोड़ने वाली संस्थाएँ हैं। अधिकांश राजनीतिक प्रणालियों में, कई राजनीतिक दल होते हैं, भले ही कुछ एकल दलों द्वारा संचालित हों। अपने सत्ता के प्रतिस्पर्धी संघर्ष में, दल एक –दूसरे से बातचीत करते हैं और जवाब देते हैं। दल शब्द राजनीतिक दलों के बीच बातचीत के लिए संरचनात्मक एवं संस्थागत व्यवस्था को संदर्भित करता है। जैसा कि हमने देखा, कि ऐसे कई तरीके हैं जिनमें हम दल प्रणालियों को वर्गीकृत कर सकते हैं। हालांकि, मौरिस डुर्वरगर, जन ब्लोंडेल तथा जियोवानी सरतोरी द्वारा विकसित अध्ययन कार्य स्थायी है। इस इकाई में हमने द्वि–दल प्रणाली, ढ़ाई दल प्रणाली, बहुदल प्रणाली, एकल दल व्यवस्था तथा प्रभावी दल प्रणाली का निरीक्षण परीक्षण किया है, जिसमें उनकी महत्वपूर्ण विशेषताएँ तथा प्रकार सामने आए। हमने संस्थागत बनाम गैर–संस्थागत दल प्रणाली की भी जाँच की। दल प्रणाली में दलों की संख्या तथा आकार को प्रभावित करने वाले कई कारक हैं। देश की संवैधानिक संरचना, सामाजिक–सांस्कृतिक विविधता की अवस्था, तथा चुनावी प्रतिनिधि प्रणाली के प्रकार राजनीतिक व्यवस्था के ऐसे कुछ पहलु हैं जो दल प्रणाली को आकार देते हैं। जैसा कि हमने देखा, दल प्रणाली एक गतिशील अवधारणा है जिसकी प्रवृत्ति तब–तब बदलने की है जब से कारक क्रमिक या अचानक परिवर्तन से गुज़रते हैं।

5.5 संदर्भ

भूषण, वी. (2018). कम्पैरेटिव पॉलिटिक्स चेन्नई : एटलांटिक.

ब्लोंडेल, जीन. (1969). एन इन्ट्रोडक्शन टू कम्पैरेटिव गवर्नमेंट, लंडन : वेयडेनफील्ड़ एंड निकोल्सन्.

क्लार्क, विलियम रॉबर्टस्. गाल्डर एट.अल. (2013). प्रिंसिपलस् ऑफ कम्पैरेटिव पॉलिटिक्स्. यूएसए : सीक्यू प्रेस.

डुरवर्गर, मौरिस. (1954). पॉलिटिकल पार्टीज़. लंडन : मेथ्युन एंड कंपनी लिमिटिड.

ह्येवुड, ए.(2013). पॉलिटिक्स. लंडन : पॉलग्रेव मैक्मिलन.

कित्चैल्ट, हर्बर्ट.(2011). 'पार्टी सिस्टम्स्' इन राबर्ट ई.गूडिन (एड.) द औंसफोर्ड हैंडबुक ऑफ पॉलिटिकल साइंस. लंडन : ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस.

ला पालोमाब्रा, जोसफ एंड वीनर, मायरॉन. (1966). पॉलिटिकल पार्टीज़ एंड पॉलिटिकल डेवलेपमेंट. प्रिंसटन, न्यू जर्सी : प्रिंसटन युनिवर्सिटी प्रेस.

करूपाविसिस्, अलगिस् इसोदा, व्यताउतास्, विसनोरास्, तोमस् (2013). इंट्रोडक्शन टु कम्पैरेटिव पॅलिटिक्स. काउनास : युरोपियन सांशल फंड (ईएसएफ) एंड दी गवर्नमेंट ऑफ दी रिपब्लिक ऑफ लिथुआनिआ.

माइर, पीटर. (2002). 'कम्पेयरिंग पार्टी सिस्टमस्', इन लॉरेंस् ले्ड्यूस्, रिचर्ड हज. नेमी पीप्पा (एड.). कम्पेयरिंग डेमोक्रेसीज़ 2: न्यू चैलेंजिज़ इन द स्टडी ऑफ इलैक्शनस् एंड वोटिंग. नोरिस् एडिशन्. लंडनः सेज.

मेनवारिंग, एस. (2016). पार्टी सिस्टम इन्स्टिट्यूशनलाइज़ेशन, पार्टी कोलैप्स् एंड पार्टी बिल्ड़िंग. गवर्नमेंट एंड़ ओपोज़ीशन. 51(4), 691–716. डीओआई : 10.1017/जीओवी.2016.21

नोवक, एम. (2015). कम्पीटीटिव पार्टी सिस्टस : वेयर डू डुरवर्गर एंड सरतोरी डाइवर्ज? *त्मअनम तिंदप्रंपेम कम Science Politique*, 3(3), 451-471. https://doi.org/10.3917/rfsp.653.0451

सरतोरी, जी. (1976). पार्टीज़ एंड पार्टी सिस्टमस् : अ फ्रेमवर्क फॉर एनालिसिस्. यूके : कैम्ब्रिज युनिवर्सिटि प्रेस.

सियारॉफ, ए. (2013). कम्पेयरिंग पालिटिकल रिजीमस् : अ थेमैटिक इन्ट्रोडक्शन टू कम्पैरेटिव पॉलिटिक्स् थर्ड एडिशन, कैनेडा : युनिवर्सिटि ऑफ टोरोन्टो प्रेस.

5.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न – 1

1) दल प्रणाली दलों के बीच एक प्रतिस्पर्धात्मक परस्पर क्रिया है जिसकी कल्पना संवादात्मक संरचनाओं की एक श्रेणी के रूप में की जाती है।

2) सरतोरी ने दल प्रणालियों के वर्गीकरण में नए तत्वों को शामिल किया। उन्होंने दल प्रणाली की पहचान के लिए आवश्यक संघटक के रूप में ध्रुवीकरण की अवस्था को शामिल किया। इससे बहुदल प्रणालियों की स्थिरता या अस्थिरता के कारण जानने को मिले।

बोध प्रश्न – 2

1) प्रभावी दल प्रणाली में सत्ता के लिए प्रतिस्पर्धा करने वाले कई दल/राजनीतिक समूह होते हैं, किन्तु प्रभावी एक ही प्रमुख दल होता है। जबकि, एक दल प्रणाली में अधिक दल नहीं होते एवं संपूर्ण राजनीतिक व्यवस्था उसी एक दल के नियंत्रण में होती है। प्रभावी दल, विभिन्न राजनीतिक दलों के अलग–अलग हितों तथा विचारों को समायोजित करता है, जबकि एक दल प्रणाली में एक सत्तावादी राजनीतिक व्यवस्था में कार्य करता है और किसी प्रकार का विरोध बर्दाश्त नहीं किया जाता है।

2) बहुदल प्रणाली का चरित्र–चित्रण इस प्रकार किया जा सकता हैः

दो से अधिक दलों के बीच प्रतिस्पर्धा,

गठबंधन सरकार की अधिक संभावनाएँ

एक दल सरकार की कम संभावना,

छोटे दलों द्वारा भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा सकती है,

चुनावी मतों के बंटवारे के लिए कोई निश्चित समीकरण नहीं है,

सरकार पर नियंत्रण और संतुलन कुशल प्रणाली बना सकता है,

विविध प्रकार की अभिव्यक्तियों एवं विचारों के लिए पर्याप्त प्रतिनिधित्व,

वाद–विवाद, चर्चा तथा समझौता सरकार बनाने के साथ ही नीति निर्माण के मार्गदर्शक सि़द्धांत बने हुए हैं,

मतदाता को अपनी सरकार चुनने के लिए पर्याप्त विकल्प प्रदान करता है,

विविध समूहों एवं विचारों आदि के साथ एक विविध समाज के लिए सबसे उपयुक्त प्रणाली है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई–6 दबाव समूह*

संरचना

6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 दबाव समूहों की परिभाषा

6.3 दबाव समूहों की उत्पत्ति

6.4 दबाव समूह और अन्य सामाजिक समूह

- 6.4.1 दबाव समूह और हित समूह
- 6.4.2 दबाव समूह और राजनीतिक दल
- 6.4.3 दबाव समूह और नागरिक समाज संगठन

6.5 दबाव समूहों की विशेषताएँ

6.6 दबाव समूहों का वर्गीकरण

- 6.6.1 संस्थागत दबाव समूह
- 6.6.2 सामुदायिक दबाव समूह
- 6.6.3 गैर–सामुदायिक दबाव समूह
- 6.6.4 चमत्कारिक या प्रदर्शनात्मक दबाव समूह

6.7 दबाव समूहों की पद्धतियाँ और युक्तियाँ

- 6.7.1 लॉबिंग (पक्ष जुटाव)
- 6.7.2 जन मत का निर्माण
- 6.7.3 प्रोपेगेंडा (अधिप्रचार) और पब्लिसिटी (प्रचार)
- 6.7.4 हडताल और आन्दोलन

6.8 आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था में प्रभाव समूह

6.9 सारांश

6.10 संदर्भ

6.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

*डॉ. किशोरचन्द नौंइगथम, कंसन्लटेन्ट,राजनीति विज्ञान संकाय,सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली

6.0 उद्देश्य

जैसा कि हमने पिछली इकाई में देखा, एक लोकतंत्र में राजनीतिक दल नागरिकों और सरकार के बीच महत्वपूर्ण कड़ी का काम करते हैं। दबाव समूह भी, जो इस इकाई का विषय हैं, इसी प्रकार की भूमिका निभाते हैं और नीति–प्रक्रिया के प्रति योगदान देते हैं। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप निम्नलिखित में सक्षम होंगेः

- दबाव समूहों के अर्थ और विशेषताओं की व्याख्या करने में
- दबाव समूहों और राजनीतिक दलों, हित समूहों, नागरिक समाज के बीच अंतर करने में
- दबाव समूहों का वर्गीकरण करना
- दबाव समूहों द्वारा प्रयोग किए जाने वाली पद्धतियों, रणनीतियों और तकनीकों का वर्णन
- लोकतांत्रिक राजनीति में दबाव समूहों की भूमिका की व्याख्या।

6.1 प्रस्तावना

हम साधारणतया आधुनिकीकरण को इस व्यापक विश्वास से जुड़ा हुआ मानते हैं कि जीवन की परिस्थितियों में मानव क्रिया द्वारा बदलाव लाया जा सकता है। परन्तु आधुनिकीकरण का संबंध आर्थिक और सामाजिक परिवर्तनों से भी है, जैसे औद्योगीकरण, शहरीकरण, आधुनिक शिक्षा, जन संचार का फैलाव इत्यादि। इन परिवर्तनों के कारण जीवन की परिस्थितियों में विविधता की वृद्धि होती है जिसके फलस्वरूप भारी संख्या में विशेष हित समूहों का निर्माण होता है। अधिकांश लोकतंत्र ऐसे विशेष हित समूहों को अपनी आवश्यकताओं को अभिव्यक्त करने का क्षेत्र प्रदान करते हैं। सामान्य रुप से 'हित समूह' या 'दबाव समूह' के नाम से पहचाने जाने वाले ये समूह सरकार और अन्य राज्य उपकरणों पर दबाव के द्वारा, अपने सामूहिक हितों की रक्षा या उन्हें आगे बढ़ाने और अपने लिए अनुकूल लोकनीति के परिणाम प्राप्त करने का भी प्रयास करते हैं। व्यक्तियों को समूहों में संगठित करने और फिर उन्हें राजनीतिक प्रणाली के साथ जोडने के द्वारा ऐसे समूह राजनीतिक प्रणाली में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने लगे हैं। इस अर्थ में, दबाव समूह एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में सरकार और शासितों के बीच मध्यस्थता करने वाली संस्थाओं के रुप में कार्य करते हैं।

6.2 दबाव समूहों की परिभाषा

'दबाव समूह' को एक सर्वमान्य परिभाषा में परिभाषित करने का कार्य कठिन है। दबाव समूहों की निम्नलिखित परिभाषाओं पर विचार कीजिएः

- संगठित समूह जिनके पास औपचारिक संरचना और वास्तविक साझे हित होते हैं जहाँ तक कि वे सार्वजनिक निकायों के निर्णयों को प्रभावित करते हैं (डब्ल्यू. जे. एम. मेकेन्जी)

- संगठन (जो). सार्वजनिक निकायों की नीति को अपनी चुनी हुई दिशा में प्रभावित करने का प्रयास हैं, यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से देश के शासन की जिम्मेदारी लेने के लिए स्वयं कभी तैयार नहीं होते (सैम्युल फाइनर)
- 'एक साझे हित, विश्वास, क्रिया या उद्देश्य द्वारा जुड़े व्यक्तियों का एक संघ है जो दूसरे समूहों की तुलना में अनुकूल नीतियों, विधि निर्माण और परिस्थितियों के रूप में सत्ता के अनुमोदन और सहयोग की प्राप्ति द्वारा प्रयास हैं (पीटर शिपली)
- 'संगठन जो सार्वजनिक पद की जिम्मेदारी को स्वीकार करने के लिए तैयार न होते हुए, सरकारी नीति को प्रभावित करने का प्रयास करते हैं' (एन. सी. हंट)

अंतर के बावजुद, ये परिभाषाएँ स्पष्ट कर देती हैं कि दबाव समूह स्वयंसेवी सामाजिक समूह होते हैं जिनकी विशेषता प्रेरक सक्रियता है जिसके माध्यम से वे उस परिवर्तन को लाना चाहते हैं जिसे वे वांछनीय समझते हैं या अवांछनीय परिवर्तन को रोकना चाहते हैं। इनकी सक्रियता, जिसे अक्सर 'दबाव राजनीति' का नाम दिया जाता हैं का संबंध सरकार और अन्य राज्य उपकरणों, जैसे विधानपालिकाओं, कार्यपालिकाओं या निर्णय–प्रणाली और लोक नीतियों के कार्यान्वयन में जिम्मेदार पदों पर कार्यरत व्यक्तियों को विभिन्न तरीकों से प्रभावित करने से होता है।

हाल में, दबाव समूह पर्यावरण संरक्षण, भ्रष्टाचार, मानव अधिकार, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार इत्यादि मुद्दों से संबंधित सामाजिक आन्दोलनों के रूप में भी उभरे हैं। उदाहरण के लिए, नर्मदा बचाओं आन्दोलन (एन बी ए) या इंडिया अगेन्स्ट करपशन (भ्रष्टाचार के विरूद्ध भारत) जैसे समूह पर्यावरण संरक्षण और भ्रष्टाचार जैसे मुद्दों पर क्रमशः जन चेतना का प्रचार करते हुए नीति के एक बेहतर परिणाम के लिए सरकार पर दबाव डालते हैं।

दि वर्ल्ड सोशल फोरम

दि वर्ल्ड सोशल फोरम (डब्ल्यू एस एफ) दुनिया भर के विभिन्न नागरिक समाज समूहों, गैर–सरकारी संगठनों, किसानों, बुद्धिजीवियों, महिलाओं, युवाओं आदि के समूहों का एक सामूहिक एकजुटता मंच है जिसका लक्ष्य वैश्वीकरण के दुष्प्रभावों की निंदा करना और एक बेहतर विश्व की स्थापना की दिशा में काम करना है। इस समूह ने अपने वार्षिक मंच का आयोजन पहली बार 2001 में ब्राजील के पोर्तो अलेग्र में किया। तब से यह मंच विश्व के विभिन्न हिस्सों में अपने वैश्वीकरण विरोधी अभियानों का आयोजन करता है। तत्पश्चात् यह इकॉनोमिक फोरम की नव–उदारवादी आर्थिक नीतियों की निंदा करते हुए उसे चुनौती देने वाले अथवा उसके विकल्प के रूप में उभर कर आया। नव–उदारवाद द्वारा संचालित और विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यू टी ओ), अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आई एम एफ) जैसी वैश्विक वित्तीय संस्थाओं और अन्य बहुराष्ट्रीय निगमों द्वारा रक्षित वैश्वीकरण के अपने विरोध के लिए डब्ल्यू एस एफ प्रख्यात है।

दबाव समूह आकार और प्रभाव तथा साथ ही साथ क्रिया के क्षेत्र की दृष्टि से भिन्न होते हैं। कुछ तुलनात्मक दृष्टि से छोटे होते हैं, अत्यधिक विशिष्ट हितों के आधार पर निर्मित और स्थांनीय या आंतरिक स्तर पर क्रियान्वित होते हैं, जबकि अन्य दबाव समूह अत्यंत विशाल और शक्तिशाली होते हैं जिनमें से कुछ राष्ट्रीय सीमाओं पार भी क्रियान्वित होते हैं। उदाहरण के लिए, कनफेडेरेशन ऑफ फ्री ट्रेड यूनियन, काऊंसिल ऑफ यूरोपियन फेडेरेशन

ऑफ इंडस्ट्री, अमनेस्टी इंटरनैशनल, ऐंटी–अपार्थइड मूवमेंट, ऑक्सफैम और फैंड्स ऑफ अर्थ कुछ ऐसे समूह हैं जो राष्ट्रीय सीमाओं के आर–पार क्रियान्वित हैं। इसके अतिरिक्त, नागरिक समाजों, वकालत समूहों और विभिन्न देशों के सामाजिक आन्दोलनों द्वारा निर्मित वर्ल्ड सोशल फोरम (डब्ल्यू एस एफ) जैसे सामूहिक समूह भी हैं परन्तु ये वैश्विक स्तर पर क्रियाशील होते हैं। इस प्रकार, उनका जो भी आकार, बल और कारवाई का क्षेत्र हो, दबाव समूह समाज और राजनीति में एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाने लगे हैं और उन्हें आधुनिक राजनीतिक प्रणाली का एक अत्यावश्यक अवयव माना जाता है।

6.3 दबाव समूहों की उत्पत्ति

प्राचीन यूनानी दार्शनिक अरस्तू का उनकी पुस्तक 'पॉललिटिक्स' में प्रसिद्ध कथन है, 'मनुष्य स्वभाव से एक सामाजिक प्रणी है।' अरस्तू के इस विचार का अर्थ ये है कि मनुष्य अकेला नहीं रह सकता और एक सामाजिक और राजनीतिक जीवन जीने के लिए मनुष्य दूसरों के साथ संबंध स्थापित करते हैं। मनुष्यों का ये व्यवहार उन्हें जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में सामाजिक समूहों के निर्माण के लिए उत्प्रेरित करता है। अतः जैसा कि अनेक विद्वानों ने सुझाव दिया है, मानव समाज के संगठन के प्रारंभ के समय से समाज में ऐसे समूह थे जिनका स्वरूप और क्रियाकलाप उनसे मिलते–जुलते हैं जिन्हें हम आज दबाव समूहों के रूप में पहचानते हैं। इस संबंध में, 'समूहों' और 'समूह राजनीति' को मानव समाज के जितना पुरातन माना जा सकता है। समाज के विभिन्न भागों से जुड़े लोग, चाहे वह धर्म, जाति, नृजातीयता, व्यवसाय, मजदूर संघ, किसान ही क्यों न हो, साथ में आए और अपने हितों को आगे बढ़ाने के लिए, स्वेच्छा से अपने आप को संगठित किया।

18 वीं सदी के उत्तरार्ध में, विशेष रूप से अमेरिकी और फ्राँसिसी क्राँतियों के पश्चात, दबाव समूहों को आधुनिक युग में ख्याति प्राप्त हुई। लोकतांत्रिक अधिकारों, विचारों और मूल्यों के प्रसार के फलस्वरूप दबाव समूहों की संख्या में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई। नए दबाव समूहों में प्रमुख वे हैं जो अल्पसंख्यकों और महिलाओं से जुड़े हैं। ये सामाजिक और राजनीतिक अधिकारों की माँग करने के लिए साथ में आए हैं ताकि ये सुनिश्चित किया जा सके कि उनका दमन न हो। उदाहरण के लिए, दास व्यापार विरोध करने के लिए, 1787 में ब्रिटेन में अबालिशन सोसाइटी की स्थापना की गई। इसी प्रकार, एक विश्वव्यापी नारी मताधिकार आन्दोलन के प्रयास के लक्ष्य से 1866 में फ्राँस में दि सोसाइटी फॉर विमेन्स राइट्स की स्थापना की गई। अतः, 19 वीं सदी के अंत तक, व्यापार समूहों, मजदूर संघों इत्यादि के हितों का दावा करने वाले अनेक ऐसे समूह अधिकांश औद्योगिक समाजों में परिचालित हो चुके थे।

दबाव समूहों द्वारा लोकतांत्रिक राजनीति में ख्याति प्राप्त करने के बावजूद, राजनीति विज्ञान के विषय ने राजनीतिक प्रक्रियाओं में उनकी भूमिका और प्रभाव की ओर शायद ही कोई ध्यान दिया था। एक अमेरिकी सामाजिक वैज्ञानिक, जिन्हें ग्रूप थियोरी का संस्थापक माना जाता है, आर्थर एफ. बेंटली ने 1908 में लिखा कि केवल सामूहिक गतिविधियों के विश्लेषण के माध्यम से सरकार के बारे में वास्तविक ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। परन्तु, बीसवीं सदी के मध्य में जाकर समूह की राजनीति के अध्ययन ने राजनीतिक वैज्ञानिकों को आकर्षित करना प्रारंभ किया। राजनीति के अध्ययन में समूह केंद्रित उपागम

के पथ प्रदर्शक हैं डेविड बी. ट्रमैन, अर्ल लेथम, डब्ल्यू. जे. एम. मेकेंजी, एस. ई. फाइनर और जोसफ लायालोमबस।

6.4 दबाव समूह तथा अन्य सामाजिक समूह

ये सरलता से कल्पना की जा सकती है कि एक राजनीतिक प्रणाली में अनेक प्रकार के समूह हो सकते हैं जो संगठित और संसक्त हो सकते हैं जैसे हित समूह, राजनीतिक दल, नागरिक समाज संगठन (सी एस ओ) इत्यादि। यद्यपि ये समूह अपने सामान्य हितों की पूर्ति के लिए होते हैं, ये उनसे भिन्न होते हैं जिनकी पहचान हमने दबाव समूह के रूप में की है। अतः, हमें दबाव समूहों को अन्य समूहों से अलग करने में सक्षम होना चाहिए।

6.4.1 दबाव समूह और हित समूह

अनेक सामाजिक समूहों में, हित समूह शायद दबाव समूहों के सबसे निकट हैं। वास्तव में, अनेक विद्वान दबाव समूहों और हित समूहों के बीच भेद नहीं करते और अक्सर दोनों को एक दूसरे के पर्याय के रूप में देखते हैं। उदाहरण के लिए, ऐलन आर–बॉल (1994: 103), दबाव को हित समूहों, अभिवृत्ति समूहों इत्यादि के ही वर्ग में डालते हैं। उन्होंने इन समूहों को इस प्रकार परिभाषित किया है, 'कुछ हद तक चुने गए और साझे लक्ष्यों वाले सामाजिक समुच्चय जो राजनीतिक निर्णय की निर्माण प्रक्रिया को प्रभावित करने का प्रयास करते हैं'। इसी प्रकार, रॉबर्ट एच. साल्सबरी ने भी तर्क दिया है, "दबाव समूह, केवल अधिक अपमानसूचक परन्तु अधिक सुपरिचित शब्द है हित समूहों के लिए। "अतः दबाव समूह, एक तरीके से हित समूहों के सदृश दिखते हैं कि वे अपने सदस्यों के हितों की प्राप्ति के लिए प्रयास करते हैं।

दूसरी ओर, विद्वानों के अन्य समूह हैं, जो दबाव समूहों को हित समूहों से पृथक करना चाहते हैं। उनका मानना है कि दबाव समूह हमेशा सरकार की निर्णय निर्माण प्रक्रिया को प्रभावित करने का प्रयास करते हैं जबकि हित समूहों के लिए ऐसा इरादा होना आवश्यक नहीं है। हित समूह अपने विशिष्ट लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए केवल अपने हितों के प्रोत्साहित करने का आग्रह करते हैं परन्तु वे सरकार पर दबाव नहीं डालते। अतः, 'दबाव' शब्द को दोनों के बीच के अंतर के मूल बिन्दु के रूप में देखा जा सकता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, दबाव समूह, हित समूह या इसी प्रकार के किसी अन्य समूह से अधिक शक्तिशाली होते हैं क्योंकि उनके पास सरकार के नीति निर्णयों को अपने अनुकूल कराने के लिए उस पर दबाव डालने की मनशा या क्षमता होती है। इस संबंध में, ह्यू ए. बोन कहते हैं, "प्रत्येक समूह एक हित समूह है अथवा एक समूह जिसका हित है, परन्तु प्रत्येक समूह लोकनीति को प्रभावित करने का प्रयास नहीं करता"। इसका तात्पर्य ये है कि हित समूहों ने अपने आपको दबाव समूहों में तब परिवर्तित कर लिया जब उन्होंने निर्णय लेने की प्रक्रिया को प्रभावित करना आरंभ किया। एक तरह से, ये कहा जा सकता है कि सभी दबाव समूह हित समूह होते हैं परन्तु ये आवश्यक नहीं है कि सभी हित समूह दबाव समूहों में परिवर्तित हों।

कुछ अन्य विद्वान हैं जो 'दबाव समूह' शब्द के प्रयोग से बचना चाहते है। उनका विचार है कि यह शब्द एक नकारात्मक अर्थ का संकेत करता है क्योंकि यह उनके उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए बल प्रयोग की आशंका की ओर इशारा करता है। ये विद्वान, समाज में

किसी विशिष्ट हित के लिए प्रयास करने वाले समूहों की पूर्ण श्रेणी का उल्लेख करने में "अनुभागीय", "संगठित", "लॉबी" या हित समूह जैसे नामों को अधिक पसंद करते हैं। इन्हें चाहे हित समूह, अभिवृत्ति समूह या दबाव समूह कहा जाए, ये अपने अपने समूह के हितों की पूर्ति के लिए विद्यमान होते हैं और ये सभी किसी न किसी तरीके से सरकार पर कुछ दबाव डालते हैं (वॉट्स 2007: 6)। दबाव समूहों और इन समूहों के बीच अस्पष्ट सीमा रेखा के बावजूद, ये अंतर अवश्य स्थापित किया जा सकता है कि "दबाव समूह" का साधारण अर्थ वे समूह हैं जो सक्रियतापूर्वक लोकनीति को प्रभावित करने का प्रयास करते हैं।

6.4.2 दबाव समूह और राजनीतिक दल

दबाव समूह और राजनीतिक दल, दोनों महत्वपूर्ण माध्यम हैं जिनका लक्ष्य समाज के विभिन्न हिस्सों के हितों की पूर्ति करना है। कुछ हद तक, दबाव समूहों की भूमिकाएँ राजनीतिक दलों की भूमिकाओं के समानान्तर होती हैं–सरकार और शासित को एक दूसरे से जोड़ने के द्वारा राजनीतिक लामबंदी और प्रतिनिधित्व के अभिकरणों के रूप में। परन्तु दोनों के बीच सैद्धांतिक और व्यावहारिक अंतर होते हैं। जहां एक ओर राजनीतिक दलों का लक्ष्य सत्ता में आना और सरकार का निर्माण करना होता है, वहीं दूसरी ओर, दबाव समूह आमतौर पर जिन लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं, उनके विशिष्ट हितों और आकांक्षाओं के अनुकूल सरकार को प्रभावित करने और उसपर दबाव डालने का प्रयास करते हैं। राजनीतिक दलों से भिन्न, जिनका केन्द्रीय उद्देश्य सत्ता पर कब्जा करना और सरकार चलाना होता है, दबाव समूहों का उद्देश्य कभी भी सरकार पर औपचारिक नियंत्रण प्राप्त करना नहीं होता। इसकी जगह दबाव समूह अपनी माँगों और उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सरकार को प्रभावित करने के प्रति अपने को समर्पित करते हैं। दूसरे शब्दों में, दबाव समूह सरकार को 'प्रभावित' करने का प्रयास करते हैं जबकि दल सरकार बनानेका प्रयास करते हैं।

दबाव समूह और राजनीतिक दलों के बीच एक अन्य अंतर ये है कि जहाँ दबाव समूह एक नीति क्षेत्र पर केंद्रित होते हैं, वहीं राजनीतिक दलों का व्यापक कार्यक्रम होता है जिसमें नीति के सभी (या लगभग सभी) क्षेत्र शामिल होते हैं। उदाहरण के लिए, मजदूर संघों या मानव अधिकार समूहों का संबंध मजदूरों के अधिकारों की रक्षा और उनके कल्याण का प्रोत्साहन या मानव अधिकारों की रक्षा के सीमित लक्ष्यों से होता है। वे शायद ही आर्थिक या विदेश नीतियों में दिलचस्पी रखते हैं, सिवाय तब जब ये नीतियाँ उनके हितों से टकराती हैं। दूसरी ओर, राजनीतिक दलों की दिलचस्पी राष्ट्रीय विकास से जुडी विविध नीतियों में होती है।

फिर भी, कभी–कभी राजनीतिक दलों और दबाव समूहों के बीच अंतर इस कारण से अत्यन्त जटिल हो जाता है कि कुछ दबाव समूहों का एक या दूसरे राजनीतिक दल के साथ निकट का संबंध पाया जाता है। वास्तव में, ऐसे दबाव समूह होते हैं जो कुछ राजनीतिक दलों को समर्थन देते हैं जब भी उन्हें ये लगता है कि उनको समर्थन देने से इनके अपने राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति हो सकती हैं। इसी प्रकार राजनीतिक दलों की भी दबाव समूहों को लेकर ऐसी ही सोच होती है। दूसरी ओर, ऐसे दबाव समूह भी हैं जो राजनीतिक दलों में परिवर्तित हो गए हैं। उदाहरण के लिए, ब्रिटेन और आस्ट्रेलिया में लेबर पार्टियों की उत्पत्ति उनके श्रमिक जनों के आन्दोलनों से हुई इसी प्रकार, भारत में

शिव सेना मिजो नेशनल फ्रंट और आम आदमी पार्टी (आप), राजनीतिक दल बनने से पूर्व दबाव समूह थे। परन्तु, सामान्य रूप से, अधिकांश दबाव समूह राजनीतिक दलों के साथ निकट के संबंध स्थापित करने के स्थान पर, उनसे कुछ दूरी रखने का प्रयास करते हैं।

6.4.3 दबाव समूह और नागरिक समाज संगठन

दबाव समूहों को अक्सर नागरिक समाज संगठनों (सी एस ओ) के बराबर माना जाता है। नागरिक समाज संगठन निश्चित हितों की प्राप्ति के लिए, एक देश के नागरिकों द्वारा स्थापित संगठन और संघ होते हैं। जबकि कुछ नागरिक समाज संगठन अपने निजी हितों को प्रोत्साहित करने के लिए हित समूहों के रूप में कार्य करते हैं, अन्य संगठन, अपने समूह के हितों में कुछ लोक नीतियों को लाने के लिए सरकार पर दबाव डालते हैं। भारत में, लोक सत्ता, जनाग्रह और फाऊंडेशन ऑफ डेमोक्रैटिक रिफॉर्म्स (एफ डी आर) जैसे नागरिक समाज समूह, राजनीतिक दलों के लिए पारदर्शिता और खुलासे के साथ वैध निधिकरण के लिए मार्गों के निर्माण के लिए राजी कर रहे हैं। इन्होंने भारत में मतदाता पंजीकरण में सुधार लाने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। एफ डी आर समूह, विशेष रूप से, पारदर्शिता, सूचना का अधिकार, न्यायपालिका द्वारा त्वरित न्याय के वितरण इत्यादि के लिए भी कार्य करता है। फिर भी, दबाव समूहों को सी एस ओ से जो चीज अलग करती है, वह ये है कि हित–उन्मुख सी एस ओ की तुलना में दबाव समूह अधिक शक्ति केंद्रिक होते हैं। इतना ही नहीं, सी एस ओ की तुलना में, जिनके कार्यक्षेत्र साधारणतया विशाल और विविध होते हैं, दबाव समूहों के क्षेत्र सीमित होते हैं।

अभ्यास प्रश्न 1

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर की जाँच इकाई के अन्त में दिए गए उत्तर से करें।

1. दबाव समूहों की परिभाषा दें। दबाव समूह हित समूहों से किस प्रकार भिन्न हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2. दबाव समूहों और राजनीतिक दलों के बीच अंतर स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6.5 दबाव समूहों की विशेषताएँ

दबाव समूहों की उत्पत्ति उस समुदाय या समूह के हितों की पूर्ति के लिए हुई जिनका वे प्रतिनिधित्व करते हैं। अतः, उस निश्चित समूह के सामूहिक हित के आधार पर उनके उद्देश्य और माँग भिन्न होते है। फिर भी, अपने अंतर के बावजूद, दबाव समूह कुछ सामान्य विशेषताओं का प्रदर्शन करते हैं। दबाव समूहों की एक मूल विशेषता ये है कि ये न तो चुनाव लड़ते हैं और न ही सरकारी मामलों में प्रत्यक्ष रूप से उलझने का प्रयास करते हैं। इसके स्थान पर, इनका लक्ष्य लोकनीतियों को अपने पक्ष में कराने के लिए सरकारी अभिकरणों, नौकरशाहों और राजनीतिज्ञों पर दबाव डालना होता है। ऐसा राजनीतिक तोल–मोल करते समय, अपनी विशिष्ट माँगों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, दबाव समूह हमेशा एक तटस्थ राजनीतिक स्थिति कायम रखने का प्रयास करते हैं। अतः, दबाव समूहों को कभी–कभी 'अराजनीतिक' समूह माना जाता है। फिर भी, उस दल या उम्मीदवार के लिए, जो वे सोचते हैं कि उनके हितों के लिए कार्य करेगा, उसके लिए वित्त–प्रबंध या समर्थन द्वारा वे चुनावी राजनीति के क्षेत्र में प्रवेश कर सकते हैं। इस संबंध में, दबाव समूह राजनीतिक दलों, राजनीतिज्ञों या सरकार के उच्च पदाधिकारियों के साथ अच्छे संबंध कायम रखने का भी प्रयास करते हैं ताकि अपने समूह के हितों के पक्ष में उनका सहयोग या समर्थन प्राप्त किया जा सके। फिर भी, दबाव समूहों का स्थायी राजनीतिक संबंध नहीं होता और सामान्य रूप से वे अपने समूह के हित को राजनीतिक हितों से ऊपर रखने का प्रयास करते हैं। अतः वर्तमान की सरकार पर जिस किसी दल का नियंत्रण होता है, वे उस दल का सहयोग प्राप्त करने के इच्छुक होते हैं।

चूंकि दबाव समूह समाज के निश्चित हिस्सों में से उत्पन्न हुए, उनके कार्य का क्षेत्र सामान्य रूप से सीमित होता हैं। फिर भी, उनकी माँगें अनेक हो सकती हैं (सामाजिक, राजनीतिक या आर्थिक) और समय समय पर बदल सकती हैं जबकि समूह अखंड रहता हैं। माँगों और उद्देश्यों का ये लचीलापन दबाव समूह की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। एक व्यक्तिगत उपागम के स्थान पर, एक अन्य विशेषता है। उनका मानना है कि सामूहिक गतिविधियाँ व्यक्तियों की गतिविधियों से अधिक प्रभावशाली होती हैं।

6.6 दबाव समूहों का वर्गीकरण

अनेक विद्वानों द्वारा दबाव समूहों का वर्गीकरण उनकी संरचना और संगठन के आधार पर विभिन्न वर्गों में किया गया है। इनमें से आलमंड और कॉलमैन द्वारा दिया गया चौगुना वर्गीकरण अधिक उपयुक्त और व्यापक रूप से लागू होता है। ये हैं:

6.6.1 संस्थागत दबाव समूह

संस्थागत दबाव समूह वे समूह होते हैं जिनका निर्माण विभिन्न संस्थाओं में किया जाता है, जिनमें सरकारी संस्थाएँ भी होती हैं जैसे स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय, न्यायपालिका, नौकरशाहियाँ, अस्पताल, पुलिस, इत्यादि। चूंकि इन दबाव समूहों का अस्तित्व डॉक्टरों वकीलों, शिक्षकों जैसे व्यावसायिक रूप से नियुक्त कार्यकर्ताओं द्वारा स्थापित औपचारिक संगठनों में होता है, ये उचित नियमों और विनियमों के अनुसार अत्यंत संगठित होते हैं। अतः, ये व्यावसायिक दबाव समूह के नाम से जाने जाते हैं। भारत में, सिविल सर्विस

एसोसिएशन, पुलिस फैमेलीज वेल्फेयर एसोसिएशन, डिफेन्स पर सोनेल एसोसिएशन, इंडियन मेडिकल एसोसिएशन, ऑल इंडिया बार एसोसिएशन इत्यादि सभी समूह इस वर्ग में आते हैं। सरकार में प्रत्यक्ष रूप से उलझे बिना अपने हितों की पूर्ति के लिए इनका निर्माण होता है। चूंकि ये सरकार के निकट होते हैं, ये उसे आसानी से प्रभावित कर सकते हैं। अपने हित की अभिव्यक्ति और प्रतिनिधित्व करते हैं। उदाहरण के लिए, कृषि मंत्रालय में एक दबाव समूह बड़ी सरलता और प्रभावशाली तरीके से अन्य मंत्रालयों या नौकरशाहों को किसानों के हितों के पक्ष में मनवा सकता है।

6.6.2 सामुदायिक दबाव समूह

ये समूह अत्यंत संगठित और विशेषीकृत समूह होते हैं जिनका निर्माण सीमित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए किया जाता है। सामुदायिक दबाव समूह में व्यापारियों और उद्योगपतियों के संगठन शामिल होते हैं जैसे ऐसोसिएटेड चेम्बर्स ऑफ कॉमर्स (ऐस्सोकैम), कन्फेडेरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्रीज इत्यादि। ये समूह संसाधनों के अपने विस्तृत विन्यास, तकनीकी और प्रबन्धकीय ज्ञान और सरकार के अभिजन समूहों के साथ निकट के संबंधों के बल पर, सर्वाधिक प्रभावशाली दबाव समूहों में होते हैं। इनमें से कुछ समूह इतने शक्तिशाली होते हैं कि राजनीतिक दल भी निधि और अन्य संसाधनों के लिए इन पर आश्रित होते हैं और बदले में सरकार कभी–कभी इन्हें कर में कटौती, शुल्क, व्यापार में छूट द्वारा सहायता देती है। कुछ मामलों में, आर्थिक और वाणिज्यिक पहलुओं वाले प्रधान नीति मुद्दों पर सरकार इन समूहों से सुझाव और परामर्श भी माँगती है। इस वर्ग में मजदूरों और किसानों के संघ, जैसे ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कॉंग्रेस (ए आई टी यू सी), भारतीय किसान संघ, भारतीय मजदूर संघ और विद्यार्थी संगठन जैसे अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् (ए बी वी पी), नैशनल स्टूडेन्ट्स यूनियन ऑफ इंडिया (एन एस यू आई), स्टूडेन्ट्स फेडेरेशन ऑफ इंडिया (एस एफ आई) इत्यादि भी शामिल हैं। अतः इस वर्ग को कभी कभी विभिन्न प्रकारों में विभाजित किया जाता है, जैसे कारोबारी समूह, व्यापारिक समूह, कृषक समूह, मजदूर समूह और विद्यार्थी समूह इत्यादि।

6.6.3 गैर–सामुदायिक दबाव समूह

इस वर्ग का संबंध उन समूहों से हैं जो अनौपचारिक प्रकृति के होते हैं जिन्हें धर्म, संस्कृति और परम्पराओं, बांधव्य, नृजातीयता, जनजातीय संबंध या पारिवारिक बंधनों इत्यादि द्वारा एक साथ लाया जाता है। इनकी गतिविधियों या माँगों में कोई औपचारिक या संरचनात्मक कार्यविधि नहीं होती। इनकी माँगे या हित स्थायी नहीं होते और आवश्यकता पड़ने पर उनमें परिवर्तन भी हो जाते हैं। ये समूह अधिकतर भाषा, जातीयता, धर्म या समाज में अन्य किन्हीं सामाजिक–सांस्कृतिक पहलुओं पर आधारित होते हैं। संपूर्ण समुदाय के हित की रक्षा और प्रोत्साहन पर केंद्रित सामुदायिक सेवा में इनकी अधिक दिलचस्पी होती है। अतः इन्हें सामाजिक–सांस्कृतिक दबाव समूहों के नाम से भी जाना जाता है। भारत में धर्म पर आधारित समूह जैसे विश्व हिन्दू परिषद, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति या लोरिक सेना, भूमि सेना, वैश्य समाज, बाल्मिकि समाज इत्यादि जैसे जाति पर आधारित समूह सामाजिक–धार्मिक और सांस्कृतिक दबाव समूहों के कुछ उदाहरण हैं। इन समूहों का निर्माण निश्चित धार्मिक, जातीय या सांस्कृतिक समुदायों की संस्कृति, परम्परा और आस्थाओं के संरक्षण और प्रोत्साहन के लक्ष्य से किया जाता है।

6.6.4 चमत्कारिक या प्रदर्शनात्मक दबाव समूह

चमत्कारिक या प्रदर्शनात्मक दबाव समूह वे होते हैं जो निश्चित उद्देश्यों और लक्ष्य से अल्पकाल के लिए प्रकट होते हैं। आलमंड के शब्दों में, ये प्रायः समाज से राजनीतिक प्रणाली के भीतर प्रवेश कराए गए स्वतः प्रवर्तित समूह होते हैं। 'सामान्य रूप से इन समूहों का निर्माण अकाल, सूखा, संसाधनों की दुर्लभ्यता या इस प्रकार की किसी अत्यावश्यकता जैसे अप्रत्याशित क्षणों की प्रतिक्रिया में किया जाता है। चूंकि ये समूह बिना तैयारी के, स्वतः प्रेरित प्रकृति के होते हैं, ये किसी नियम या कार्यविधिक संरचना द्वारा निर्देशित नहीं होते। इसके परिणामस्वरूप, इनका व्यवहार और चाल–चलन भी काफी अप्रत्याशित होते हैं जो अक्सर हिंसक हो जाते हैं। उदाहरण के लिए, अकाल राहत समूह जैसे मिजोरम में मीजो नैशनल फैमिन फ्रंट या आसाम आन्दोलन के दौरान निर्मित असोम गोणो परिषद् को चमत्कारिक या प्रदर्शनात्मक दबाव समूह का नाम दिया जा सकता है। एक बार लक्ष्य की पूर्ति हो जाने पर, इनमें से अधिकांश का अस्तित्व समाप्त हो जाता है जबकि कुछ अपने आपको राजनीतिक दलों में परिवर्तित कर सकते हैं जैसा कि महाराष्ट्र में शिव सेना या मिजरोम में मीजो नैशनल फ्रंट (एम एन एफ) के मामलों में हुआ।

अभ्यास प्रश्न 2

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर की जाँच इकाई के अन्त में दिए गए उत्तर से करें।

1. आलमंड और कॉलमैन द्वारा वर्गीकृत किए गए चार प्रकार के दबाव समूह क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6.7 दबाव समूहों की पद्धतियाँ और युक्तियाँ

हम जानते हैं कि दबाव समूह लोकनीति के निर्माण को प्रभावित करने का निरंतर प्रयास करते हैं। इसके लिए ये विभिन्न पद्धतियों और युक्तियों का प्रयोग करते हैं। दबाव समूहों द्वारा अपनाई जाने वाली युक्तियाँ मिलती–जुलती नहीं होती क्योंकि युक्तियों का उनका चयन विभिन्न कारकों द्वारा निर्धारित होता है जैसे राजनीतिक प्रणाली की प्रकृति, सरकार का नजरिया, उस निश्चित दबाव समूह की क्षमता और ताकत। ये समूहों के पास मौजूद पद्धतियों की सुलभता और सुविधा पर भी निर्भर करता है। समूह के हितों को अधिकतम लाभ उपलब्ध कराने वाले किन्हीं भी संभव पद्धतियों का प्रयोग करने की इनकी प्रवृत्ति होती है। दबाव समूहों द्वारा अपनाए जाने वाली कुछ सामान्य युक्तियाँ निम्नलिखित हैं:

6.7.1 लॉबिंग (पक्ष–जुटाव)

लॉबिंग का अर्थ दबाव समूहों द्वारा सरकार के निर्णयों को प्रभावित करने का प्रयास है। लॉबिंग दबाव समूहों द्वारा प्रयोग किए जाने वाले अत्यंत सामान्य और महत्वपूर्ण प्रेरक युक्तियों में एक है। 'लॉबी' शब्द ब्रिटेन के हाऊस ऑफ कॉमर्स की 'लॉबी' या भवन से उद्‌ृत किया गया है। अतः लॉबिंग का अर्थ व्यक्तिगत सदस्यों या समूहों द्वारा, सामान्य रूप से संसदीय इमारतों की लॉबियों या भवनों में अपने उद्देश्यों के लिए समर्थन जुटाने के लिए राजनीतिज्ञों, विधानपालिकाओं या जो कोई भी सरकार में हो या नीति–निर्माण की सत्ता में हो, उन्हें प्रभावित करने का कोई प्रयत्न या प्रयास है। लॉबिंग की क्रिया का संचालन बहुत तरीकों से किया जा सकता है, जैसे प्रत्यक्ष व्यक्तिगत संपर्क, प्रतिनिधि मंडलों या प्रतिनिधियों को भेजना, पत्र–लेखन, फोन–कॉल, ईमेल संवाद या संचार गतिविधि के किसी अन्य रूप के प्रयोग द्वारा, जो अनुनय के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। यद्यपि, लॉबिंग की क्रिया अत्यंत निजी होती है जिसका मूल रूप से संबंध समूह के व्यक्तिगत सदस्यों की निजी गतिविधियों के साथ होता है, यह विशाल पैमाने पर भी घटित हो सकती है जिसमें अनेक व्यक्तिगत सदस्य उन लोगों को मनवाने और राजी करने का प्रयास करते हैं जिनके पास नीति–संबंधी निर्णय लेने की शक्ति होती है, जैसे विधानपालिका के सदस्य, मंत्री या सरकारी अधिकारी इत्यादि। समाचार पत्र, रेडियों, टेलीविजन इत्यादि जन माध्यमों (पॉप्युलर मीडिया) में विज्ञापन के द्वारा दबाव समूह सत्ता के बडे पदों पर आसीन लोगों को मनवाने के लिए लॉबिंग कर सकते हैं। लॉबिंग की प्रक्रिया में, काम पूरा कराने के लिए अधिकारियों को आकर्षित करने के लिए, उन्हें उपकार, प्रलोभन और भेंट देने की क्रियाएँ भी शामिल हो सकती हैं।

6.7.2 जनमत का निर्माण

अपने मुद्दों और मामलों को उजागर करने और सरकार तक उन्हें पहुचाने के लिए, दबाव समूह जन–मत अभियानों की युक्ति का व्यापक प्रयोग करते हैं। जनमत अभियान का मूल उद्देश्य व्यापक प्रभाव हासिल करने के लिए मीडिया का ध्यान आकर्षित करने और जन–सामान्य को भी संवेदनशील बनाना होता है। इसके लिए दबाव समूह अनेक मंचों का प्रयोग करते हैं जैसे जन संचार माध्यम का प्रयोग, प्रेस विज्ञप्ति जारी करना, पर्चे बाँटना, जन सभाओं का आयोजन करना इत्यादि। इस प्रकार के प्रचार अभ्यास के करने से, दबाव समूह, एक ओर जनमत को अपने पक्ष में प्रभावित कर पाते हैं और दूसरी ओर सरकारी नीति की आलोचना भी कर पाते हैं। जनमत को प्रभावित करने का उद्देश्य सरकार को सतर्क करना है ताकि उनकी आवाज सुनी जा सके।

6.7.3 प्रोपेगेंडा (अधिप्रचार) और पब्लिसिटी (प्रचार)

अधिप्रचार और प्रचार दबाव समूहों द्वारा प्रयोग किया जाने वाला एक अन्य सामान्य तकनीक है। दबाव समूह साधारणतया समाचार पत्र, रेडियों, टेलीविजन, इंटरनेट इत्यादि जैसे जन संचार के माध्यम से अपने हितों का प्रचार करते हैं। इसके द्वारा दबाव समूह अपनी माँगों और राय को उजागर करने के साथ साथ सरकार और साधरण जनता को उन मामलों के बारे में सूचित और शिक्षित करते हैं जो उनके सामूहिक हितों के लिए

निर्णायक होते हैं। ऐसा करने से दबाव समूह सत्ताधारी लोगों को अपनी माँगों को मनवाने के लिए आकर्षित और प्रभावित कर पाते हैं।

6.7.4 हडताल और आंदोलन

सामान्य रूप से, दबाव समूह अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए शांतिपूर्ण साधनों का प्रयोग करते हैं। परन्तु, अपनी माँगों के पक्ष में अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए ये आन्दोलनों का भी प्रयोग कर सकते हैं। ऐसी युक्तियों में हडतालें, विरोध प्रदर्शन, सविनय अवज्ञा शामिल हैं। हड़ताल आन्दोलन का एक ऐसा रूप है जो अपनी माँगों की पूर्ति कराने के लिए सरकार या प्राधिकारियों को मजबूर करने के लिए, कार्य पर अल्पकालिक रोक लगाने का प्रयास करती है। ये दबाव समूहों द्वारा अपनाया जाने वाला हड़ताल का सबसे प्रभावशाली और सामान्य रूप है। हड़ताली अक्सर अपने वैध कर्त्तव्यों का पालन करने से इनकार करते हैं और अन्य लोगों को भी अपने कर्त्तव्यों को न निभाने के लिए राजी करा सकते हैं। यद्यपि हड़तालों के अधिकांश रूप संवैधानिक और शांतिपूर्ण होते हैं, वे कभी कभी हिंसक भी हो सकती हैं। बंद और घेराव प्रत्यक्ष कार्रवाई के अन्य रूप होते हैं। बंद, एक हडताल और काम–बंदी या नाकाबंदी का सम्मिश्रण होता है। इसमें भाग लेने वाले आर्थिक गतिविधि से परहेज करते हैं और बंद को 'लागू' करने के लिए साधारणतया सड़क रोक का आयोजन करते हैं या दफ्तर, दुकानों और सार्वजनिक परिवहन को बंद कर देते हैं। दूसरी ओर, घेराव के अन्तर्गत, दबाव समूहों के सदस्यों द्वारा सरकारी अधिकारियों को कैद रखना शामिल होता है, ताकि वे इनकी माँगों को स्वीकार करने के लिए मजबूर हों। ये पहरा बैठाने की तरह है जिसमें एक कार्य स्थल के बाहर या ऐसे स्थान पर जहाँ कोई घटना घट रही हो, वहाँ एक ध्येय की ओर जनता का ध्यान आकर्षित करने के लिए लोग एकत्रित होते हैं। भारत में अधिकांश दबाव समूह प्रत्यक्ष कार्रवाई के तरीकों पर अधिक और लॉबिंग जैसी क्रियाविधियों पर कम निर्भर करते हैं।

भारत तथा पश्चिमी देशों में दबाव समूह

भारत तथा पश्चिमी देश लोकतंत्र हैं। लेकिन पश्चिमी देशों के भीतर सरकार के राष्ट्रपति और संसदीय रूपों के बीच मतभेद है हालांकि, भारत, जो कि एक संसदीय लोकतंत्र है, पश्चिम के ऐसे देशों से विकास के स्तर के मामलें में अलग है। इसलिए, दबाव समूहों की भूमिका में थी कुछ अंतर हैं। प्रथम, अमरीकी दबाव समूहों को सरकार का चौथा अंग माना जाता है, लेकिन भारतीय दबाव समूह अभी तक राजनीति में इतनी महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभा पाए है। दूसरे, भारत और ग्रेट ब्रिटेन में, दबाव समूहों का मुख्य निशाना संसद की बजाय केबिनेट और सिविल सेवा है, पैरवी करने के उद्देश्य से। हालांकि, पैरवी करने के लिए अमेरिकी दबाव समूहों का लक्ष्य कांग्रेस और उसकी समितियाँ होती हैं न कि राष्ट्रपति। तीसरा, भारत में, जाति, धर्म, क्षेत्र आदि के आधार पर दबाव समूह, व्यावसायिक संगठनों जैसे आधुनिक समूहों की तुलना में अधिक शक्तिशाली हैं। अंत में, अमेरिकी दबाव समूहों कि एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वे विदेश नीति के मुद्दों में ज्यादा दिलचस्पी लेते हैं जबकि भारत में दबाव समूह घरेलु नीतिगत मुद्दों और समस्याओं पर अधिक ध्यान देते हैं। इन मतभेदों के बावजूद, लोकतांत्रिक राजनीतिक समाज के विभिन्न वर्गों के हितों की सेवा के लिए दबाव समूहों की महत्वपूर्ण भूमिका निर्धारित करती है।

अभ्यास प्रश्न 3

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर की जाँच इकाई के अन्त में दिए गए उत्तर से करें।

1. दबाव समूह सरकार पर दबाव डालने का प्रयास क्यों करते हैं? दबाव समूहों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली दबाव की कुछ युक्तियों के बारे में विस्तार से लिखें।

.....

.....

.....

.....

2. लॉबिंग क्या है?

.....

.....

.....

6.8 आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था में दबाव समूह

सामूहिक क्रिया प्रत्येक लोकतंत्र की और वास्तव में अनेक सत्तावादी राज्यों का भी लक्षण होता है। यद्यपि दबाव समूह लम्बे समय से अस्तित्व में रहे हैं और निकट भविष्य में भी कायम रहेंगे, एक लोकतंत्र में उनकी भूमिका का मूल्यांकन करना कठिन है। ये दबाव समूहों की बहुलता और विविधता के कारण है – इनकी संख्या अत्यधिक है और इनके लक्ष्यों, बनावट और पद्धति की दृष्टि से इनमें अंतर है। कुछ निरंतर राजनीतिक क्रिया में जुटे रहते हैं जबकि अन्य सविराम ऐसा करते हैं अथवा अपने लक्ष्य की प्राप्ति के बाद गायब हो जाते हैं। इसे देखते हुए हमारे द्वारा यहाँ की जाने वाली सामान्य टिप्पणियाँ सभी परिस्थितियों में, सभी दबाव समूहों पर लागू नहीं होती।

उन लोगों के लिए, जो दबाव समूह क्रिया के बारे में सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, ये समूह हमारे लोकतंत्र की वृद्धि करते हैं और राजनीतिक प्रक्रियाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। दबाव समूह व्यक्तियों को एक दूसरे के साथ जुड़ने और अपने हितों और शिकायतों को व्यक्त करने में सक्षम बनाते हैं, जो किसी भी लोकतंत्र में अनिवार्य अधिकार होते हैं। ये गतिविधियाँ, अल्पसंख्यकों को या समाज के उन वंचित वर्गों का प्रतिनिधित्व और स्वर देती हैं जिनका सरकार में पर्याप्त रूप से प्रतिनिधित्व नहीं होता। उदाहरण के लिए, महिलाएँ, नृजातीय अल्पसंख्यक, ग (समलैंगिक) जिनका राजनीतिक दलों द्वारा प्रतिनिधित्व अपर्याप्त होता है, उन्हें अपने साथ किए जा रहे बर्ताव के प्रति किसी भी नाराजगी को व्यक्त करने और अपनी क्षमता को पूर्ण रूप से प्राप्त करने से रोकने वाली बाधाओं पर विजय पाने में सहायक विचारों का सुझाव देने का अवसर मिलता है।

दबाव समूह क्रिया निर्णयन प्रक्रिया में अधिक व्यापक सहभागिता को भी प्रोत्साहित करते है। साधारण व्यक्ति राजनीतिक जीवन में केवल चुनाव के समय हिस्सा लेते हैं। चार या पाँच वर्षों में होने वाले चुनाव मतदाताओं को एक व्यक्तिगत विषय पर अपनी पसंद को व्यक्त करने की अनुमति नहीं दे पाते हैं। दबाव समूह व्यक्तियों को राजनीतिक दृष्टि से

सक्रिय होने और चुनावों के बीच लोकतंत्र के संचालन के प्रति योगदान देने का अवसर देते हैं।

दबाव समूह जनता और सरकार के बीच एक कड़ी का कार्य करते हैं, मतदाताओं और वे जिन्हें वे निर्वाचित करते हैं, उन दोनों के बीच एक उपयोगी मध्यस्थ के रूप में जिसके चलते अनेक प्रकार के दृष्टिकोणों की अभिव्यक्ति का प्रबंध हो जाता है। ये राजनीतिक दलों द्वारा राजनीतिक प्रक्रिया पर एकाधिकार का विरोध करते हैं। जैसा कि एक राजनीतिक वैज्ञानिक ने व्यक्त किया है 'जो दृष्टिकोण दबाव समूह प्रस्तुत करते हैं, वे वैध हित होते हैं .....दबाव समूहों के बिना आधुनिक लोकतंत्र का अस्तित्व नहीं हो सकता। प्रतिनिधित्व के एक माध्यम के रूप में, ये मतपेटी के जितने वैध होते हैं ..... ये सरकार और शासित के बीच मध्यस्थता कर सकते हैं।' (बैगट, 1995)

दबाव समूह सरकार को अक्सर विशेषज्ञ जानकारी उपलब्ध कराते हैं और नीति के कार्यान्वयन में सहायता करते हैं। कुछ सु-संगठित दबाव समूह अक्सर आधिकारिक परामर्श समितियों, सलाहकारी समूहों और आयोगों में भाग लेते हैं। अधिकांश सरकारें नीतियों को कार्यान्वित करने में सलाह, सूचना सुविज्ञ राय और सहायता के लिए इन समूहों पर निर्भर करती हैं। इस प्रकार, दबाव समूह लोकनीतियों के निर्माण, आकार और कार्यान्वयन में योगदान देते हैं।

अंत में, दबाव समूहों की गतिविधियाँ लोक नीतियों के बारे में जनता को बेहतर जानकार बनाती हैं। ये गतिविधियाँ राजनीतिक प्रणाली और सरकार को जनता की आकांक्षा और माँगों के प्रति अधिक संवेदनशील बनाती हैं।

फिर भी, ऐसे आलोचक है, जो ये दावा करते हैं कि दबाव समूह लोकतांत्रिक प्रक्रिया को जोखिम में डाल सकते हैं और कमजोर कर सकते हैं। उनका तर्क है कि निर्वाचित प्रतिनिधियों के स्थान पर, अनिर्वाचित व्यक्तियों के अपेक्षाकृत छोटे समूह नीतियों और कानूनों को प्रभावित कर पाते हैं। उदाहरण के लिए, मार्क्सवादी और विशिष्ट वर्गीय सिद्धांत के विद्वान ये दावा करते हैं कि राजनीति पर हमेशा एक छोटी संख्या में लोगों का प्रभुत्व रहता है। मार्क्सवादी विद्वानों के अनुसार, दबाव समूह प्रणाली की सत्ता की चालू संरचना को प्रतिबिंबित करते हैं जिसमें पूंजीवादी वर्ग के कुछ नेता हमेशा इन दबाव समूहों पर नियंत्रण और प्रभुत्व रखते हैं। दबाव समूहों की ये वर्ग–आधारित प्रकृति कमजोर बहुसंख्यकों को कम महत्व देते हुए, प्रणाली को शक्तिशाली और संपत्तिवांन वर्ग के पक्ष में सुनिश्चित करती है। दूसरी ओर, वर्गीय सिद्धांत के विद्वान दबाव समूहों, की व्याख्या रॉबर्ट मिशैल्स द्वारा प्रस्तुत 'अल्पतंत्र का लौहनियम' के संदर्भ में करते हैं जो ये दावा करता है कि अल्पसंख्यक, जिन्हें अक्सर 'अल्पतांत्रिक अधिकारी' कहा जाता है, हमेशा इन संगठनों पर शासन करते हैं। उनके अनुसार, अधिकांश लोग, विशेष रूप से समाज के कमजोर वर्ग से, प्रधान रूप से असंगठित होते हैं, अतः इनका दबाव समूहों के नेताओं के रूप में उभरना संभव नहीं है क्योंकि इनके पास शक्तिशाली लोगों के विरूद्ध राजनीतिक लड़ाई के लिए न तो संसाधन होते हैं और न ही ताकत।

समूह गतिविधि के आलोचक ये भी तर्क देते हैं कि दबाव समूहों द्वारा अपनाई गई पद्धतियाँ और युक्तियाँ अक्सर भ्रष्ट और भयोत्पादक होती हैं। उदाहरण के लिए, व्यापक–पैमाने वाले प्रदर्शन या विरोध अनेक लोगों को तकलीफ पहुँचा सकते हैं। कभी–कभी प्रत्यक्ष कार्रवाई के तरीके नियंत्रण से बाहर हो जाते हैं जिसके परिणामस्वरूप

विरोधियों और राजकीय उपकरणों के बीच हिंसक टकराव हो जाते हैं। फिर भी विरोध करने का अधिकार किसी भी लोकतंत्र में एक मौलिक अधिकार होता है, विशेष रूप से जब सत्ताधारी ऐसी कार्रवाई करें जो समाज के एक हिस्से के लिए हानिकारक हो। ऐसा प्रतीत होता है कि अत्यधिक समूह शक्ति हितों द्वारा अपने विशिष्ट दृष्टिकोणों को निर्वाचित प्रतिनिधियों पर थोपने की संभावना तैयार करती है जिनसे ये अपेक्षा की जाती है कि वे जनता के सामान्य हित को सुरक्षित रखेंगे। दूसरी ओर, अत्यंत कम समूह शक्ति का खतरा ये है कि निर्वाचित सरकार स्वेच्छाचारी तरीके से व्यवहार कर सकती है और लोगों की वैध आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं की अवहेलना कर सकती है। चूंकि दबाव समूह आधुनिक राजनीतिक जीवन के अनिवार्य अवयव बन चुके हैं, समूह गतिविधि के अत्यधिक और तर्कसंगत प्रभाव के बीच एक रेखा खींचना आवश्यक हो गया है। सामान्यतया, दबाव समूहों को जो सरकारें स्वतंत्र रूप से काम करने देती हैं, वे उन सरकारों की तुलना में जनता के प्रति अधिक उत्तरदायी और संवेदनशील होती हैं जिनके पास दबाव समूह नहीं होते।

6.9 सारांश

दबाव समूह अपने सदस्यों के सामूहिक हितों का प्रतिनिधित्व करने वाले संगठन, संघ और समूह होते हैं। समाज के विभिन्न समूहों की माँगों और हितों को व्यक्त करने के माध्यम से वे एक देश की लोकतांत्रिक राजनीति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। दबाव समूहों के निर्माण द्वारा सरकार पर दबाव बनाने के साथ–साथ लोग अपने साझे हितों और विश्वासों को सुरक्षित रखने और प्रोत्साहित करने का प्रयास करते हैं। वास्तव में, अनेक दबाव समूह सरकार को प्रभावित कर पाते हैं और समुदाय के सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक संरचनाओं को बदल पाते हैं। चूंकि ये शासकीय शक्ति के प्रयोग का प्रयास नहीं करते, ये राजनीतिक दलों से कई तरीकों में भिन्न होते हैं। यद्यपि अपनी अवस्थिति और प्रकृति में सदृश होते हैं, दबाव समूह, समाज के अन्य समूहों से भी भिन्न होते हैं जैसे हित समूह या नागरिक समाज संगठन। ये अपने उद्देश्यों, कार्यप्रणाली और पद्धतियों में अच्छी तरह संरचित, संगठित और औपचारीकृत होते हैं। यद्यपि कुछ दबाव समूहों का अस्तित्व तत्कालिक या निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अल्पकाल के लिए होता है, फिर भी अधिकांश दबाव समूह दीर्घकालीन होते हैं और सरकार पर आयोजित दबाव डालते हैं जिसके द्वारा वे अपने समूह के हितों के लिए नीति निर्माण और नीति कार्यान्वयन, दोनों को प्रभावित करते हैं।

6.10 संदर्भ

ऐलन आर. बाल एण्ड जॉन मिलर्ड. (1965). *प्रेशर पॉलिटिक्स इन इंडस्ट्रियल सोसाइटीज.* ऐल्फ्रेड एण्ड नॉफ, लंदन.

बैगट, रॉब. (1995). *प्रेशर ग्रूप्स टुड़े.* मैनचेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस. मैनचेस्टर.

फाइनर, एस. ई. (1958). *इंटरेस्ट ग्रूप्स ऑन फोर कॉंटिनेन्ट्स.* यूनिवर्सिटी ऑफ पिट्सबर्ग प्रेस.पिट्सबर्ग प्रेसः पिट्सबर्ग.

फॉर्मेन एफ. एन. एण्ड एन. डी. जे. बाल्डविन. (1999). *मास्टरिंग ब्रिटिश पॉलिटिक्स.* मैकमिलन प्रेसः लंदन.

की, वी. ओ. (1969). *पॉलिटिक्स, पार्टीज एण्ड प्रेशर ग्रूप्स,* न्यू यॉर्कः थोमर्स एण्ड क्रोवेल को.

वॉट्स, डंकन (2007). *प्रेशर ग्रूप्स.* एडिनबर्ग यूनिवर्सिटी प्रेस. एडिनबर्गः लंदन.

6.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. व्यक्तियों या संघों के समूह जो नीति के परिणामों को अपने हितों के अनुकूल प्राप्त करने के लिए सरकार की निर्णय प्रक्रिया पर दबाव या उसे प्रभावित करने का प्रयास करते हैं। यद्यपि दबाव समूह 'हित समूहों' के सदृश होते हैं, फिर भी, जहाँ दबाव समूह सरकार की निर्णय प्रणाली को प्रभावित करने का लक्ष्य रखते हैं, वहीं, हित समूहों के सरकार के विरूद्ध दावे नहीं होते और न ही वे सरकार को प्रभावित कर सकते हैं।

2. दबाव समूहों का लक्ष्य होता है, सरकार के निर्माण में प्रत्यक्ष रूप से उलझे बिना निर्णय प्रक्रिया को प्रभावित करना। दूसरी ओर, राजनीतिक दल ऐसे समूह होते हैं जो सरकार बनाने के लिए चुनाव लड़ने का प्रयास करते हैं।

बोध प्रश्न 2

1. आलमंड और कॉलमैन द्वारा दबाव समूहों के वर्गीकरण में चार प्रकार शामिल हैं। ये हैं i) संस्थागत दबाव समूह, ii) सामुदायिक दबाव समूह iii) गैर–सामुदायिक दबाव समूह iv) चमत्कारिक या प्रदर्शनात्मक दबाव समूह।

बोध प्रश्न 3

1. नीति के परिणामों को अपने पक्ष में कराने के लिए दबाव समूह सरकार पर निरंतर दबाव डालने का प्रयत्न करते हैं। इसके लिए वे विभिन्न तकनीकों को अपनाते हैं जिनमें लॉबिंग, अधिप्रचार, अपील और याचिकाएँ, प्रदर्शन, धरना, हड़ताल, बंद, बहिष्कार आदि का आयोजन करना शामिल है। परन्तु उनके द्वारा रणनीतियों और तकनीकों का चयन राजनीतिक प्रणाली की प्रकृति, समूह की प्रभावशालिता, तकनीकों की उपलब्धि आदि कारकों द्वारा निर्धारित होता है।

2. लॉबिंग का अर्थ सरकार या नीति निर्माण की सत्ता से जुड़े अधिकारियों को, अपने हित के लिए समर्थन प्राप्त करने के लिए, व्यक्तिगत सदस्यों या समूहों द्वारा प्रभावित करने का कोई भी प्रयत्न या प्रयास होता है। इसमें काम पूरा कराने के लिए अधिकारियों या नेताओं को आकर्षित करने के लिए उपकार, प्रलोभन और भेंट देने की क्रियाएँ शामिल हो सकती हैं।

इकाई 7 चुनाव प्रणाली और चुनावी प्रक्रियाएँ*

संरचना

7.0 उद्देश्य

7.1 परिचय

7.2 चुनावी प्रणालियों का वर्गीकरण

7.3 बहुसंख्यक प्रणालियाँ

- 7.3.1 फर्स्ट–पास्ट–द–पोस्ट
- 7.3.2 द्वितीय मत प्रणाली
- 7.3.3 वैकल्पिक मत
- 7.3.4 कान्डोर्सेट विधि

7.4 आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली

- 7.4.1 एकल–हस्तांतरण–मत प्रणाली
- 7.4.2 पार्टी–सूची प्रणाली

7.5 मिश्रित चुनाव प्रणालियाँ

- 7.5.1 मिश्रित–सदस्य अनुपातिक या अतिरिक्त–सदस्य प्रणाली
- 7.5.2 अर्ध–आनुपातिक प्रणाली
- 7.5.3 संचयी मत प्रणाली
- 7.5.4 स्लेट प्रणाली

7.6 बहुसंख्यक एवं आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धतियों का तुलनात्मक आंकलन

7.7 सारांश

7.8 संदर्भ

7.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

* डॉ. तुलिका गौर, अतिथी व्याख्याता, नान–कॉलिजिएट वुमन्स एजुकेशन बोर्ड, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

7.0 उद्देश्य

एक चुनावी प्रणाली न केवल चुनावों के नियम निर्धारित करती है, अपितु दल/पार्टी पद्धति और देश की राजनीतिक संस्कृति को आकार देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह इकाई चुनावी प्रणालियों और प्रक्रियाओं पर केंद्रित है। इस इकाई के अध्ययन के बाद आप निम्न करने के योग्य हो जाएँगे :

- चुनावी प्रणाली परिभाषित करने में;
- चुनावी प्रणाली के विभिन्न आयामों की पहचान करने में;
- विभिन्न देशों द्वारा उनके राष्ट्रीय अथवा स्थानीय चुनावों में उपयोग में लाई जाने वाली चुनावी पद्धतियों का आंकलन करने में;
- विभिन्न प्रकार की चुनावी पद्धतियों के लाभ हानि का आंकलन करने में;
- पार्टियों एवं चुनावी प्रक्रियाओं के बीच के संबंधों का विश्लेषण करने में।

7.1 परिचय

चुनावी प्रणाली नियमों के उस समूह को सदर्भित करती है जिसके माध्यम से लोग अपने प्रतिनिधियों या राजनीतिक नेताओं का चुनाव करते हैं। ये नियम, चुनावी तंत्र और चुनावी प्रक्रिया प्रदान करके चुनाव के परिणामों को आकार देते हैं, जिसके माध्यम से विधायिका में कई राजनीतिक दलों का प्रतिनिधित्व निर्धारित किया जाता है। चुनाव प्रणाली न केवल राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करती हैं, अपितु स्थानीय निकायों की संरचना निर्धारण में भी व्यापक तौर पर उपयोग में लाई जाती है। यह किसी देश की विधायिका तथा कार्यकारी स्तर पर मौजूद राजनीतिक दलों/समूहों/व्यक्तियों के विभिन्न संयोजनों के लिए निर्णायक कारक हैं। गठबंधनों का निर्माण, राजनीतिक दलों द्वारा विधायिका में शामिल होने के लिए चुनी गई रणनीतियाँ तथा उनके चुनावी घोषणा पत्र– सब इस बात पर निर्भर करते हैं कि उनकी राजनीतिक व्यवस्था में किस प्रकार की चुनावी प्रणाली अपनाई जाती है। चुनावी प्रणाली एक गतिविहीन अवधारणा नहीं है, अपितु एक गतिशील प्रणाली है जो देशों द्वारा अपनी राजनीतिक व्यवस्था के अनुरूप आवश्यकतानुसार लगातार विकसित हो रही है। एक अच्छी प्रकार से परिभाषित चुनावी प्रणाली, लोकतांत्रिक संस्कृति को अपनी यर्थाथभावना का प्रदर्शन करने के लिए सुसाध्य बनाती है।

तुल्नात्मक राजनीति विज्ञान के एक प्रसिद्ध विद्वान, बर्नार्ड ग्रॉफमैन ने चुनावी प्रणाली के छः बुनियादी कारकों का निर्धारण किया है। ये हैं– 1) चुनाव लड़ने के लिए पात्रता को परिभाषित करना (व्यक्ति या दल या दोनों का संयोजन) 2) पार्टी के अंदर उम्मीदवारों की पहचान के लिए नियम या पार्टी के चयनित उम्मीदवारों के श्रेणी क्रम के लिए मानदंड निर्धारित करना 3) मतपत्र के प्रकार की विशिष्टता 4) निर्वाचन क्षेत्रों (जिलों) की विशिष्टता 5) चुनाव के समय का निर्धारण तथा 6) मतपत्र संग्रह के नियम। इसके अतिरिक्त, चुनावी प्रणाली शब्द का प्रयोग मतदाताओं के, चुनाव प्रचार के, विज्ञापन के, चुनाव के चरणों पर निर्णय आदि के नियमों और विनियमों को संदर्भित करने के लिए किया जाता है (कृपाविसियस, इसोदा, वैसनोरास 2013)।

जैसा कि राय (1971), द्वारा उल्लेखित है कि, चुनावी प्रणाली के तीन आयाम हैं : मतपत्र की संरचना, जिले की संरचना तथा चुनावी सूत्र।

1) मतपत्र संरचना, मतपत्र प्रणाली की प्रकृति तथा मत डालने एवं उसकी गिनती के विभिन्न तरीकों को परिभाषित करता है। उदाहरण के लिए, क्या मत व्यक्तियों या व्यक्तियों के समूह (पार्टी सूची) या दोनों के मेल के लिए डाले जाते हैं; उम्मीदवारों और/या सूचियों के लिए कितने मत डाले जाने चाहिए; यदि एक से अधिक मत डाले जाने वाले हों, क्या यह प्राथमिकता पर आधारित होगी या उम्मीदवारों की श्रेणी/किसी भी क्रम में सूची पर; तथा अंततः चाहे एक बार में मतदान हो या कई बार में।

2) जिले की संरचना में क्षेत्र, संख्या तथा अनुक्रम में चुनावी जिले शामिल हैं। यहाँ चुनावी जिले वे जिले हैं जहाँ पर चुनाव आयोजित होने हैं। जिला संरचना में एक सीट भी हो सकती है और कई सीटें भी हो सकती हैं, अर्थात, एक पूरे देश को एक राष्ट्रीय चुनावी जिला भी माना जा सकता है या इसे कई छोटे चुनावी क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है। पहले वाले मामले में, एक निश्चित प्रकार का अनुक्रम मौजूद हो सकता है जैसे कि ऊपरी श्रेणी और निचली श्रेणी। किसी भी चुनावी जिले में एक या एक से अधिक सीटें हो सकती हैं।

3.) चुनावी सूत्र उस प्रक्रिया को संदर्भित करते हैं जिसके माध्यम से मत सीटों में परिवर्तित हो जाते हैं। सबसे लोकप्रिय सूत्र हैं बहुलता, बहुमत तथा आनुपातिक प्रतिनिधित्व (पीआर) प्रणाली। जिले की संरचना के अनुसार ये सूत्र बदल जाते हैं।

7.2 चुनावी प्रणालियों का वर्गीकरण

साधारणतः, चुनावी प्रणाली को विधायिका में मतों को सीटों में बदलने के तय नियमों के आधार पर, तीन प्रमुख श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है : पहली बहुसंख्यक पद्धति; दूसरी आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति तथा तीसरी मिश्रित पद्धति। बहुसंख्यक पद्धति एक ऐसी पद्धति को संदर्भित करती है जहाँ बड़ी पार्टियों को अधिक सीटों पर प्रतिनिधित्व करने का मौका मिलता है, जबकि आनुपातिक प्रतिनिधित्व (पीआर) पद्धति ऐसी प्रणाली को दर्शाती है जहाँ चुनाव में प्राप्त मतों के अनुपात में सीटों का निर्धारण किया जाता है। मिश्रित पद्धति बहुसंख्यक पद्धति और पीआर पद्धति का मिश्रण है।

बहुसंख्यक पद्धति में इस बात की अधिक संभावना है कि, 30 प्रतिशत मत प्राप्त करने वाली पार्टी सत्तारूढ़ पार्टी के रूप में उभर कर आए, जोकि दो पार्टियों के संयोजन से बने या एक अकेली पार्टी से बने; जैसा कि यू.के. के 2010 के चुनावों में हुआ, जब सिर्फ 36 प्रतिशत मत प्राप्त करने के बावजूद कंज़र्वेटिव पार्टी 47 प्रतिशत सीटें प्राप्त करके सबसे बड़ी पार्टी के रूप में सामने आई, जबकि लिब्रल डेमोक्रेटिक पार्टी ने 29 प्रतिशत मतों के साथ 9 प्रतिशत सीटें प्राप्त की। कंज़र्वेटिव पार्टी लंबे समय तक सत्ता में रही, भले ही उन्होंने कभी कुल चुनावी मतों का 40 से 45 प्रतिशत से अधिक अर्जित नहीं किया है। बहुसंख्यक पद्धति में चूंकि प्राप्त मतों के अनुपात में सीटों का आवंटन नहीं किया जाता इस कारण यह पद्धति बहुत असमानताएँ उत्पन्न कर सकती है। साथ ही, पाँच में से कम से कम दो मत (अर्थात 40 प्रतिशत मत) प्राप्त करने वाली पार्टी के लिए राजनीतिक सत्ता

हासिल करने की संभावनाएँ बढ़ जाती है, जोकि सरकार और राजनीतिक व्यवस्था की प्रभावशीलता को प्रभावित कर सकता है।

दूसरी ओर, पीआर पद्धति में, पार्टियों को चुनावों में उनके द्वारा प्राप्त मतों के प्रतिशत के अनुसार सीटों पर प्रतिनिधित्व प्राप्त होता है। उदाहरणार्थ, एक पार्टी को 40 प्रतिशत मत मिलते हैं, उसे विधायिका की कुल सीटों की 40 प्रतिशत सीटों पर प्रतिनिधित्व करने का अवसर प्राप्त होता है, जिससे एकल–पक्षीय शासन की सभावनाएँ कम हो जाती हैं। पीआर पद्धति का परिणाम साधारणतः बहुसंख्यक प्रणालियाँ या गठबंधन सरकारें होती हैं, जो प्रतिनिधित्व की बेहतर पद्धति और प्रभावी राजनीतिक व्यवस्था सुनिश्चित करती है। इस प्रकार से बनी सरकारें, जहाँ अधिकतर उन लोगों द्वारा बनाई जाती, जिन्हें कुल मतों का 50 प्रतिशत से भी कम प्राप्त होता है, लोकप्रिय सरकारें होती हैं तथा बहुसंख्यक पद्धति की तुलना में ये सरकारें लोकप्रिय जनादेश का प्रबंधन बेहतर करती है।

मिश्रित पद्धतियों का उद्देश्य पीआर और एकल–सदस्य बहुलता प्रणालियों के लाभों के विभिन्न तरीकों को संयोजित करना है। बहुसंख्यक पद्धति, आनुपातिक प्रतिनिधि पद्धति एवं मिश्रित पद्धतियों में कई व्यवस्थाएँ ऐसे होती हैं जो देशों द्वारा उनकी राजनीतिक संस्कृति के अनुरूप तैयार की जाती हैं। उनमें से कुछ पर निम्नलिखित भाग में चर्चा की है।

7.3 बहुसंख्यक प्रणालियाँ

7.3.1 फर्स्ट–पास्ट–द–पोस्ट प्रणाली

एकल–सदस्य बहुलता (एसएमपी) प्रणाली में अधिकतम मत प्राप्त करने वाला व्यक्ति/पार्टी विजेता होता हैं। यह प्रणाली यूके, यूएसए, कनाडा, भारत और कुछ अन्य देशों में लोकप्रिय हैं, जिनकी राजनीतिक व्यवस्था ब्रिटिश औपनिवेशिक अतीत से निकली हैं। इस प्रणाली में, पूरे क्षेत्र को एकल सदस्यीय निर्वाचन क्षेत्रों में विभाजित किया जाता हैं, जो आमतौर पर समान आकार के होते हैं। प्रत्येक निर्वाचन क्षेत्र के लिए एक उम्मीदवार के लिए चुनावी वोट डाले जाते हैं, अर्थात प्रत्येक मतदाता को अपने निर्वाचन क्षेत्र के लिए शासन करने हेतु एक ही उम्मीदवार को वोट देना होता हैं। इस प्रणाली को जिसे 'फर्स्ट पास्ट द पोस्ट प्रणाली' भी कहा जाता हैं, पक्ष में कम वोट मिलने के बावजूद चुनाव जीतने की अधिक संभावना हैं। उदाहरणार्थ, अगर चुनाव लड़ने वाले पांच उम्मीदवारों को कुल 100 वोटों में से 32, 25, 14, 18, 11 वोट मिलते हैं, तो विजेता वह होता हैं जिसने सबसे ज्यादा वोट हासिल किए है अर्थात 32 वोट पाने वाला विजेता हो जाता हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि यद्यपि अधिकांश मत (100–32 = 68) इस उम्मीदवार के पक्ष में नहीं थे, फिर भी इस उम्मीदवार को विजेता घोषित किया जाता हैं क्योंकि किसी भी उम्मीदवार के पक्ष में डाले गए मतों की अधिकतम संख्या उसी की हैं। यह 'फर्स्ट पास्ट द पोस्ट प्रणाली' की एक बड़ी कमी हैं क्योंकि इसके परिणामस्वरूप कई वोटों की बर्बादी होती हैं। इसका अर्थ यह भी है कि इस प्रणाली में छोटे राजनीतिक दलों को निम्न व्यापकता और ध्यान कम मिलने की संभावना अधिक होती हैं। कुछ विद्वानों का मानना है कि यह स्वस्थ लोकतंत्र के सार को भी कमजोर करता हैं क्योंकि यह राजनीतिक व्यवस्था में छोटे समूहों एवं राजनीतिक दलों के प्रभाव को कम करता हैं। चूंकि, निर्वाचित उम्मीदवार को आमतौर पर केवल अल्प मतों का ही समर्थन प्राप्त होता है, ऐसी सरकारों की वैधता पर भी सवाल उठाया जा सकता हैं। इस प्रणाली से जुड़ा एक अन्य जोखिम यह है कि इसका परिणाम एक

गैर–जिम्मेदार सरकार में हो सकता हैं क्योंकि विजेता का निर्णय साधारण बहुमत के आधार पर किया जाता है जो कि बहुसंख्यक आबादी की पंसद नहीं हो सकता हैं। इन सीमाओं के बावजूद, इस प्रणाली से जुड़े कई फायदें हैं। ऐसी प्रणालियों में निर्मित सरकार निर्वाचक मंडल से स्पष्ट जनादेश का दावा करती हैं, भले ही वह साधारण बहुमत पर आधारित हों। यह किसी भी तरह के कट्टरपंथी समूह या अतिवाद को राजनीतिक व्यवस्था में ताकत हासिल करने से रोकने में मद्द करता हैं। इसके अलावा, कई एकल–सदस्यीय निर्वाचन क्षेत्रों का प्रावधान सुनिश्चित करता है कि देश के हर हिस्से को राष्ट्रीय विधायिका में पर्याप्त प्रतिनिधित्व मिलें। यह मतदाताओं को उम्मीदवारों के पर्याप्त विकल्प प्रदान करता हैं और प्रतिनिधियों को चुनने के विभिन्न मानदंडों को सामान्तर रूप से मौजूद रहने की अनुमति देता हैं जो बदले में लोकतांत्रिक तत्व को मजबूत करता हैं।

7.3.2 द्वितीय–मत प्रणाली

इस पद्धति ने फर्स्ट–पास्ट–द–पोस्ट प्रणाली की बड़ी कमियों को काफी हद तक दूर करने में सफलता प्राप्त की हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए जीतने वाले उम्मीदवार का निर्णय न केवल साधारण बहुमत के आधार पर हों बल्कि पूर्ण बहुमत के आधार पर भी हों, इसके लिए द्वितीय–मत प्रणाली का उपयोग किया जाता हैं। यह फ्रांस, चिली, ऑस्ट्रिया एवं रूस में एक स्वीकृत चुनावी प्रणाली रही हैं। जैसा कि एसएमपी प्रणाली में अनुसरण किया जाता हैं कि पूरे देश को कई एकल–सदस्यीय निर्वाचन क्षेत्रो में विभाजित कर दिया जाता है तथा लोगों का वोट चुनाव लड़ने वाले कई उम्मीदवारों में से एकल–पंसद पर आधारित होता है। हालांकि दो चरणों में मतदान होता हैं। पहले दौर के मतदान के बाद, दूसरे दौर का मतदान प्रमुख दो उम्मीदवारो के बीच होता है, जो पहले दौर में विजेता बनकर उभरे हैं। यह लोगों को पहले दौर में किसी भी उम्मीदवार को चुनने की स्वतंत्रता देता है, लेकिन फिर चुनाव को शीर्ष दो दोवेदारों तक सीमित कर देता है ताकि पूर्ण बहुमत वाला उम्मीदवार विजेता के रूप में उभर सकें। इस प्रारूप के कारण, इस प्रणाली को 'मिश्रित बहुमत–बहुलता' प्रणाली के रूप में भी वर्णित किया गया हैं। इस प्रणाली का संयुक्त राज्य अमेरिका में भी पालन किया जाता हैं जब दो मुख्य राजनीतिक दल अपने नेतृत्व और राष्ट्रपति पद के उम्मीदवारों पर निर्णय लेने के लिए आंतरिक चुनाव करते हैं। मतदान का दौर तब तक जारी रहता है जब तक कि उनका कोई उम्मीदवार पूर्ण बहुमत तक नहीं पहुंच जाता है।

यद्यपि यह प्रणाली एसएमपी प्रणाली की बड़ी कमियों को दूर करते हुए प्रतीत हो सकती है, फिर भी यह छोटे दलों और व्यक्तिगत उम्मीदवारों को पर्याप्त अवसर प्रदान करने में विफल रहती है। इस प्रणाली में शीर्ष दो पदों को सुरक्षित करने के लिए बड़े दलों के उम्मीदवारों की उच्च प्रवृत्ति होती है और तीसरे पक्ष के महत्वपूर्ण पदों को हटा दिया जाता है जो शीर्ष दो दावेदारों से बहुत पीछे नहीं होते हैं। यह प्रणाली उम्मीदवारों को पार्टी सिद्धांतो पर लोकप्रियता का विकल्प चुनने के लिए प्रोत्साहित कर सकती हैं जिसके परिणामस्वरूप अस्थिर और भ्रष्ट दावेदार शीर्ष दो पदों पर पहुंच सकते हैं। अंत्तोगत्वा, किसी भी देश में दो बार चुनाव कराने से देश के खजाने पर अतिरिक्त भार पड़ेगा और साथ ही मतदाताओं के धैर्य पर भी असर पड़ेगा।

इन कमियों के बावजूद, द्वितीय–मत प्रणाली यह सुनिश्चित करती है कि निर्वाचित उम्मीदवार अधिकांश आबादी की सहमति प्राप्त करता है और अधिक व्यापक रूप से

स्वीकार किया जाता है। यह मतदाताओं को पहले दौर में पर्याप्त मात्रा में विकल्प और दूसरे दौर में वरीयता का विकल्प देता हैं जिससे इस तरह की कठिन मतदान की प्रक्रिया से गुजरने के बाद, चुनाव के परिणाम मतदाताओं को अधिकतम संतुष्टि प्रदान करते हैं। इसके अलावा, इस प्रक्रिया से चुने गए उम्मीदवार की वैधता निर्विवाद बनी रहती हैं, जिसके परिणामस्वरूप एसएमपी प्रणाली के विपरीत इसमें एक मजबूत और स्थिर शासन व्यवस्था की नींव पड़ती है।

7.3.3 वैकल्पिक–मत

यह एक और तरीका है जिसका उपयोग जीतने वाले उम्मीदवार के पूर्ण बहुमत की कमी के संबंध में एसएमपी प्रणाली की आलोचना को दूर करने के लिए किया जाता हैं। हालांकि, इसका आमतौर पर विभिन्न देशों में आंतरिक चुनाव में उपयोग किया जाता हैं और न कि किसी भी देश के राष्ट्रीय नेतृत्व को तय करने के लिए अनिवार्य तरीके के रूप में। उदाहरणार्थ, ऑस्ट्रेलिया में प्रतिनिधि सभा में चुनाव वैकल्पिक वोट (एवी) पद्धति का उपयोग करके तय किया जाता है, जबकि लंदन, यूनाइटेड किंगडम में मेयर का चुनाव पूरक वोट (एसवी) पद्धति द्वारा तय किया जाता हैं, जिसे एवी विधि के एक प्रकार के रूप में वर्णित किया जा सकता हैं।

एसवी और एवी विधियां समान सिद्धांतों पर आधारित है और विवरण में भिन्न हैं। दोनों प्रणालियों में, एकल–सदस्य निर्वाचन क्षेत्र होता हैं, जिसमें मतदाताओं को अपनी पसंद के अनुसार कई वोट डालने का मौका मिलता हैं। मतदाता अपने उम्मीदवारों को अपनी पसंद और वरीयता के अनुसार रैंक (दर्जा) देते हैं। पहली वरीयता को मुख्य वोट माना जाता हैं, जबकि अन्य रैंकों को वैकल्पिक या पूरक वोट माना जाता हैं। एवी प्रणाली में, यह रैंकिंग चुनाव लड़ने वाले प्रत्येक उम्मीदवार को दी जाती है, लेकिन एसवी प्रणाली में मतदाताओं के लिए केवल एक पूरक वोट उपलब्ध होता है। इसका तात्पर्य यह है कि अगर 7 उम्मीदवार चुनाव लड़ रहे हैं, तो एवी प्रणाली के अनुसार मतदाता उम्मीदवारों को 1, 2, 3, 4, 5, 6 और 7 के रूप में रैंक करेंगे, लेकिन एसवी प्रणाली में उम्मीदवार अपने पसंदीदा उम्मीदवार का चयन करेगा और उसे प्रथम रैंक देगा एवं दूसरे पसंदीदा उम्मीदवार को द्वितीय रैंक दे सकता हैं। इस प्रकार, कई वैकल्पिक वोट हैं और केवल एक पूरक वोट हैं। प्रथम वरीयता के अनुसार मतों की गणना की जाती है और कम से कम मत प्राप्त करने वाले उम्मीदवारों को हटा दिया जाता हैं तथा उनके मतों को द्वितीय वरीयता के क्रम में अन्य के बीच वितरित किया जाता हैं। यह प्रक्रिया तब तक दोहराई जाती हैं जब तक कि किसी एक उम्मीदवार को पूर्ण बहुमत नहीं मिल जाता हैं। एवी और एसवी प्रणाली में गिनती करने में थोड़ा अंतर है। जबकि एवी प्रणाली में वोटों को अलग किया जाना और उनका पुनर्वितरण कई बार किया जाता हैं, लेकिन एसवी प्रणाली में मतगणना के एक दौर में शीर्ष दो उम्मीदवारों का फैसला किया जाता हैं और बाद के दौर में विजेता का फैसला होता हैं। एवी/एसवी प्रणाली विस्तृत एवं जटिल प्रक्रिया है, लेकिन इसका परिणाम एकल–पक्षीय अथवा दो–पक्षीय प्रणाली में होता हैं, जहां बड़ी पार्टियां छोटी पार्टियों और व्यक्तिगत उम्मीदवारों पर वर्चस्व स्थापित करती है। यह प्रणाली एक अन्य बड़ी आलोचना का सामना करती है कि वरीयता की मतगणना का परिणाम एसएमपी प्रणाली के परिणाम के समान हो सकता हैं, जिसमें विजेता के पास प्रथम वरीयता के वोट कम हो सकते हैं, फिर भी वे पूरी आबादी की ओर से शासन करने के लिए चुने जाते हैं। तथापि, यह

प्रणाली सुनिश्चित करती है कि कम वोट बर्बाद हों, और एक उम्मीदवार की लोकप्रियता एवं स्वीकार्यता मतदाताओं द्वारा डाले गए अधिमान्य मतों के आधार पर तय की जाती हैं। इसे 'सीमित मतदान योजना' या 'अनुमोदित मतदान' के रूप में भी जाना जाता हैं। इस प्रणाली को अतीत में कई निजी संघों द्वारा और 1990 में विभिन्न पूर्वी यूरोपीय देशों (बेलारूस, यूक्रेन) में संसदीय चुनावों में अपनाया गया हैं। इस तरह के दृष्टिकोण को अपनाने के लिए यह सुनिश्चित करना है कि जीतने वाले उम्मीदवार को पूर्ण बहुमत या न्यूनतम 50 प्रतिशत वोट मिलें।

7.3.4 कान्डोर्सेट विधि

इस विधि का नाम इसके संस्थापक फ्रांस के एक गणितज्ञ मार्क्विस डी कोंडोरसेट के नाम से उत्पन्न हुआ, यह विधि ऊपर वर्णित विधियों की तुलना में थोड़ी अधिक जटिल हैं। कुछ हद तक यह एवी प्रणाली के एक ही सिद्धांत पर खड़ा हैं क्योंकि मतदाताओं को अपने उम्मीदवारों का अपनी पसंद के क्रम में रखना होता है, लेकिन तुलनात्मक जोड़ियों में। उदाहरण के लिए, यदि 3 उम्मीदवार एक्स, वाई, जेड चुनाव लड़ रहे हैं तो मतदाताओं को एक्स वाई, वाई जेड और एक्स जेड में जोड़ी के अनुसार वोट करना चाहिए। मतदाता यह निर्णय लेते है कि वे किसी विशेष जोड़ी में किस उम्मीदवार को पसंद करते हैं। सबसे अधिक वोट पाने वाले को विजेता घोषित किया जाता हैं। यह विधि प्रतिनिधित्व तय करने की दृष्टि से अधिक सटीक एवं निष्पक्ष प्रतीत हो सकती हैं, लेकिन इसकी जटिल प्रकृति के कारण इसे व्यापक रूप से प्रयोग में नहीं लाया गया हैं। इस तथ्य का अवलोकन करते हुए कि यह चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों से निर्मित जोड़ो के आधार पर खड़ा है, यह स्पष्ट है कि जिस देश में बड़ी संख्या में उम्मीदवार चुनाव लड़ते हैं, वहां मतदाताओं के लिए सभी जोड़ो को निर्मित करना और उसके अनुसार न्याय करना संभव नहीं होगा।

बोध प्रश्न 1

नोटः– i) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

i) अपने उत्तरों की जांच इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से करें।

1) 'फर्स्ट–पास्ट–द–पोस्ट' प्रणाली को परिभाषित करें ?

.....

.....

.....

2) एसएमपी प्रणाली की प्रमुख कमियों की सूची बनाएं।

.....

.....

.....

.....

3) एवी प्रणाली कैसे एसवी प्रणाली से भिन्न हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

7.4 आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली

'आनुपातिक प्रतिनिधित्व' शब्द का प्रयोग सामान्यतः कई तरीकों और तंत्रों के लिए एक छत्र शब्द के रूप में किया जाता हैं, जिसका उद्देश्य चुनाव परिणामों में आनुपातिकता स्थापित करना हैं। सभी विधियों के लिए अंतनिर्हित सिद्धांत यह है कि जीत के लिए प्राप्त किए गए मतों के हिस्से के साथ जीती गई सीटों के हिस्से को मिलान करने का प्रयास करते हैं। विधायी सीटों को चुनाव में पार्टी/उम्मीदवारों द्वारा प्राप्त मतों के सीधे अनुपात में साझा किया जाता हैं। कुछ प्रसिद्ध एवं प्रचलित उदाहरणों में 'मिश्रित–सदस्य आनुपातिक (एमएमपी) या अतिरिक्त सदस्य प्रणाली (एएमएस) 'एकल–हस्तांतरणीय–मत (एसटीवी) प्रणाली', 'पार्टी–सूची प्रणाली', 'संचयी वोट प्रणाली' और 'स्लेट प्रणाली' शामिल हैं।'

7.4.1 एकल–हस्तांतरण–मत (एसटीवी) प्रणाली

इस प्रणाली को सर्वप्रथम थॉमस हरे द्वारा प्रस्तावित किया गया था, इसलिए इसे 'हेर प्रणाली' के रूप में जाना जाता हैं। इसका आयरलैंड गणराज्य और यूके (उत्तरी आयरलैंड विधानसभा) में व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता हैं क्योंकि ये राज्य बहु–सदस्यीय निर्वाचन क्षेत्रों से निर्मित होते हैं और प्रत्येक निर्वाचन क्षेत्र से चुने गए प्रतिनिधियों की संख्या न्यूनतम तीन से अधिकतम आठ तक भिन्न होती है। हालांकि, इसका तात्पर्य यह नहीं है कि मतदाताओं को कई वोट डालने को मिलते है। मतदाता केवल एक वोट के हकदार हैं, लेकिन यह एक अधिमान्य (प्राथमिकता/वरीयता) मतदान प्रणाली है जैसाकि एवी प्रणाली में प्रचलित हैं। इस प्रकार, मतदाता का एक वोट उनकी दूसरी और तीसरी प्राथतिकताओं के अनुसार स्थानांतरित हो जाता हैं एवं यह तब तक होता है जब तक कि कोई उम्मीदवार निर्दिष्ट 'कोटा' हासिल करने में सक्षम नहीं हो जाता हैं, जिसे फिर से प्राप्त कुल वोटों और सीटों की कुल संख्या के संदर्भ में परिभाषित किया जाता हैं।

(जिले में वैध मतों की कुल संख्या / 1+ कुल सीट) + 1

इन बहु–सदस्यीय निर्वाचन क्षेत्रों में, एक उम्मीदवार के लिए जीत का मानदंड निर्दिष्ट कोटा प्राप्त करना हैं, जिसकी गणना नीचे गए ड्रूप सूत्र के अनुसार की जाती हैंः–

उदाहरणार्थ, यदि वोटों की कुल संख्या 100 है और आंवटित प्रतिनिधियों की कुल संख्या 4 है, तो सभी 4 उम्मीदवारों को चुनाव जीतने के लिए 1+(100/1+4) = 21 वोट हासिल करने होंगे। एक प्रकरण में यदि किसी भी उम्मीदवार को आवश्यक ड्रूप कोटा नहीं मिलता

है तो कम से कम वोट पाने वाले उम्मीदवार को हटा दिया जाता है और उसके वोट उनकी दूसरी वरीयता के अनुसार स्थानांतरित हो जाते हैं। यह प्रक्रिया तब तक दोहराई जाती है जब तक कि सभी आवश्यक चार उम्मीदवारों में से प्रत्येक को 21 वोट नहीं मिल जाते हैं। एक अन्य प्रकरण में, यदि उम्मीदवार ड्रूप कोटा को पार कर जाता है, तो उस उम्मीदवार द्वारा प्राप्त सभी अतिरिक्त वोट अगली वरीयता के अनुसार स्थानांरित हो जाते हैं।

मतदाता एक वोट डालते हैं, लेकिन यह उल्लिखित प्राथमिकताओं के अनुसार कई बार स्थानांतरित हो जाता हैं, इसलिए, इस प्रणाली को 'एकल–हस्तांतरण वोट (एसटीवी) प्रणाली' के रूप में जाना जाता हैं। इस प्रणाली का उपयोग भारत में राज्यसभा चुनावो में किया जाता हैं, जहां प्रत्येक राज्य विधानसभा एक बहुसदस्यीय निर्वाचन क्षेत्र के रूप में कार्य करती हैं, और विधायकों को एक–एक हस्तांतरणीय वोट मिलता हैं। आस्ट्रेलियाई सीनेट, माल्टा एवं आयरलैंड की संसद ने भी इस प्रणाली को अपनाया हैं।

यह प्रणाली वोटों के व्यर्थ हो जाने को कम करने मे कामयाब रही हैं तथा एसएमपी प्रणाली के विपरीत यह प्रणाली आनुपातिक प्रतिनिधित्व की उच्च संभावनाएं प्रदान करती हैं। इसमें सभी उम्मीदवारों को समान मानदंडों पर आंका और चुना जाता हैं तथा निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने में एक–दूसरे के बराबर रहते हैं, जो फलस्वरूप बेहतर एवं अधिक संतुलित शासन प्रणाली सुनिश्चित करता हैं। यह मतदाताओं को अपने उम्मीदवारों को दर्जा (रैंक) देने और प्रतिनिधियों के विभिन्न संयोजन को प्राप्त करने के लिए पर्याप्त विकल्प प्रदान करता हैं, तथा राजनीतिक व्यवस्था में केवल एक पार्टी के प्रभुत्व की संभावना को कम करता हैं। यद्यपि यह प्रणाली बहुसंख्यकवादी तरीकों की कई सीमाओं को पार करती हैं, लेकिन इसकी अपनी कमियां हैं। बहुसदस्यीय निर्वाचन क्षेत्रों के परिणामस्वरूप प्रतिनिधियों का अचानक संयोजन हो सकता हैं जो एक अक्षम शासन प्रणाली की ओर ले जाता है जो सहज एवं त्वरित निर्णय लेने की क्षमता को बाधित कर सकता हैं। इसके अलावा, सभी उम्मीदवार समान मूल्य प्रतिष्ठा और स्थिति रखते हैं, भले ही उनमें से कुछ दूसरों की तुलना में अधिक व्यापकता से स्वीकृत और लोकप्रिय हो सकते हैं। इसलिए, जनता की पसंद/लोकप्रियता/स्वीकृति से भी कुछ हद तक समझौता हो जाता हैं क्योंकि सभी विजेता समान महत्व रखते हैं।

7.4.2 पार्टी–सूची प्रणाली

जैसा कि नाम से पता चलता हैं कि यह प्रणाली उम्मीदवारों के बजाय पार्टी के लिए गए मतदान पर आधारित हैं। पार्टी–सूची प्रणाली का पालन एकल–सदस्यीय निर्वाचन क्षेत्रों के साथ–साथ बहु–सदस्यीय निर्वाचन क्षेत्रों में भी किया जाता हैं। कुछ उदाहरणों में यूरोपीय संघ (बेल्जियम, लक्ज़मबर्ग) के राज्य शामिल हैं, इस पद्धति से यूरोपीय संसद भी चुनी जाती हैं। इनके अलावा, उन देशों में भी इसका पालन किया जाता हैं जहां पूरे देश को एक निर्वाचन क्षेत्र माना जाता हैं जैसे इज़राइल और स्विटजरलैंड। इसमें वोट पार्टियों के पक्ष में डाले जाते है न कि उम्मीदवारों के लिए। हालांकि, सूची प्रणाली ऐसी है कि मतदाता चुनाव लड़ने वाले सभी उम्मीदवारों से अच्छी तरह वाकिफ होते हैं क्योंकि पार्टियां अपने उम्मीदवारों को वरीयता के क्रम में सूचीबद्ध करती हैं, जिसमें पहला दर्जा सर्वोच्च स्थान पर दिया जाता है। इसलिए देश की प्रत्येक पार्टी एक सूची तैयार करती है जो सत्ता में चुने जाने पर उम्मीदवारों की स्थिति की घोषणा करती हैं। उम्मीदवारों की

सूची जानने के बाद मतदाता अपनी पसंदीदा पार्टी के पक्ष में वोट डालते हैं। पार्टियां हासिल किए गए वोटों के सीधे अनुपात में सीटों का बंटवारा करती हैं। उदाहरणार्थ यदि कोई पार्टी 40 प्रतिशत वोट हासिल करती हैं, तो उसे 40 प्रतिशत सीटों का प्रतिनिधित्व मिलता है, जो पार्टी द्वारा पहले से तैयार उम्मीदवारों की सूची में से भरी जाती हैं। स्विटज़रलैंड में इस प्रणाली को थोड़ा संशोधित किया गया है जहां मतदाताओं को एक खाली वोट मिलता है, तथा जिसका उपयोग वे या तो पार्टी–सूची के लिए वोट करके कर सकते हैं अथवा वे अपनी खुद की हाइब्रिड (वर्ण–संकर) सूची निर्मित कर सकते हैं जिसमें विभिन्न पार्टी–सूचियों के उम्मीदवार शामिल होते हैं।

पार्टी–सूची प्रणाली को आगे दो रूपों में वर्गीकृत किया जा सकता हैंः–खुली–सूची प्रणाली तथा बंद–सूची प्रणाली। पहली एक ऐसी व्यवस्था हैं जहां मतदाता पार्टी और पार्टी के भीतर उम्मीदवार दोनों के लिए वोट डालते हैं। इसलिए, यह तय करने में उनका अपना अधिकार है कि उक्त पद के लिए पार्टी–सूची में किसे चुना जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, फ़िनलैंड में मतदाता दो वोट डालते है– एक पार्टी के लिए और दूसरा उस पार्टी के उम्मीदवार के लिए।

दूसरी ओर, बंद–सूची प्रणाली, उम्मीदवार के संदर्भ में मतदाता को कोई विकल्प नहीं देती हैं। पार्टी द्वारा सूची तैयार की जाती हैं और मतदाताओं के सामने प्रस्तुत की जाती हैं इज़रायल में जिसने इस प्रणाली को अपनाया हैं, मतदाता पार्टी द्वारा नामित उम्मीदवारों की सूची को स्वीकार करते हैं और पार्टी के पक्ष में अपना वोट डालते हैं।

बेल्जियम बंद–सूची और खुली–सूची के बीच का रास्ता अपनाता हैं, जिसमें मतदाता को पार्टी या किसी व्यक्तिगत उम्मीदवार द्वारा प्रदान की गई सूची में से किसी एक को चुनने के लिए मिलता है तथा जहां निचले स्थान वाले उम्मीदवार को उच्च पद प्राप्त हो सकता हैं, वह निर्दिष्ट न्यूनतम संख्या में अधिमान्य मत प्राप्त करने में सफल होता हैं। पार्टी–सूची प्रणाली के पैरोकार इसे आनुपातिक प्रतिनिधित्व का सबसे शुद्ध रूप मानते हैं क्योंकि यह छोटे और बड़े दोनों दलों के लिए उचित अवसर का आश्वासन देता हैं। पार्टी–सूची प्रणाली ने महिलाओं और अल्पसंख्यको जैसे समाज के उपेक्षित/हाशिए के वर्गो को शामिल करने के मामले में भी अच्छा प्रदर्शन किया हैं। मतदाता को मतदान करने से पहले एक आकलन करने को मिलता है कि किस पार्टी की सूची अधिक समावेशी हैं और समाज के सभी वर्गो को समाहित करती है एवं किस पार्टी को चुनने पर उन्हें किस तरह की सरकार मिलेगी। इसका परिणाम एक अधिक समावेशी समाज में होता हैं जो बातचीत, मोल–तोल और आम सहमति की उच्च संभावनाओं पर टिका होता हैं। हालांकि, पार्टी सूची प्रणाली से अस्थिर, खंडित और कमजोर सरकार होने का जोखिम रहता है। चूंकि मतदाता पार्टी के लिए वोट करते हैं, उम्मीदवारों के साथ उनका संबंध उतना मजबूत नहीं हो सकता हैं जितना कि उन प्रणालियों में होता है जो सीधे अपने उम्मीदवार को वोट देने की अनुमित प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, एक अवसर बना रहता हैं जहां एक निश्चित उम्मीदवार की पार्टी में प्रभावशाली स्थिति हो सकती है, लेकिन जन अपील की कमी होती है, जिससे नेता के चुने जाने के बाद संभावित असंतोष हो सकता हैं। इसके अलावा, उम्मीदवार सूची में शामिल होने के लिए अनुचित व्यवहार में भी पड़ सकते हैं एवं सार्वजनिक सेवा सत्ता के लालच में फंस सकती हैं, जिससे शासन भ्रष्ट व्यवस्था की ओर जा सकती हैं।

7.5 मिश्रित चुनाव प्रणालियाँ

इस श्रेणी में ऐसी प्रणालियां शामिल हैं जो पहले दो प्रकारों में से प्रत्येक के तत्वों के बीच में कुछ हद तक एक पैटर्न बनाने के लिए जोड़ती हैं, जो कि बहुसंख्यक के कुछ तत्वों एवं कुछ आनुपातिकता के साथ हैं, लेकिन पूरी तरह से उनमें से किसी के अंतर्गत नहीं आती हैं।

7.5.1 मिश्रित–सदस्य आनुपातिक या अतिरिक्त सदस्य प्रणाली

एसएमपी प्रणाली और पार्टी–सूची प्रणाली के संयोजन से, हमें मिश्रित सदस्य आनुपातिक (एमएमपी) या अतिरिक्त सदस्य (एएम) प्रणाली मिलती है। इसका तात्पर्य यह है कि कुछ सीटें एसएमपी पद्धति से भरी जाती है जबकि शेष सीटें पार्टी–सूची प्रणाली का उपयोग करके भरी जाती हैं। इस व्यवस्था का एक अच्छा उदाहरण जर्मनी में हैं जहां 50 प्रतिशत सीटें विशेष रूप से एकल–सदस्य निर्वाचन क्षेत्रों में एसएमपी प्रणाली द्वारा भरी जाती हैं। यूरोप के कुछ अन्य राज्यों, जैसे इटली, स्कॉटलैंड और वेल्स ने एमएमपी प्रणाली को अपनाया हैं, जहां 50 प्रतिशत से अधिक सीटें एसएमपी प्रणाली के अनुसार आवंटित की जाती हैं और बाकी को पार्टी–सूची प्रणाली का उपयोग करके भरा जाता हैं।

इस प्रणाली में, मतदाता दो मतों के हकदार होते हैं– एक उम्मीदवार के लिए और दूसरा पार्टी के लिए। इस प्रणाली का आधार निर्वाचन क्षेत्र के प्रतिनिधि और मंत्री पदो ंके बीच अंतर बनाए रखना हैं। जबकि पूर्व को लोगों द्वारा सीधे एसएमपी प्रणाली के माध्यम से चुना जाता हैं, बाद वाले को अधिक आनुपातिक तरीके से चुना जाता हैं, साथ ही पार्टी को इसका उचित महत्व मिलता हैं। इसके अतिरिक्त, मतदाताओं को अपने निर्वाचन क्षेत्र के प्रतिनिधि को एक भिन्न पार्टी से और सरकार को एक अलग पार्टी से चुनने का विकल्प भी मिलता हैं, जिससे एक कुशल 'नियंत्रण और संतुलन' (चेक एंड बैलेंस) प्रणाली लागू होती हैं।

7.5.2 अर्ध–आनुपातिक विधि

यह बहुसंख्यकवादी पद्धति एवं आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के संयोजन की एक और विविधता हैं। न्यूजीलैंड और भारत में इस प्रणाली में एक निश्चित परिवर्तन का पालन किया जाता हैं जहां संबंधित देश की राजनीतिक व्यवस्था में नृजातीय अल्पसंख्यकों एवं पिछड़े वर्गो की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए कुछ व्यवस्था की जाती हैं। न्यूजीलैंड में माओरी जिले विशेष रूप से उन लोगों तक सीमित हैं जो माओरी समुदाय के वंशज हैं, जबकि भारत में कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जहां से केवल अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लोग ही चुनाव लड़ सकते हैं, लेकिन वहीं मानदंड मतदाताओं के लिए लागू नहीं होते हैं। सभी वर्ग और जातियों के मतदाता मतदान कर सकते हैं लेकिन चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों को अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति वर्ग से होना चाहिए। एक अर्थ में, यह आनुपातिक प्रतिनिधित्व के वास्तविक स्वरूप के बजाय एक विशेष वर्ग के लिए कुछ सीटों को आरक्षित करने की व्यवस्था हैं।

7.5.3 संचयी मत प्रणाली

अर्ध–आनुपातिक पद्धति की एक और विविधता संचयी मतदान प्रणाली में देखी जा सकती हैं जिसमें मतदाता बहु–सदस्यीय निर्वाचन क्षेत्रों में कई वोटों के हकदार होते हैं। किसी निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुने जाने वाले सदस्यों की संख्या प्रत्येक मतदाता द्वारा डाले गए मतों की संख्या के बराबर होती हैं। इस प्रकार यदि किसी एक निर्वाचन क्षेत्र से 5 सदस्य निर्वाचित होने हैं, तो प्रत्येक मतदाता को 5 मत डालने होते हैं। यहां मतदाता एक उम्मीदवार को सभी वोट डालने के लिए स्वतंत्र है, या चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों में प्रत्येक को एक वोट या अपने विवेक के अनुसार उम्मीदवारों के बीच वोट बांटने के लिए स्वतंत्र हैं। शीर्ष पांच उम्मीदवारों को विजेता माना जाता हैं। इसलिए, गणना के अनुसार यह एसएमपी प्रणाली का अनुसरण करता हैं, क्योंकि संचयी वोट अंतिम परिणामों में मायने रखते हैं।

7.5.4 स्लेट प्रणाली

यह प्रणाली विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका में राष्ट्रपति के निर्वाचक मंडल के चुनाव के दौरान उपयोग की जाती है। यह पार्टी–सूची प्रणाली से निकटता से संबंधित हैं, एकमात्र अंतर यह है कि पार्टी द्वारा तैयार की गई सूची को 'स्लेट' कहा जाता है। मतदाताओं को डेमोक्रेटिक और रिपब्लिकन पार्टी दोनो से 'स्लेट्स' मिलती है और वे अपने पसंदीदा स्लेट के लिए मतदान करते हैं अर्थात वे उम्मीदवारों की पूरी सूची के लिए मतदान करते हैं, विशेष रूप से किसी एक उम्मीदवार के लिए नहीं। जो स्लेट 51 प्रतिशत वोट हासिल करती हैं, वह राज्य में हुए चुनाव को पूर्ण रूप से जीत लेती हैं यानी कि जिस पार्टी से स्लेट संबंधित है उसे पूरे राज्य का प्रतिनिधित्व करने के लिए अधिकार मिलता हैं। यह पहलू कुछ हद तक 'फर्स्ट–पास्ट–द–पोस्ट' प्रणाली की तरह हैं, लेकिन प्रमुख अंतर चुनाव जीतने के लिए कुल वोटों का 51 प्रतिशत अर्जित करने का मानदंड बना हुआ हैं। साथ ही, 'फर्स्ट–पास्ट–द–पोस्ट' प्रणाली में, निर्वाचन क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व एक उम्मीदवार द्वारा किया जाता हैं, जबकि 'स्लेट सिस्टम' में निर्वाचन क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व एक से अधिक सदस्यों द्वारा किया जाता हैं तथा 51 प्रतिशत वोट प्राप्त करके जीतने वाली पार्टी प्रतिनिधि के रूप में सूचीबद्ध अपने सदस्यों को नियुक्त करती हैं। इसलिए, निर्वाचन क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व एक पार्टी के कई सदस्यों के द्वारा किया जाता हैं।

बोध प्रश्न –2

नोटः i) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों की जांच इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से करें।

1) पी.आर प्रणाली में प्रमुख कमियां क्या हैं ?

.....

.....

.....

.....

2) एकल–हस्तांतरणीय मत प्रणाली का वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) पार्टी–सूची प्रणाली क्या हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

7.6 चुनावी प्रक्रियाओं का तुलनात्मक मूल्यांकन

दुनिया भर में उभरते लोकतांत्रिक समाजों के मद्देनजर चुनावी प्रक्रियाओं के महत्व को नकारा नहीं जा सकता हैं। एक चुनावी प्रणाली न केवल किसी देश में चुनाव के लिए नियम निर्धारित करती हैं, बल्कि पार्टी प्रणाली को आकार देने एवं देश की राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसलिए, राजनीतिक दलों के लिए यह अनिवार्य हो जाता हैं कि वे अपने लाभ के अनुसार चुनावी प्रणाली को प्रभावित करें एवं उसमें परिवर्तन करें।

चुनावी प्रणालियां तथा प्रक्रियाएं समय और स्थान के अनुसार परिवर्तित होती रहती हैं एवं दलगत राजनीति ऐसे परिवर्तनों और विविधताओं के लिए उत्प्रेरक का कार्य करती हैं। बहुसंख्यक और पीआर प्रणाली दोनों का अलग–अलग समय में दुनिया भर के देशों द्वारा आजमाया गया और उसमें परिवर्तन किए गए एवं प्रतिस्थापित किया गया। कई देशों ने एक प्रकार की चुनावी प्रणाली से दूसरी तरह की चुनावी प्रणाली में परिवर्तन करके अथवा दो अलग–अलग चुनावी प्रणालियों का संयोजन करके चुनावी प्रणाली को बदलने की कोशिश की हैं। एक उत्कृष्ट उदाहरण फ्रांस का है, जिसने अपनी चुनावी प्रणाली को दूसरों की तुलना में अधिक बार परिवर्तित किया हैं। 1985 तक संसदीय चुनाव द्वितीय–मत प्रणाली के अनुसार आयोजित किए गए थे, इसे सोशलिस्ट पार्टी के प्रभाव में पार्टी–सूची प्रणाली द्वारा प्रतिस्थापित किया गया था, जिसने 1980 एवं 1990 के दशक में राष्ट्रीय संसद को नियंत्रित किया था। इस तरह के परिवर्तन का एक प्रमुख कारक राष्ट्रपति

मिटरैंड की तीव्र इच्छा थी कि नेशनल असेंबली में समाजवादी प्रतिनिधित्व को सुदृढ़ किया जाए। चुनाव प्रणाली में परिवर्तन का एक अन्य उदाहरण यूनाइटेड किंगडम के मामले में देखा जा सकता हैं, जिसने स्कॉटलैंड, वेल्स और उत्तरी आयरलैंड की चुनावी प्रणालियों में एकल सदस्यीय बहुलता (एसएमपी) से आनुपातिक तरीकों में परिवर्तन देखा हैं, जिसमें एसएमपी प्रणाली आम चुनावों में बरकरार हैं। इसे चुनावी सुधारों के विरोध में लेबर पार्टी की सक्रिय रूचि का परिणाम कहा जाता हैं, विशेष रूप से अवक्रमित निकायों के लिए। 1993 से न्यूजीलैंड ने भी अपनी चुनावी प्रणाली को एसएमपी से पीआर प्रणाली में परिवर्तित कर दिया हैं। इटली ने भी प्रयोग किए जिसमे उसने अपनी पूर्ववर्ती पार्टी–सूची प्रणाली को एमएमपी/एएम प्रणाली के साथ परिवर्तित कर दिया और 2003 में पार्टी–सूची प्रणाली में वापस आ गए (हेवुड 2013: 207)।

एक चुनावी प्रक्रिया का मूल्यांकन निम्नलिखित दो पहलुओं के संदर्भ में किया जा सकता हैं: पहला, चुनावी प्रक्रिया किस हद तक निष्पक्ष एवं न्यायसंगत प्रतिनिधित्व देने में सक्षम हैं और दूसरा, सरकार की दक्षता पर इसका प्रभाव। बहुसंख्यकवादी तरीकों की बात करें तो निष्पक्ष और न्यायसंगत प्रतिनिधित्व देने का मानदंड अवास्तविक रहता हैं क्योंकि यह लोकप्रिय वरीयता से प्रेरित होता हैं जो अपने वास्तविक रूप में समाज का प्रतिनिधित्व कर सकता है या नहीं भी कर सकता हैं। बहुसंख्यकवादी तरीकों से जुड़ी सामान्य आलोचना यह है कि यह चुनावी मज़बूती के लिए सही नहीं हैं क्योंकि चुनाव जीतने के लिए 'साधारण बहुमत' करना ही एकमात्र मानदंड हैं। ऐसी व्यवस्था में अपेक्षाकृत छोटे दलों को दरकिनार करने की प्रवृत्ति होती हैं। यह भारत में 2014 के आम चुनावों में बहुत स्पष्ट रूप से उदाहरणस्वरूप दृष्टिगोचर होता हैं, जहां भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने चुनावों में जीत हासिल की और अपने पक्ष में केवल 31 प्रतिशत वोट प्राप्त करने के बावजूद एक बहुसंख्यक सरकार बनाई। इस संदर्भ में, पी. आर. प्रणाली जनता का निष्पक्ष एवं न्यायसंगत प्रतिनिधित्व देने में कहीं अधिक कुशल प्रतीत होती हैं। यहां, हमें यह ध्यान रखने की आवश्यकता है कि चुनावी प्रणाली का एक आवश्यक कार्य न केवल सरकार गठन की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाना है, बल्कि एक मजबूत और स्थिर शासन प्रणाली प्रदान करना भी हैं। इस कार्य में पीआर प्रणाली विफल होती प्रतीत होती हैं क्योंकि इसके परिणामस्वरूप आमतौर पर गठबंधन सरकारें बनती है जो कि एकदलीय सरकार की तरह स्थिर और मजबूत नहीं हो सकती हैं। यह देखा गया हैं कि पीआर प्रणाली में गठित गठबंधन सरकारों को चुनावों में स्पष्ट चुनावी ताकत का दावा करने के बावजूद चुनाव के पश्चात् समान आलोचना और चुनौतियों का सामना पड़ता हैं। पीआर प्रणाली में प्रभाव का दायरा सिकुडता हैं और गठबंधन सरकारों के गठन के कारण सार्वजनिक वादों पर कार्य करने और पूरा करने की क्षमता समान रूप से बाधित होती हैं।

पीआर प्रणाली के पैरोकार अधिकतम नागरिक समर्थन और आज्ञाकारिता के संदर्भ में सुशासन की पहचान करते हैं। वे पीआर प्रणाली को अधिकतम संभव कुशल शासन प्रणाली प्रदान करने वाले के रूप में उचित ठहराते हैं क्योंकि यह एकमात्र प्रणाली है जो सरकार बनाने के लिए एक मानदंड के रूप में 'पूर्ण बहुमत' लेती हैं। इसलिए भले ही गठबंधन सरकार बनी हों, लेकिन यह आश्वासन देती है कि इसके सभी सदस्यों और मंत्रियों को इसके शुद्धतम रूप में लोकप्रिय समर्थन प्राप्त हैं। आम सहमति, बहस और चर्चा एक अत्यधिक कुशल सरकार का सार हैं क्योंकि ये न केवल रक्षा करते हैं बल्कि

विविध जनमत और हितों के सह–अस्तित्व को सुनिश्चित करते हैं जिसमें अधिकांश नागरिक सरकार के साथ संतुष्ट होते हैं।

7.7 सारांश

चुनावी प्रक्रियाएं बहुत महत्वपूर्ण होती हैं, जब लोकतांत्रिक समाजों के गठन एवं रखरखाव की बात आती हैं। वे न केवल चुनाव परिणामों को आकार देती है, बल्कि किसी भी देश में दल प्रणाली की संरचना, राजनीतिक संस्कृति और सरकार के गठन को भी प्रभावित करती हैं। फलस्वरूप, चुनावी प्रक्रियाएं किसी देश की सामाजिक और राजनीतिक संरचना से भी प्रभावित होती हैं। अलग–अलग सेट–अप भिन्न–भिन्न चुनावी प्रणालियों की मांग करते है जो या तो एकांकी या संयोजन वाली होती हैं। चुनावी प्रणालियों के अलग–अलग प्रकार के अध्ययन को दो प्रमुख श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता हैः– बहुसंख्यक प्रणाली तथा आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली।

सबसे अधिक चुना जाने वाला बहुसंख्यकवादी तरीका 'एकल–सदस्य बहुलता' का है, जिसे 'फर्स्ट–पास्ट–द–पोस्ट प्रणाली' भी कहा जाता हैं। इसका पालन उन देशों में किया जाता हैं जहां एकल सदस्यीय निर्वाचन क्षेत्र होते है तथा अधिकतम मत प्राप्त करने वाले उम्मीदवार को विजेता घोषित किया जाता हैं। चुनाव जीतने के लिए आवश्यक न्यूनतम मतों की संख्या पर कोई प्रतिबंध नहीं है। वोटों का साधारण बहुमत ही एकमात्र मापदंड हैं। इस पद्धति की प्रायः मात्र साधारण बहुमत पर विचार करने से बड़ी संख्या में वोटो के 'बर्बाद' होने के आधार पर आलोचना की जाती हैं। कुछ अन्य तरीकों में द्वितीय मत प्रणाली, वैकल्पिक वोट (एवी) प्रणाली/सप्लीमेंट्री वोट (एसवी), तथा कोंडोरसेट विधि एक विकल्प प्रदान करती हैं। चुनावी प्रणालियों की दूसरी श्रेणी को आनुपातिक प्रतिनिधित्व (पीआर) प्रणाली के रूप में जाना जाता हैं, जिसमें एकल–हस्तांतरणीय मत (एसटीवी) प्रणाली, दल–सूची प्रणाली, मिश्रित–सदस्य आनुपातिक (एमएमपी) या अतिरिक्त सदस्य (एएम) प्रणाली, अर्ध–आनुपातिक पद्धति, संचयी मत प्रणाली और स्लेट प्रणाली शामिल हैं। ये तरीके अधिक प्रतिनिधिक हैं क्योंकि वे आनुपातिकता नियम का पालन करते हैं जिसका अर्थ है कि सीटों को प्राप्त मतों के अनुसार आंवटित किया जाता हैं। बहुसंख्यकवादी तरीकों का परिणाम आमतौर पर एक–दलीय सरकारों और दो–दलीय प्रणालियों में होता हैं जो कभी–कभी तीसरे पक्ष या छोटे समूहों और दलों के प्रयासों को छुपाते हैं। पीआर प्रणाली आमतौर पर एक बहुदलीय प्रणाली में काम करती हैं और गठबंधन सरकारों को जन्म देती हैं। दोनों प्रणालियों के अपने फायदें और नुकसान हैं। जबकि पूर्व की प्रणाली के तहत सरकारों में मध्यावधि परिवर्तन की कम संभावना के साथ मजबूत और स्थिर सरकारें जन्म लेती हैं, बाद वाली प्रणाली लोकतंत्र के सार से अधिक चिंतित हैं जिसे सर्वसम्मति, चर्चा और वार्ता के संदर्भ में आंका जाता है जो केवल गठबंधन सरकारों के मामले में हो सकता हैं। नुकसान के संदर्भ में, बहुसंख्यकवादी तरीकों से सरकारों को सार्वजनिक अस्वीकृति का सामना करने का जोखिम होता हैं क्योंकि यह 'साधारण बहुमत' पर आधारित होता है जो बड़े पैमान पर जनता के खिलाफ हो सकता हैं। दूसरी ओर, पीआर प्रणाली बहुत जटिल और समय लेने वाली हैं तथा वृहत और गरीब देशों के लिए संभव नहीं हो सकता हैं क्योंकि कई दौर का मतदान एक महंगाा मामला प्रतीत होता हैं।

7.8 संदर्भ

हेयवुड, एंड्रयु. (2013). *पॉलिटिक्स.* पॉलग्रेव मैकमिलन.

क्रुपाविसियस, इसोदा, वाइसनोरास .(2013). *इंट्रोडक्शन टु कम्पैरेटिव पॉलिटिक्सः डिडैकटिकल गाइडलाइनस.*, व्यताउतास मैग्नस युनिवर्सिटि : कउनास.

राय डी.डब्ल्यू. (1971) *द पॉलिटिकल कोन्सीक्यूएंसिज़ ऑफ इलैक्टोरल लॉज़ 2^{दक} (मक),* येल युनिवर्सिटि प्रेस : न्यू हैवन, सीटी.

सिआरौफ, एलन .(2013). *कम्पेयरिंग पॉलिटिकल रिजीम्स् : ए थेमैटिक इंट्रोडक्शन टु कम्पैरेटिव पॉलिटिक्स् (3^{तक} एडिशन),* कैनेडा : युनिवर्सिटि ऑफ टोरोंटो प्रेस.

क्लार्क, विलियम रॉबर्टस्; गोल्डर, मैट; गोल्डर, सोना नादेनिचेक .(2013). *प्रिंसिपलस् ऑफ कम्पैरेटिव पॉलिटिक्स्, 2^{दक} एडीशन.* यूएसए : सेज पब्लिकेशनस्.

7.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) 'फर्स्ट–पास्ट–द–पोस्ट प्रणाली' एक ऐसी व्यवस्था को संदर्भित करती है जहां चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों को निर्वाचित होने के लिए वोटों की न्यूनतम सीमा पार करने की आवश्यकता नहीं होती हैं, इसके बजाय उन्हें एक साधारण बहुमत की आवश्यकता होती है, अर्थात उसे अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी से अधिक वोट प्राप्त करने होते हैं। इस प्रणाली में सरकार उस पार्टी द्वारा बनाई जाती हैं जिसके उम्मीदवार लोकप्रिय वोट के अपने हिस्से की परवाह किए बिना अधिकतम निर्वाचन क्षेत्रों को जीतने में सफल रहते है।

2) एसएमपी प्रणाली की एक बड़ी कमी एक पार्टी को बहुमत देने की उनकी प्रवृत्ति हैं जिसे 'निर्मित बहुमत' के रूप में भी जाना जाता हैं। प्रतिनिधित्व को बड़ी पार्टियों तक सीमित करके, यह प्रणाली राजनीतिक व्यवस्था में छोटे दलों को हाशिए पर रख सकती है।

3) दोनो प्रणालियों में, एकल–सदस्य निर्वाचन क्षेत्र होते हैं, लेकिन मतदाताओं को अपनी पंसद के अनुसार कई वोट डालने होते हैं। एवी प्रणाली में, यह रैंकिग चुनाव लड़ने वाले प्रत्येक उम्मीदवार को दी जाती है, लेकिन एस. वी. प्रणाली में मतदाताओं के लिए केवल एक पूरक वोट उपलब्ध होता हैं।

बोध प्रश्न 2

1) पी. आर. प्रणाली में शामिल बहु–मतदान का प्रावधान देश के लिए अतिरिक्त खर्च पैदा करता है। इसके अलावा, इस प्रक्रिया में अधिक समय लग सकता हैं। यह आमतौर पर गठबंधन सरकारों में परिणत हो जाता हैं, जो बहुसंख्यकवादी तरीकों

से उत्पन्न एकल–पक्षीय सरकारों की तुलना में कमजोर और कम कुशल मानी जाती हैं।

2) एकल–हस्तांतरणीय वोट प्रणाली एक ऐसी व्यवस्था है जहां मतदाता व्यक्तिगत उम्मीदवारों को उनके विवेक के अनुसार रैंक देकर वरीयता के वोट देते है।

3) पार्टी–सूची प्रणाली एक ऐसी व्यवस्था को संदर्भित करती हैं जिसमें राजनीतिक दल चुनाव लड़ने वाली सीटों की संख्या के अनुसार उम्मीदवारों की एक सूची तैयार करते हैं। मतदाताओं को पार्टी चुनने के साथ–साथ पार्टी–सूची के भीतर उम्मीदवारों की रैंकिग/वरीयता पर निर्णय लेने का विकल्प प्रदान किया जाता हैं। वैकल्पिक रूप से, उम्मीदवारों की सूची पर पार्टी द्वारा निर्णय लिया जाता है और मतदाता पार्टी सूची के लिए मतदान करते हैं।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY